RNI-MPHIN/2005/14721
Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 Nov. 2020

अंक – 05 (मासिक) वर्ष – 16 नवम्बर, 2020 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

दीपावली विशेषांक

महामारी को मात देगा महापर्व

Visit us
@ www.srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

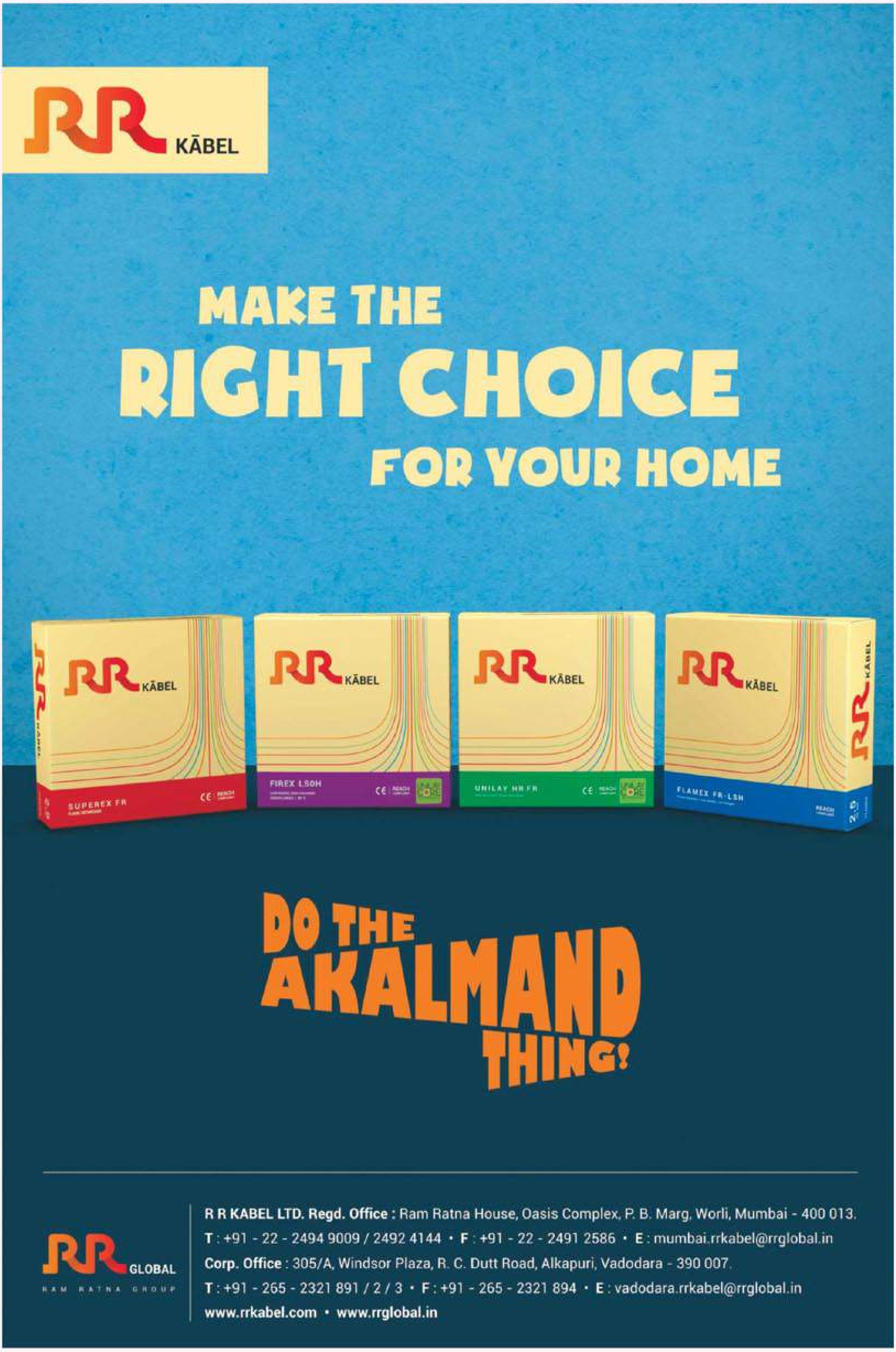
RR KĀBEL
MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME
RR KĀBEL
SUPEREX FR
RR KĀBEL
FIREX LSOH
RR KĀBEL
UNILAY HR FR
RR KĀBEL
FLAMEX FR-LSH
DO THE
AKALMAND
THING!
RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP
R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • F : +91 - 22 - 2491 2586 • E : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • F : +91 - 265 - 2321 894 • E : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-05 नवम्बर 2020 वर्ष-16

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
अरुण लड्ढा, कोलकाता

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

जिसके पास शील उसके पास लक्ष्मी

विचार क्रान्ति

लोगों को यह भ्रम है कि लक्ष्मी अर्थात धन केवल परिश्रम, पराक्रम या प्रारब्ध से प्राप्त होता है। सच तो यह है कि जो शीलवान होते हैं वे ही लक्ष्मीवान बन पाते हैं। यदि लक्ष्मी पाकर भी शील न रहे तो आई हुई लक्ष्मी भी लौट जाती है।

शास्त्र कहते हैं मन, वाणी और कर्म से जो किसी का अहित नहीं करता, सब पर दया करता है और यथाशक्ति दान देता है, वहीं शीलवान कहलाता है। लक्ष्मी ऐसे ही शील सम्पन्न मनुष्यों के यहाँ निवास करना पसंद करती है। महाभारत के शांतिपर्व में इसका मर्म बताती अद्भुत कथा है जो 124 वें अध्याय में दर्ज़ है। जिसके अनुसार प्राचीन समय में शील का ही आश्रय लेकर दैत्यराज प्रह्लाद ने देवराज इंद्र तक को अपने अधीन कर लिया था। तब परेशान इन्द्र देवगुरु बृहस्पति के पास पहुँचे और अपने कल्याण का उपाय पूछा। देवगुरु ने उन्हें इसे जानने के लिए दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पास भेजा और शुक्राचार्य ने प्रह्लाद के पास जाने की सलाह दी। इन्द्र ब्राह्मण का वेश बनाकर अपने कल्याण का मार्ग जानने प्रह्लाद की सेवा में उपस्थित हुए। प्रह्लाद ने कहा कि 'मैं क्रोध को जीतकर मन और इंद्रियों को काबू में रखता हूँ। इसी आचरण से मैंने अपना शील साधा है। जैसे मधुमक्खियाँ शहद के छत्ते को फूलों के रस से सींचती रहती हैं उसी प्रकार सन्मार्ग का उपदेश देने वाले ब्राह्मण अर्थात गुणी ज्ञानी लोग शास्त्र के अमृतमय वचनों से मुझे सींचा करते हैं। जो इसी प्रकार ज्ञानियों का सत्संग कर सद्कर्म करता है वह कोई भी हो, मेरी तरह त्रिलोकी का राजा बन सकता है।'

तब ब्राह्मण रूपी इन्द्र की विनम्रता से प्रसन्न प्रह्लाद ने उनसे कोई वरदान मांगने को कहा। इन्द्र इस समय तक जान चुके थे कि शील ही सबसे बड़ी सम्पत्ति और शक्ति है। तो चतुर देवराज ने माँगा, 'मुझे आपका शील ही प्राप्त करने की इच्छा है, यही मेरा वर है।' प्रह्लाद ने स्वयं वर माँगने को कहा था और अपने स्वभाव की सरलता में वे इन्द्र को पहचान न पाए थे। अतः कहीं ब्राह्मण नाराज़ न हो जाए, इसका विचार कर उन्हें अपना शील इन्द्र को देना पड़ा।

इधर इन्द्र शील लेकर लौटे और उधर कुछ ही समय बाद प्रह्लाद के शरीर से एक परम कांतिमय तेज मूर्तिमान होकर प्रकट हुआ। जिसने प्रह्लाद के शरीर को त्याग दिया था। प्रह्लाद ने उससे पूछा 'आप कौन हैं'? तो उसने उत्तर दिया मैं शील हूँ। तुमने मुझे त्याग दिया है, इसलिए मैं जा रहा हूँ। अब मैं उस ब्राह्मण के शरीर में निवास करूँगा जो अभी-अभी यहाँ से गया है।' इतना कहकर शील अदृश्य हो गया और इन्द्र में समा गया।

इसके बाद क्रमशः धर्म, सत्य, सदाचार और बल भी प्रकट हुए और एक-एक कर प्रह्लाद को त्याग इन्द्र के शरीर में प्रवेश कर गए। इसलिए कि जहाँ शील होता है वहाँ धर्म रहता है। जिसके पास धर्म रहता है वहीं सत्य रहता है। सत्य हो, तभी सदाचार रहता है और सदाचार हो तभी बल टिकता है। जब सदाचार का अनुगामी बल भी प्रह्लाद को त्यागकर चला गया तब अंत में एक प्रभामयी देवी प्रकट हुई जो लक्ष्मी थी। प्रह्लाद ने उनके जाने का कारण पूछा तो देवी बोली 'दैत्यराज! मैं बल की अनुगामिनी हूँ। मैं तुम्हारे यहाँ निवास करती थी लेकिन तुमने शील क्या त्यागा, सब तुम्हें त्यागकर चले गए। अतः मैं भी जा रही हूँ। क्योंकि जिसके पास शील है, मेरा निवास भी वहीं है।

ऐसा कहकर लक्ष्मी भी इन्द्र के पास चली आई। जाने की बेला में देवी लक्ष्मी ने सुंदर वचन कहे जो हम सबके लिए लक्ष्मी पाने का मानो महामंत्र है। यह कि 'धर्मः सत्यं तथा वृत्तं बलं तथाप्यहम्। शीलमूला महाप्राज्ञ सदा नास्त्यत्र संशयः।।' अर्थात हे महाप्राज्ञ! धर्म, सत्य, सदाचार, बल और मैं लक्ष्मी, हम सभी सदा शीलवान के पास ही रहते हैं। शील ही इन सबकी जड़ है, इसमें कोई संशय नहीं है। जिसके पास शील है, लक्ष्मी उसी को मिलती और उसी के पास टिकती है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

"दीप मेरे जल अकंपित..."

महादेवी वर्मा की कविता की यह पंक्तियां आज हमारे लिए सार्थक हैं। यह दीप कोई और नहीं हमारा मानस है। इस समय अकंपित रूप से इसकी ज्योत जलाए रखना जरूरी है। इस दीपावली का इससे बड़ा कोई संदेश नहीं हो सकता। कोरोना संक्रमण काल ने देश-दुनिया के भविष्य पर धुंधला अंधियारा फैला दिया है। अमेरिका जैसी महाशक्तियां जहां हैरान-परेशान हैं, तो भारत जैसे देश में भी चिंता की लकीरें हर पैशानी पर देखी जा सकती हैं। खासकर हमारे युवा वर्ग के लिए यह समय काफी सतर्कता, समझदारी और समर्पण की ताकीद का है। एक तरफ हमें कोरोना से लड़ना है तो दूसरी तरफ अपने आने वाले समय के लिए भी तैयारी करना है। इस सब के बीच हमारा अपने आप पर भरोसा, संयम और साहस ही हमारे लिए संबल हैं। कोरोना ने भविष्य की दुनिया की नई तदबीर लिख दी है। कोरोना पर काबू के लिए वैक्सीन भले आ जाए लेकिन वह फिर से दुनिया को वह रफ्तार नहीं दे सकती, जो इसके पहले थी। जिस बिंदास तरीके से जीवन चल रहा था, वह अनुशासन और परिधियों से घिर गया है। हमें अपने आप को बचाना है, परिवार की सुरक्षा करनी है और देश को आगे बढ़ाने में अपने योगदान में भी कमी नहीं आने देना है। यह सब तब होगा जब हम इन परिस्थितियों में अपनी जीजीविषा को थामे रहें। कोरोना संक्रमण के कारण सबसे ज्यादा असर रोजगार-धंधों पर पड़ा है। बड़े-बड़े औद्योगिक और व्यावसायिक घरानों के सामने संकट खड़ा हो गया है। तभी तो टाटा जैसे व्यक्तित्व को कहना पड़ा- "2020 केवल जिंदगी की लड़ाई जीतने के लिए है। जिंदा रहे तो कमाई तो बाद में भी कर लेंगे।"

निश्चित तौर से कोरोना से लड़ने में भारतीय समाज ने अदम्य साहस और संयम का परिचय दिया है। लॉकडाउन में पूरा देश जिस एकता और समर्पण के साथ एक दूसरे का हाथ थामें रहा, वह दुनिया के लिए भी एक मिसाल है। वंचित वर्ग की मदद के लिए न केवल धनाढ्यों ने अपना खजाना खोल दिया वरन् सामान्य वर्ग ने भी अपनी क्षमता से आगे बढ़ कर मदद करने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। यही कारण है कि देश किसी भी नजरिए से कहीं कमजोर दिखाई नहीं दिया। इस मामले में यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि देश का नेतृत्व करने वालों ने इसमें बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे समय-समय पर देश का न केवल मार्गदर्शन करते रहे अपितु यह भी कोशिश करते रहे कि हिम्मत तोड़ने वालों को कहीं कोई मौका न मिले। उम्मीद की जाना चाहिए कि कोरोना का संक्रमण जल्दी ही देश से दूर होगा। तब तक हम अपनी हिम्मत, समझदारी और संयम को बनाए रखते हुए निरंतर आगे बढ़ने की अपनी क्षमता को कम न होने दें। यह दीपावली विशेषकर युवा वर्ग के लिए संदेश लेकर आई है। भारत का भविष्य उन्हें ही लिखना है। इसके लिए उनका अंतरमन किसी निराशा और आशंकाओं से जरा भी कंपित नहीं होना चाहिए। इस दीपावली हम अपने आंगन में जलाए जाने वाले हर दीपक से यही प्रार्थना करेंगे कि दीपावली की यह रोशनी देश को फिर विश्व पटल पर दैदीप्यमान करेगी। दीपावली के मौके पर सभी समाजजनों को श्री माहेश्वरी टाइम्स परिवार की ओर से यही शुभकामनाएं हैं।

यह दीपावली अंक हमेशा की तरह दीपोत्सव से जुड़े भावमय, सारगर्भित और रोचक आलेखों के साथ प्रस्तुत है। सभी स्थायी स्तंभों, कविताओं, कहानियों और अन्य पठनीय सामग्री को समाहित कर इसे आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार करने की कोशिश की है। इस अंक में आप समाज की उन दो विभूतियों के बारे में भी जानेंगे जो अब हमारे बीच भौतिक शरीर के साथ नहीं हैं लेकिन उनका कृतित्व और व्यक्तित्व सदैव हमारे लिए प्रेरणीय रहेगा, ये हैं माहेश्वरी महासभा के उपसभापति राजेश बिड़ला व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिडला के पिताश्री श्रीकृष्ण बिडला और महासभा के पूर्व कार्यालय मंत्री कोलकाता के वरिष्ठ समाजसेवी श्री रमाशंकर झंवर। दोनों ही व्यक्तित्वों से शायद ही कोई समाजजन अपरिचित हों। उनकी कर्मठता, समाज के प्रति समर्पण और अदम्य जीजीविषा हम सबके लिए प्रेरणा बने, इसलिए हमने कोशिश उनके जीवनवृत्त को सहेजने की कोशिश की है। एक बात और इस बार श्री माहेश्वरी टाइम्स परिवार के एक अंग ऋषि-मुनि क्रिएशन ने दीपावली पूजन किट तैयार की है। इस किट में दीपावली पूजन से संबंधित हरेक सामग्री आप पाएंगे। बहुत ही न्यूनतम दर पर यह उपलब्ध है। एक बार इसे मंगा कर आप देखें। इसे आप जरूर पसंद करेंगे।

जय श्रीकृष्ण!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

कोरोना से पहले और कोरोना के बाद

अतिथि सम्पादकीय

कार्पोरेट क्षेत्र में वित्त विशेषज्ञ के रूप में पहचान रखने वाले कोलकाता निवासी ख्यात समाजसेवी अरूण लड्ढा का जन्म अ.भा. माहेश्वरी महासभा के पूर्व सभापति श्री जोधराज लड्ढा के यहाँ वर्ष 1965 में जयपुर के समीप स्थित फुलेरा (राजस्थान) में हुआ था। आप व्यावसायिक रूप से वित्त प्रबंधन, निवेश बैंकिंग व कार्पोरेट वित्त के क्षेत्र में लम्बे समय ससे सेवा दे रही ख्यात कम्पनी "जे.आर. लड्ढा फायनेंशियल सर्विसेज प्रा.लि. के निदेशक हैं। समाजसेवा की भावना आपको पारिवारिक रूप से विरासत में ही मिली। आप वर्ष 2016 से सतत् दूसरी बार कोलकाता माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष हैं। वर्ष 2014 में अजमेर एसोसिएशन के सचिव भी रहे।

आप गोरख बंसी ट्रस्ट (कोलकाता), मानव कल्याण आश्रम (हरिद्वार और बद्रीनाथ) और माहेश्वरी विकास परिषद लिमिटेड से भी जुड़े हैं। साथ ही अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के राज्य कार्यकारिणी समिति सदस्य (कोलकाता), वृहत्तर कोलकाता राज्य माहेश्वरी सभा के पूर्व उपाध्यक्ष, भारतीय चैम्बर ऑफ कॉमर्स की कार्यकारी समिति के सदस्य, वाणिज्य और कलकत्ता चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्य भी हैं।

सर्वप्रथम मैं समस्त पाठकों व समाजजनों को दीपावली महापर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं और सभी की सुख-समृद्धि व स्वस्थ जीवन की मंगल कामना। साथ ही आशा करता हूँ कि सम्पूर्ण विश्व, कोरोना महामारी की इस विभीषिका से शीघ्र ही मुक्त हो सके।

कोरोना महामारी विश्व इतिहास की ऐसी घटना है, जो सम्भवतः वर्तमान में अभी जो जिंदगी जी रहे हैं उन्होंने कभी देखी नहीं। इस कोरोना महामारी ने देश-विदेश नहीं पूरे विश्व को बदल कर रख दिया है। अगर हम इस महामारी के पहले और बाद की चर्चा करें तो बहुत से ऐसे पहलू समझ आते हैं, जो आमूलचूल रूप से बदल गए हैं। पहले आदमी की स्थिति सामाजिक थी और लोगों से मेल मिलाप करना अच्छा लगता था। पहले आदमी गली-गली शहरों में घूमता था। उसको ऐसा लगता था जहां पर जो अच्छा है उसे ग्रहण करें और अपनी कार्यकलाप व श्रृंखला को और बढ़ाए। इस कारोना महामारी ने हमारे काम के तरीकों को पूरा बदल कर रख दिया है। पहलें हम सिनेमाघर में फिल्म देखने जाते थे और अब हमको कोरोना महामारी ने यह कहा है कि आप घर में रहिये और नेटफ्लैक्स पर फिल्म देखिये और आनंद लीजिए।

मेरा यह मानना है कि इस महामारी ने हमको ऐसी तीन चीजें दी हैं, जो पहले थी ही नहीं और जो हम सोचते थे वह कर नहीं पाते थे, पहला हमारा परिवार, दूसरी हमारी सेहत, तीसरा नई तकनीकी। मेरा ऐसा मानना है हमारा परिवार पिछले पचास साल से बिखर रहा था छोटा हो रहा था। कोरोना महामारी ने यह कहा कि परिवार के साथ रहिये परिवार को अच्छा रखिये और परिवार के साथ जिंदगी जीने का ये जो मौका है, इस मौके का आनंद लीजिये। दूसरा हमारा शरीर, हमारी सेहत। पिछले 20 से 40 वर्षों में हमारी जिंदगी ऐसी बन गई थी कि अपने शरीर के अलावा हम दूसरी जगह ध्यान ज्यादा देते थे। हमारा शरीर शायद पैसा कमाने का जरिया बन गया था। पर मेरा यह मानना है कि आप घर पर रहिये और अपना ध्यान रखिये। अच्छा शरीर रहेगा तो जीने का अच्छा मजा आएगा। ऐसा लगता है टाईम से खाना, टाईम से सोना एवं व्यायाम करना और ध्यान करना। उससे हमारे शरीर में जो परिवर्तन होगा वह हम सबको लम्बे समय तक जीने का आनंद देगा। इस कोरोना महामारी ने हमें भलीभाँति सिखाया है कि हमें अपने शरीर पर पूरा ध्यान देना है। तीसरा विषय है, नई टेक्नॉलॉजी। कोरोना के पहले लोगों का मानना था, अरे भई समय नहीं है, नई तकनीक हम कैसे उपयोग करें? बच्चे जो आ रहे थे वे ज्यादा होशियार हो रहे थे वे इसका इस्तेमाल कर रहे थे। उन्होनें हमें बताया कि अगर नई तकनीक का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो इस क्षेत्र में आपका मूल्य खत्म हो जाएगा। हम पहले जन्मदिन मनाते थे, अपने परिवार के साथ मनाते थे। कोरोना ने क्या किया है? हमारे जितने भी रिश्तेदार हैं इंडिया में या पूरे विश्व में, वह अब हमारे साथ जन्मदिन मनाते हैं। कितना बड़ा बदलाव हो गया है। तकनीक ने क्या किया? पहले हम जाते थे, मिलते थे, काम होता था। अब सबकी मीटिंग जूम पर होती है। जूम पर सबको आराम है। सब घर में बैठे हुए हैं। तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। अपने मन की बातें शेयर कर रहे हैं। कोरोना ने हमको और क्या दिया है। हमारी यात्रा कम हो गई, प्रदूषण कम हो गया। हवा अच्छी हो गई। हवा के अच्छे होने से हमारी सेहत अच्छी हो गई। कोरोना ने हमारे जीवन को इतनी जगह छूआ कि हमारा जीवन पोस्ट कोरोना।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि कोरोना ने इतिहास बदला है। माहेश्वरी समाज जो हमेशा प्रगतिशील रहा है उसने हमेशा आगे की ही सोची है। इस महामारी से अच्छा लेगा और अपना इतिहास नया बनाएगा। मेरी यही विनती है कि इस बदलती परिस्थिति में अपनी योजनाएं नई सोच के साथ बनाए। नई टेक्नॉलॉजी का उपयोग करें और विश्वास करें कि आप अपने आत्मबल से और समाज के संस्कार से अवश्य ही सबको और समाज को सफलता के नये आयाम तक पहुंचायेंगे। मैं समाज के वरिष्ठ समाजसेवी व हमारे परिवार के अनन्य श्री रमाशंकर झंवर का देहावसान हमारे परिवार की अपूरणीय क्षति है। मैं स्वर्गीय श्री झंवर के श्रीचरणों में नमन करता हुआ, आपके परिवार को इस वज्रघात को सहने की शक्ति देने की भगवान महेश से प्रार्थना करता हूँ। पुनः समस्त स्वजनों को दीप पर्व की मंगलकामनाऐं।

अरूण लड्ढा
अतिथि सम्पादक

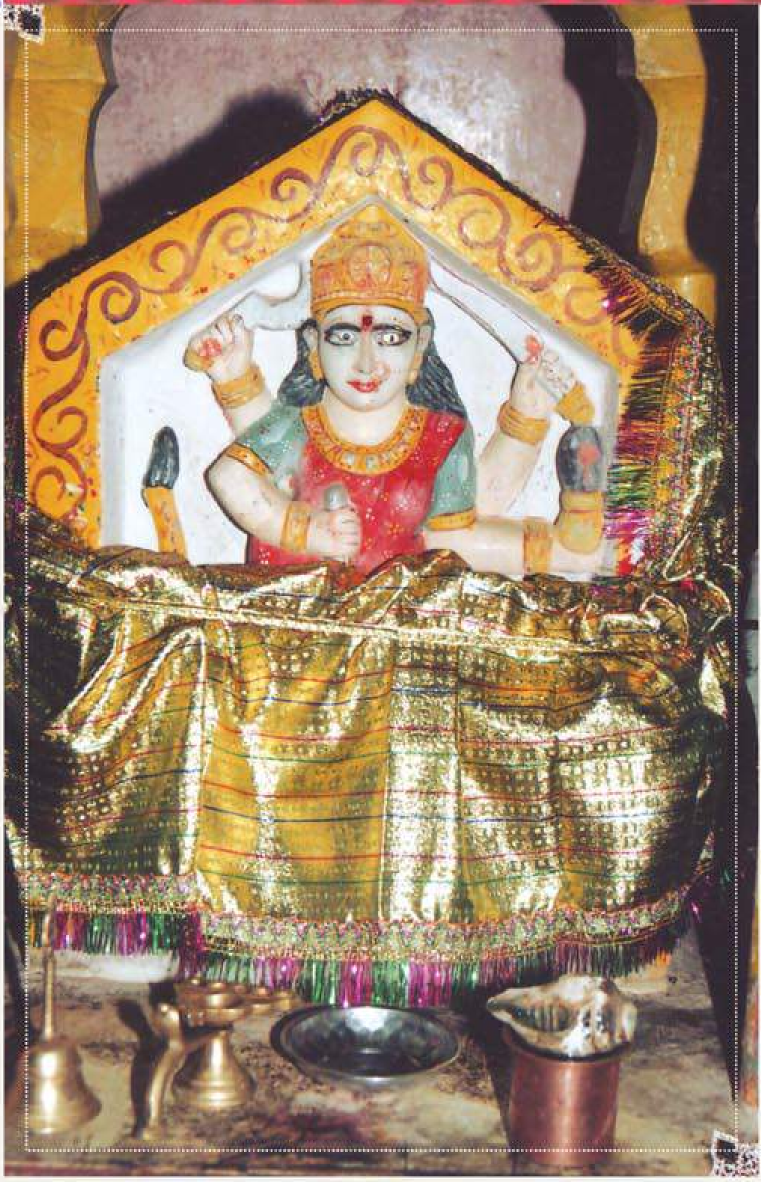

श्री सुजासन माता

टीम SMT

श्री सुजासन माता झंवर (खड) व गायल खाँप की कुलदेवी हैं।

श्री सुजासन माता का मंदिर जोधपुर के पास है। यह मंदिर पुराना था, जिसका समाज के लोगों ने जीर्णोद्धार किया है। खड झंवर की कुलमाता श्री सुजासन माता का मंदिर कहाँ है, उसका पता लगाने की काफी कोशिश जलगाँव के स्व. शंकरलालजी झंवर ने सन् 1971 में पूरे राजस्थान में घुमकर एवं जागाओं से संपर्क कर की। किन्तु कहीं पर भी खड झंवर की कुलमाता श्री सुजासन माता का मंदिर नहीं मिला। केवल इतनी जानकारी मिली कि, खड़ झंवर की उत्पत्ति परबतसर जि. नागौर से हुई है। इसके बाद स्व. श्री झंवर ने परबतसर में माताजी का मंदिर बनाने का निश्चय किया तथा परबतसर के ही स्व. श्री फूलचंद झंवर से संपर्क कर वहाँ के तालाब के पास 1973 में मंदिर बनाया। जयपुर से मूर्ति बनवाकर 1973 के नवरात्रि पर्व में प्राणप्रतिष्ठा की। जागाओं से खड झंवर भाइयों के पते प्राप्त कर उन्हें निमंत्रण भेजा गया। देश के कलकत्ता, सिहोर, पिपरीया, भिलवाड़ा, कुचामन, जलगाँव, विजयनगर, मालेगाँव व संगमनेर, इंदौर इत्यादि कई जगह से लगभग 1000 भाइयों ने प्राण-प्रतिष्ठा में भाग लिया। मंदिर से रोज की पूजा अर्चना, वहीं के श्री रामस्वरूप पोरख करते हैं। पहले उनके पिताजी ध्यान देते थे। मंदिर बने लगभग 35 साल हो गये हैं। अब इसे रिपेअर करना आवश्यक हो गया है। साथ ही मंदिर के सामने भजन-कीर्तन के लिये हॉल बनाना भी जरूरी है। इसके लिये लगभग 3 से 4 लाख रुपये के खर्च की आवश्यकता हो सकती है। इसकी सारी जिम्मेदारी झंवर मंदिर विकास समिति वहन कर रही है।

॥ मंगलकामनाऐं ॥

निराशा के अंधकार को दूर करें

समस्त स्वजातीयजनों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं और सभी के स्वस्थ एवं सुखद जीवन की मंगलकानाऐं!

यह पर्व वास्तव में अंधकार अर्थात निराशा पर प्रकाश अर्थात् आशा की विजय का पर्व है और अपने इस उद्देश्य के कारण वर्तमान दौर में इसका महत्व और भी बढ़जाता है। कोरोना महामारी से हम स्वास्थ्य के तौर पर तो सम्हले हैं, लेकिन जिन विषमताओं से इस दौरान जूझना पड़ा उसने हमारे मन मस्तिष्क पर निराशा का अंधकार व्याप्त कर दिया है। जब तक इसे हम नहीं हटाऐंगे, इस पर्व की सार्थकता नहीं है। याद रखें हमारे पूर्वजों के सामने भी कई चुनौती आयीं और वे हार मानकर लौट गईं। हम उसी समाज की संतान हैं। अतः हमें हर हाल में कोरोना से जीतना ही है और हम जितेंगे।

पद्‌म श्री बंशीलाल राठी
पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

नयी तकनीकों को अपनाऐं

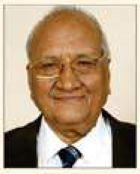

दीपावली पर्व की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाऐं साथ ही सभी को सर्वांगीण विकास की मंगलकामनाऐं।

दीपावली पर्व इस बार कोरोना के निराशामय अंधकार में आशा के प्रकाशपर्व की तरह आ रहा है। इस दौर ने हमें आधुनिक तकनीक की वह प्रकाश की किरण दिखाई है, जो हमें सफलता के शिखर की ओर पहुँचा सकती है। याद रखें इस महामारी ने हमें परिवर्तन का संदेश दिया है, नई तकनीकों की ओर बढ़ने का। यदि इसे हमने आत्मसात किया तभी हम सफलता के पथ पर आगे बढ़ पाऐंगे।

जोधराज लड्ढा
पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

समाज की सेवा भावना को नमन

समस्त स्वजातीयजनों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं। हमारा समाज हमेशा से ही सेवाभावी समाज रहा है। देश के विभिन्न भागों में बने भवन व संचालित गतिविधियाँ तो इसका प्रमाण हैं ही साथ ही कोरोना महामारी के दौरान समाज ने देश के हर स्थान पर अपने खर्च व अपने स्तर पर जरूरतमंदों की सेवा करने का जो अनूठा प्रयास किया, उसने समाज को हर आमजन में और भी गौरवान्वित कर दिया। हमारे समाज में भी कुछ ऐसे अपने थे, जिन्हें अपनों की मदद की जरूरत थी। मैं समाज की ऐसी अप्रतीम सेवा भावना को नमन करता हूँ और यह भावना इसी तरह बनी रहे, ऐसी माता महालक्ष्मी से कामना करता हूँ।

रामकुमार भूतड़ा,
पूर्व महामंत्री, अ.भा. माहेश्वरी सभा

परिवार से ही सुख समृद्धि

सभी समाजजनों को दीपावली महापर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं तथा सुख समृद्धि की रोशनी से सभी का जीवन आलौकित हो ऐसी मंगल कामनाऐं!

हम कोरोना महामारी के कारण किये गये लम्बे लॉकडाऊन की स्थिति से गुजरे हैं। इस स्थिति में परेशानी भी हमने उठाई लेकिन इसने हमें परिवार का महत्व भी समझा दिया। हम व्यावसायिक खींचतान की स्थिति में परिवार के महत्व को भूल चुके थे। इसने हमें वह सौगात पुनः दी है। दीर्घावधि में यह हमारे सामने कोरोना का यह सुखद परिणाम बनकर आऐगी।

पुनः सभी को दीपावली की शुभकामनाऐं!

रामअवतार जाजू
पूर्व अध्यक्ष, माहेश्वरी बोर्ड
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

॥ मंगलकामनाऐं ॥

इस बार डिजिटल मेल-मिलाप

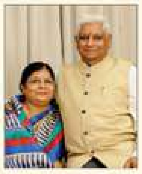

इस वर्ष कोरोना की वजह से जो परिस्थिति हैं उसे ध्यान में रखते हुए हम सभी को दीपावली का यह पावन पर्व एक नए रूप से मनाना चाहिए ऐसा मैं सभी से आग्रह करूँगा। जैसे कि हमें किसी के घर जाने की बजाय हमारे पास उपलब्ध डिजिटल तकनीक के माध्यम (विडियो कॉल/टेलीफोनिक कॉल/व्हरचुअल मीटिंग आदि) से एक दूसरे के साथ मेल मिलाप करना चाहिये। ऐसा करने से हम केवल स्वयं का ही नहीं अपितु अपने परिवार एवं हितचिंतकों का भी ध्यान रखने में कामयाब रहेंगे। पटाखे तथा अनावश्यक खरीददारी पर रोक लगाकर, उस पर होने वाले धनराशि के व्यय का उपयोग जरूरतमंदों की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए करना चाहिए, जिससे हमारी धनराशि का सदुपयोग भी होगा और हमें परम शांति तथा पुण्य का अनुभव प्राप्त होगा। सोश्यल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए गरीबों में मिठाईयां बांट कर देखिये, अपार सुख और खुशी प्राप्त होगी। आप सभी के घर परिवार एवं व्यापार में हमेशा सुख, समृद्धि, शांति और आनंद का वास बना रहे, साथ ही इन सभी का उपभोग करने हेतु आप सभी को आरोग्य व धन की प्राप्ति हो ऐसी शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

त्रिभुवन - उमा काबरा
उपसभापति (मध्यांचल) अ.भा. माहेश्वरी महासभा

अपनों की मदद के लिए भी आगे आऐं

सर्वप्रथम मैं अपनी ओर से समस्त समाजजनों को इस प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं देता हूँ, साथ ही सभी से इसे वास्तव में प्रकाश पर्व बनाने की अपील भी करता हूँ। यह पर्व प्रकाश अर्थात खुशियों का पर्व है, तो इसकी सार्थकता भी तभी है, जब हम हर अपने के यहाँ खुशियों का प्रकाश पहुँचा सकें। हमारा समाज वैसे तो लक्ष्मी पुत्रों का समाज है, लेकिन ऐसे समाजजनों की संख्या भी कम नहीं है, जो आर्थिक रूप से संभलने की कोशिश कर रहे हैं। अतः यदि हम समर्थ हैं, तो उन्हें सम्बल देकर उनके जीवन में खुशियों का प्रकाश फैला सकें तो ही इस पर्व की सच्ची सार्थकता होगी।

अशोक सोमानी
उपसभापति (उत्तरांचल)
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

सदभावना-सदाचार-सम्र्पण बना रहे

दीपावली के पावन पर्व पर समस्त माहेश्वरी बंधुओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कुशलता की मंगलकामना करता हूँ।

मैं मंगलकामना करता हूँ कि समाज में सदैव प्रेम, सहनशीलता, सदभावना, सदाचार समर्पण बना रहे। समाज हर क्षेत्र में सफलता की ऊंचाइयों को छुए। समाज बंधुओं को प्रतिष्ठा एवं सफलता प्राप्त हो, समाज बंधु सदैव प्रसन्नचित्त रहें। मैं भगवान से यही कामना करता हूँ कि हमारे समाज व राष्ट्र को इस समय आई हुई आपदा से जल्द मुक्ति दिलाए तथा समाजजन स्वस्थ और सुरक्षित रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

राजकुमार काल्या
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)
अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन

अपने संस्कारों को भी करें नमन

दीपावली महापर्व की समस्त स्वजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं एवं सभी की सुख-समृद्धि की माँ महालक्ष्मी से मंगलकामनाऐं।

शास्त्र वचनों के अनुसार माता महालक्ष्मी का आशीर्वाद उसे प्राप्त होता है, जो संस्कारवान हैं। कारण यह है कि संस्कार वह शक्ति है, जो हमें हर विपरीत परिस्थिति से निपटकर आगे बढ़ने की शक्ति देती है। माहेश्वरी समाज यदि उद्योग-व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के शिखर पर बैठा है, तो इसका श्रेय समाज के श्रेष्ठ संस्कारों को ही जाता है। कोरोना महामारी से बचने में भी हमारे ये संस्कार ही हमारी शक्ति बने हैं और बनेंगे। अतः इस पावन पर्व पर माता महालक्ष्मी के साथ अपने इन संस्कारों को भी नमन करें।

कमलकिशोर चांडक
पूर्व संयुक्त मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा
राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष, भा.ज.पा.

॥ मंगलकामनाऐं ॥

निराशा से सकारात्मक की ओर बढ़ें

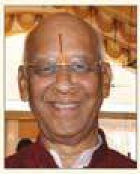

सभी को माता महामक्ष्मी की उपासना के इस पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं व सभी के स्वस्थ एवं सुखमय जीवन की मंगलकामनाऐं।

इस बार यह पर्व कोरोना काल में आया है। एक ऐसे दौर में जब हम निराशा के अंधकार में डूबे हैं। ऐसे में यदि हम दीपावली का संदेश आत्मसात कर निराशा से सकारात्मकता की ओर बढ़ सकें तभी इस पर्व की सार्थकता होगी। याद रखें निराशा में वह नकारात्मक शक्ति है, जो हमें असफल कर देती है, तो सकारात्मकता में सफलता की ओर ले जाने की शक्ति। फैसला बस हमारे हाथ में है, हमें क्या चाहिये?

श्यामसुंदर राठी
कार्य समिति सदस्य
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

डर के आगे जीत है

समस्त स्नेहील समाजजनों को दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाऐं। सभी के सर्वांगीण विकास की माता महालक्ष्मी से प्रार्थना करते हैं।

यह दीपावली पर्व हमारे जीवन में अंधकार पर प्रकाश की विजय का संदेश लेकर आ रहा है। वर्तमान में हम भारी व्यावसायिक उतार - चड़ाव तथा कोरोना महामारी दोनों के डर से न सिर्फ गुजरे हैं, अपितु गुजर रहे हैं। ऐसे में मैं तो यही कहना चाहूँगा कि विपरीत परिस्थितियाँ वास्तव में हमारे लिये चुनौती है और इस चुनौती के डर को यदि हमने पराजित कर दिया तो सफलता हमारे कदम चुमेगी। तो आइये इस पावन पर्व पर अपने मन में आ बैठे अज्ञात भय को पराजित कर सफलता की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प लें।

घनश्याम करनानी
पूर्व प्रबंध न्यासी, श्री कोठारी बंधु शौर्य स्मृति ट्रस्ट

पीछे नहीं नारी शक्ति

दीप पर्व की शुभकामना देते हुए सभी के सर्वांगीण मंगल की मंगलकामना।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है, "यत्र पूज्यन्ते नारी तत्र रमन्ते देवता"। इसका अर्थ ही वास्तव में नारी की महत्ता को प्रतिपादित करता है। इसी क्रम में माता महालक्ष्मी की आराधना का यह पावन पर्व हम मना रहे हैं। लक्ष्य है, तो बस शक्ति स्वरूपा को नमन करना। इस क्रम में मैं समाज की उन नारी शक्ति को नमन करना भी अनिवार्य समझता हूँ, जो समाज ही नही अपितु मानवता की सेवा के लिये तन-मन-धन से अपने पूरे मातृत्व भाव के साथ जुटी रहती हैं। कोरोना काल में माहेश्वरी नारी शक्ति की इन्हीं पावन भावना का साक्षी पूरा देश बना। समाज की नारी शक्ति के इस योगदानों को मैं शत-शत नमन करता हूँ।

निर्मला मल्ल
प्रदेश अध्यक्ष,
वृहत्तर कोलकाता प्रदेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

हर प्रकार की समृद्धि हो!

ॐ तमसो माँ ज्योतिर्गमयम की कामना ही दीपावली पर्व का मुख्य लक्ष्य है। हमारा जीवन भी दीपमालिका की जगमगाहट की भांति ज्योतित रहे, यही कामना हमारे भीतर जागृत रहे एवं हम दीपमालिका के समान ही अपने घर परिवार को ज्योतित करते रहें।

यह त्योंहार हमें अपने जीवन में प्रकाश भरने की प्रेरणा देता है। ज्ञान का प्रकाश ही हमें मंजिल तक ले जा सकता है और मंजिल है....हर प्रकार की समृद्धि, शोभा व सौंदर्य से आपूरित जीवन। समृद्धि व संपन्नता से तात्पर्य केवल धन वैभव से नही...भावनाओं की व जीवन मूल्यों की समृद्धि भी आवश्यक है, तभी हम अपने व अपने आस पास के जीवन मे जगमगाहट कर सकते हैं।

जीवन भर प्रज्ज्वलित रहें यश, मान, सम्मान की दीपशिखाएं.....

मधु ललित बाहेती
कार्यालय मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

एक कर्मयोगी को श्रद्धांजलि

एक सच्चे कर्मयोगी और अतुलनीय दूरदृष्टता का इस संसार से चला जाना एक अपूरणीय क्षति है। हमारे मार्गदर्शक व प्रसिद्ध समाजसेवी श्री द्वारकादास राठी 14 वर्ष पूर्व हमारे मने में अपनी अमिट याद छोड़कर अनन्त यात्रा पर चले गए। अनुकरणीय व्यक्तित्व श्री राठी ने पुरानी कहावत ''कार्य शब्दों से अधिक बोलता है'' को चरितार्थ करते हुए हमेशा अपनी मौन उपस्थिति दर्ज कराई। उनके न रहने के कारण जो अन्धकार छा गया है उसे हम उनके जीवन दर्शन के प्रकाश से दूर करने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

maheshwari.org
के संस्थापक
श्री द्वारकादास राठी
20.02.1959 - 28.10.2006

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agrawal2agrawal.org

Registration Free

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

'नव उड़ान'' ने महिलाओं को लगाऐ पंख

दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन ने किया 10 दिवसीय आयोजन

दिल्ली। प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा विभिन्न समितियों के अंतर्गत 10 दिवसीय कार्यक्रम नव उड़ान का आयोजन 3 से 14 अक्टूबर 2020 तक किया गया। कार्यक्रम का भव्य उद्घाटन अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारीगणों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। व्यक्तित्व विकास समिति के अंतर्गत प्रथम दिवसस उद्घाटन समारोह के दिन सचिव प्रभा जाजू ने नव उड़ान के आयोजन की महत्वाकांक्षी भूमिका बताई। अध्यक्ष श्यामा भागड़िया ने स्वागत भाषण दिया।

प्रथम दिवस सभी के साथ चलने का संकल्प

प्रथम दिवस समिति सह प्रभारी उर्वशीजी साबू ने अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित कीं। राष्ट्रीय समिति प्रभारी मंगल मर्दा ने संगठन में सागर से मोती चुनने की कला सिखाई। राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने दिल्ली प्रदेश को सपनों की नई रोशनी दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी का सन्देश मिला। राष्ट्रीय महासभा के सभापति श्याम सोनी ने कहा संगठन की मूल शक्ति सभी को साथ लेकर चलने का जज्बा होता है। दिल्ली प्रदेश के ऐतिहासिक सफर तब से अब तक की भावुक एवम् प्रगतिशील यात्रा से अनेक पुरानी स्वर्णिम यादें ताजा हो गई। समिति संयोजिका नेहा बागड़ी ने सह संयोजिकाओ के साथ कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

द्वितीय दिवस- गाँव की सैर

ग्राम विकास समिति के अंतर्गत आयोजन में ऐसा वातावरण निर्मित हुआ कि खेत खलिहान जीवन्त हो उठे। हरी बेल की तरह प्रदेश अध्यक्ष श्यामा भाँगड़िया ने अतिथियों का स्वागत कर कहा कि हमारे परिवारों के पढ़े लिखे बच्चों को भी ग्राम विकास में अपना योगदान देकर ग्रामीण समस्याओं का निवारण करना चाहिए। प्रभा जाजू ने अपने संचालन में ग्रामीण जीवन की सादगी, प्रफुल्लता और शुद्धता का वर्णन किया। राष्ट्रीय समिति सह प्रभारी अनामिका माहेश्वरी ने गांवों की महिला जागरूकता अभियान के तहत अनेक योजनाएं और वर्कशॉप्स के बारे में बताया और लघु उद्योगों पर जोर दिया। उत्तरांचल रा.उपाध्यक्ष किरण लड्ढा ने ग्राम भूमि पर अपने विचारों के मांडने मांड दिए। प्रशंसा ने जल सरंक्षण के अनेक सरल और टेक्निकल उपाय बताए। 10 मिनट की नाटिका में शहर की लड़की किस तरह से गांव के खुले आंगन में रम जाती है और कंकड़ों से मस्त होकर खेलने लगती है, का सुंदर वर्णन था। आयोजन को दीप्ति बिड़ला ने अपनी सहसंयोजिकाओं के साथ मिलकर सुन्दर रूप और गहरा हरा रंग दिया।

तृतीय दिवस- डिजिटल दुनिया से परिचय

महिला सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत राष्ट्रीय समिति प्रभारी प्रमुख गिरिजा सारडा ने डिजिटल लर्निंग प्लेटफार्म ''मेघा'' के बारे में विस्तार से बताया। स्टेण्डप वीडियोस से नारी की दुविधाएं और मुख्य वक्ता प्रोफेसर कल्पना गगरानी से पूछे जाने वाले प्रश्न उठाए गए जो घर और कॉरपोरेट वर्ल्ड के बीच के संतुलन बिठाने से सम्बंधित थे। उन्होंने नारी सशक्तिकरण के अनेक गुरु मंत्र दिए कि मिठास और रिश्तों का वर्धन करते हुए अपने अस्तित्व को चमकाते हुए कामकाज की दुनिया कैसे संभालनी है?

चतुर्थ दिवस-ऑनलाईन संस्कारों की पाठशाला

बाल और किशोर विकास समिति के अंतर्गत किशोर और बाल पीढ़ी की चहक, महक, सकारात्मक सोच आदि से भरे प्रोग्राम नव प्रभात गया। राष्ट्रीय समिति सह प्रभारी रंजना भट्टड़ ने अपने आशीर्वचन दिये। बच्चों के विकास के लिए समर्पित राष्ट्रीय प्रभारी सविता पटवारी ने भी सम्बोधित किया। समिति संयोजिका सपना कोठारी ने अपनी टीम के साथ बड़े ही परफेक्शन से बच्चों की ऑनलाइन क्लासेज लगाई। इसमें यंग एडल्टस ने विभिन्न विषय पढ़ाएं। कक्षा पूरे साजो सामान से सजी हुई थी। अध्यापकों एवम् अध्यापिकाओं के परिधान भी बड़े उपयुक्त थे।

पंचम दिवस- गृहस्थ जीवन के मूलाधार

विवाह गठबंधन समिति के अंतर्गत आयोजन में अध्यक्ष ने गृहस्थ जीवन के मूलाधार विवाह संस्कार से प्रीत की कोयलिया गुंजा दी और सभी का स्वागत किया। सचिव प्रभा जाजू ने अपने गीतों से मंगल भाव बिखेर दिए। चलो गाँव की ओर घोष वाक्य से श्रीमती शशि ने विवाह के नाम पर होने वाले दिखावे, अनाप शनाप खर्चों को रोकने के लिए प्रेरित किया। समिति संयोजिका छाया मूंधड़ा ने अपनी टीम का परिचय कराया। विवाह सम्बन्धित अनेक विषयों पर अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में विवाह टूटने के कारण और निवारण पर अति सुंदर भाव प्रस्तुतियां दी गई।

षष्ठम दिवस- कम्प्यूटर की दुनिया

कंप्यूटर नेटवर्किंग समिति के अंतर्गत सचिव ने कम्प्यूटर की सशक्त दुनिया से जोड़ते हुए कहा कि कम्प्यूटर तो घर-घर की आंखों का तारा है। अध्यक्ष ने बडे ही मुग्ध मन से सभी का स्वागत करते हुए कहा कि कम्प्यूटर की दुनिया ने कैसे आपसी दूरियां मिटाकर जूम पर सभी को एक कर दिया। समिति सह प्रभारी करुणा अटल ने कम्प्यूटर को जीवन का महत्वपूर्ण भाग बनाकर विकास की सीढ़ियां चढ़ने का सन्देश दिया। रा.समिति प्रभारी प्रमुख ममता मोदानी ने आज के सबसे तेज उपकरण कम्प्यूटर की महिमा बताते हुए आगामी आयोजनों की योजनाएं बताई। समिति संयोजिका शालिनी माहेश्वरी ने अपनी टीम के साथ आयोजन की तैयारी की। श्रेया बजाज ने ऐप के ज़रिए फोटो कोलॉज और वीडियो बनाना सिखाया।

सप्तम दिवस- जीवन के आधार

स्वास्थ्य एवँ पारिवारिक समिति के अंतर्गत सचिव ने कहा कि रिश्तों की धूप, जल, वायु से ही सम्बन्ध निखरते हैं और पुष्ट बनते है। अध्यक्ष श्यामा भांगडिया ने खूब आनन्द से रहने की कला सिखाई और कहा अन्तर्मन को ऐसा बनाऐ कि इसकी भूमि पर प्रसन्नता फूल खिलते रहें। समिति संयोजिका स्नेह माहेश्वरी ने अपनी टीम के साथ योग, प्राणायाम, जुम्बा डांस, पारिवारिक समरसता, खेल,मस्ती से भरा आयोजन सजाया। सात समंदर पार से आकांक्षा माहेश्वरी ने जुंबा नृत्य से धूम मचा दी। मुद्राओं से भी स्वास्थ्य वर्धन किया। मेहा और कोमल डागा ने फिट रहने के लिए डांस करने की सलाह दी। इससे शरीर की लचक के साथ साथ मन मस्तिष्क भी तरो ताज़ा हो गए।

अष्ठम दिवस- साहित्य के रंग

साहित्य चिंतन मनन समिति के अंतर्गत साहित्य के सागर में गहरे उतर कर दिल्ली प्रदेश ने रत्नों से अपना कलश भरा। अध्यक्ष ने कहा साहित्य मानव चित्त का दर्पण है। राजस्थान का लोक साहित्य रस और रंग से भरा है। साहित्य में ज्ञान और विज्ञान की दमक हैं। राष्ट्रीय समिति प्रभारी मंजु मांधना ने सभी का हित करने वाले साहित्य की चर्चा से सभा को मुग्ध कर दिया। राष्ट्रीय समिति प्रभारी प्रमुख पुष्पा तोषनीवाल ने कहा कि सारे ब्रम्हांड के अणु-अणु में साहित्य है। आवश्यकता है, रसास्वादन की। समिति संयोजिका मोनिका दम्मानी ने अपनी टीम के साथ उत्कृष्ट संचालन किया। एक से बढ़ कर एक प्रस्तुतियों ने रसों की सप्त झंकार से मंत्रमुग्ध कर दिया।

नवम दिवस- पर्व-संस्कृति के रंग

पर्व एवम् संस्कृति समिति के अंतर्गत आयोजन ने सद्य खिले पुष्पों की तरह सभी को तरोताजा कर दिया। सचिव ने कहा कि पर्वो में प्रकाश की नदी बहती है। अध्यक्ष ने कहा कि संस्कृति ही रंग भरती है वरना तो सुबह होती है और शाम ढलती है। राष्ट्रीय समिति सह प्रभारी प्रमिला चोला ने कहा कि त्यौहारों को मनाने से पारिवारिक प्रेम, सौहार्द, घनिष्ठता बढ़ती है। राष्ट्रीय समिति प्रभारी प्रमुख मंजु कोठारी ने कहा कि पर्वो का पारंपरिक महत्व रखते हुए ही इन्हें नवीनता से मनाऐं। त्यौहार ऐसे मनाए कि हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़े। समिति संयोजिका सरोज साबू ने आयोजन को आगे बढ़ाया। 7 क्षेत्रों की प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोहा।

दशम दिवस- पूर्णाहूति

इस दिन स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति द्वारा नव उड़ान का समापन दिवस अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सचिव ने कहा नव उड़ान ने दिल्ली प्रदेश को 10 दिवसीय अनूठी साहित्यिक, सांस्कृतिक,पार्विक, वैचारिक, आध्यात्मिक यात्रा कराई। नव उड़ान की कल्पना को यथार्थ रूप देने वालीं अध्यक्ष श्यामा भांगडिया ने पूर्णाहुति में सभी का शाब्दिक स्वागत किया। उन्होंने 10 दिवसीय श्रृंखलाबद्ध आयोजन नव उड़ान का श्रेय अपनी कर्मठ टीम को दिया। रा.समिति सह प्रभारी ममता राठी ने भी सम्बोधित किया। प्रदेश महासभा अध्यक्ष नीरज पड़तानी रा. समिति प्रभारी प्रमुख ऊषा करवा, रा. युवा संगठन के महामंत्री आशीष जखेटिया आदि ने सम्बोधित किया। आभार अध्यक्ष श्यामा भांगड़िया व सचिव प्रभा जाजू ने माना।

महिला संगठन की द्वितीय कार्यसमिति बैठक

८ महिलाओं को भेंट किया शौर्य स्मृति सम्मान

दिल्ली। अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की 3 दिवसीय द्वितीय राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक ''ध्यान योग'' का आयोजन गत 12 सितम्बर को समाज के सम्मानीय अतिथियों की उपस्थिति में ज़ूम ऐप पर किया गया। सभा का शुभारम्भ राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ द्वारा किया गया। स्वागत उद्बोधन राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी द्वारा दिया गया। तत्पश्चात महामंत्री श्रीमती बांगड़ ने संगठन द्वारा अब तक किए गए सामाजिक कार्यों व सेवा गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। संगठन की संरक्षिका मां रतनी देवी काबरा ने राष्ट्रीय संगठन के द्वादश सत्र के नेतृत्व के प्रति विश्वास जताते हुए भविष्य की सुखद कल्पना के साथ आशीर्वचन कहे। विशिष्ट अतिथि पश्चिमांचल उपाध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला ने कोरोना पेंडेमिक के दौरान भी महिला संगठन द्वारा संपन्न कई गुणात्मक रचनात्मक कार्यों की सराहना की।

इन महिलाओं का हुआ सम्मान

कार्यक्रम के विशेष भाग में श्री राम मंदिर निर्माण आंदोलन में सम्मिलित ८ माहेश्वरी महिलाओं का शौर्य स्मृति सम्मान भेंट कर अभिनंदन किया गया। इनमें अंजना माहेश्वरी तथा रेखा माहेश्वरी (सिकंदराबाद), सोमवती जाखेटिया, सुधा जाजू, कुसुम देवी व गणेश काकाणी तथा बीना माहेश्वरी (हाथरस) एवं रेखा माहेश्वरी (मीरापुर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन उपाध्यक्ष शामिल हैं।

इन्होंने दिया मार्गदर्शन

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता आईएएस रमाकांत बालदी चेयरमैन रेरा हिमाचल प्रदेश ने संगठन के कार्यों की सराहना करते हुए प्रशासनिक सेवाओं में कैरियर बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा के सभापति श्याम सोनी थे। उन्होंने बताया कि कोरोना के संक्रमण काल में महिला संगठन द्वारा पीएम केयर्स फंड में 1100000 रुपए की राशि दी गई तथा 500000 रुपये से आपदा फंड बनाया जो कोरोना से प्रभावित परिवारों की सहायता में योगदान दे रहा है। ९ महीने के अल्पकाल में ही दसों समितियों के माध्यम से महिला संगठन द्वारा किए गए कार्य एवं दो गोल्डन रिकॉर्ड बनाने पर उन्होंने विशेष रुप से बधाई दी। महिला संगठन की समितियों बाल विकास एवं किशोरी विकास साहित्य समिति, पर्व एवं सांस्कृतिक समिति, महिला अधिकार समिति तथा पारिवारिक समरसता एवं स्वास्थ्य समिति द्वारा संयोजित विभिन्न प्रतियागिताओं के पुरस्कार भी ई सर्टिफिकेट के रूप में वितरित किए गए। अध्यक्ष आशाा माहेश्वरी ने संपूर्ण कार्यक्रम की विवेचना प्रस्तुत की। महामंत्री मंजू बांगड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

वार्षिक साधारण सभा ऑनलाइन संपन्न

बैंगलुरू। माहेश्वरी सभा बैंगलुरू की 45वीं वार्षिक साधारण सभा की बैठक गत 27 सितम्बर को प्रथम बार ज़ूम ऐप के माध्यम से ऑनलाईन संपन्न हुई। इस अवसर पर सरकार द्वारा निर्धारित कोरोना वायरस (कोविद-19) महामारी के सारे नियमों का पालन किया गया। माहेश्वरी सभा अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया, माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा कांता काबरा, माहेश्वरी युवा संघ के अध्यक्ष अरविन्द लोया, माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट के चेयरमेन मोहनलाल माहेश्वरी, माहेश्वरी फाउण्डेशन के चेयरमैन राजगोपाल भूतड़ा तथा माहेश्वरी सौहार्द क्रेडिट को-ऑपरेटिव लिमिटेड के अध्यक्ष नन्दकिशोर मालू ने इस बैठक का शुभारम्भ किया। अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया ने उपस्थित सदस्यों का शाब्दिक स्वागत किया। सचिव भगवानदास लाहोटी ने गत वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही प्रस्तुत की। कोषाध्यक्ष अजय राठी ने वर्ष 2019-20 के आय व्यय की प्रस्तुति दी। सचिव विजयलक्ष्मी सारड़ा माहेश्वरी महिला मंडल, सचिव धीरज काबरा माहेश्वरी युवा संघ, मैनेजिंग ट्रस्टी देवकीनंद डागा माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट आदि ने भी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

सिर्फ शब्दों से न करना,
किसी के वजूद की पहचान,
हर कोई, उतना कह नहीं पाता,
जितना समझता और महसूस करता है।

ऑनलाईन कुकिंग वर्कशॉप का आयोजन

भरुच। स्थानीय माहेश्वरी महिला मण्डल द्वारा एक ऑनलाईन कुकिंग वर्कशॉप रखी गई। इसमें बेकिंग, सूप, स्नेक्स व पंजाबी डिशेस के आइटम का डेमो दिया गया। वर्कशॉप में भरुच माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा व खुशी कुकिंग क्लासेज की संचालिका ज्योति लड्ढा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

इसरो की प्रतियोगिता में आवेश चयनित

इंदौर. भारती अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा कक्षा 9 वी और 10 वी के छात्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमे देश के अलग-अलग राज्यो से छात्र- छात्राओं ने भाग लिया था । इस राष्ट्रीय स्तर की काम्पिटीशन में कक्षा 9वीं के छात्र इंदौर के आवेश पिता आशीष काबरा (माहेश्वरी) ने भारत में 16 वाँ स्थान और मध्यप्रदेश में दूसरा स्थान प्राप्त कर इंदौर एवं माहेश्वरी समाज का नाम गोरवान्वित किया। आवेश समाज सदस्य आशीष व सारिका माहेश्वरी के सुपुत्र हैं।

मीडिया राजस्थान पत्रिका ने किया शिक्षकों का सम्मान

माहेश्वरी शिक्षक राठी बंधुओं का हुआ सम्मान

बीकानेर. राजस्थान पत्रिका के शैक्षणिक अनुभाग "पत्रिका इन एज्यूकेशन" की ओर से आयोजित "तस्मैः श्री गुरवे नमः" दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत बीकानेर के स्थानीय रानी बाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित होटल पाणिग्रहण में शिक्षक सम्मान समारोह गत 18-19 सितंबर को आयोजित हुआ। उक्त जानकारी देते हुए माहेश्वरी संस्था श्रीप्रीति क्लब के सचिव नारायण दास दम्माणी ने बताया कि पत्रिका द्वारा आयोजित शिक्षक सम्मान समारोह कोविड-19 के अन्तर्गत सरकारी गाईडलाईन को ध्यान में रखते हुए दो दिन रखा गया, जिसमें लगभग 125 गुरुजनों का सम्मान किया गया। इसमें समाज के शिक्षक बंधु पवन व मनोज राठी का भी सम्मान किया गया। पवन राठी गणित विषय व वाणिज्य संकाय के तारतम्य में 27 वर्षो से विवेक बाल निकेतन सीनियर सैकेण्डरी विद्यालय में अध्यापक के पद पर कार्यरत है। उनके अनुज भ्राता मनोज राठी व्याख्याता गणित विषय के तौर पर विगत 22 वर्षों से बेसिक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में गणित विषय के साथ-साथ सभी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के विद्यार्थियों को अध्यापन का कार्य कर रहे है। उन्हें "पत्रिका" के माध्यम से अभिनन्दन पत्र, मोमेन्टो (शील्ड) व प्रमुख आकाशवाणी उद्घोषक चंचल हर्ष द्वारा संकलित पुस्तक "खिलती कलियाँ" देकर सम्मानित किया गया।

करवा को साहित्यिक सम्मान

कूच बिहार। साहित्य संगम संस्थान की ओर से अब तक का विशेष सम्मान "रश्मिरथी" कूचबिहार की कलावती करवा को साहित्य क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु दिया गया। साहित्य संगम संस्थान साहित्यिक संगठन दिल्ली की संस्था है। इस संस्था के माध्यम से करीब 120 (सांझा एकल) प्रकाशित हो चुकी हैं। यह संस्था अपने बड़े मंचीय महोत्सव दिल्ली, इंदौर, लखनऊ, चक्रधरपुर, तिनसुकिया, असम, आदि कई राज्यों में कर चुकी है।

तुलसी के पौधों का वितरण

शहर। अधिक मास आश्विन के पावन महीने में श्रीतुलसीजी की महिमा और पर्यावरण को ध्यान में रख कर राजस्थानी महिला मंडल की अध्यक्षा बीना बोहरा ने 108 तुलसी जी के पौधों की कुंडीया का वितरण किया।

मनाई गांधी-शास्त्री जयंती

दिल्ली। संस्था आनन्द गोष्ठी ने गाँधी जयंती और शास्त्री जयंती पर कोविड़ सुरक्षा अभियान के पहले चरण का समापन अम्बेडकर विचार मंच एवं तरुण मंच के कार्यकर्ताओं के साथ संरक्षक गोविन्द मालू के नेतृत्व में बुध्द नगर बस्ती में बच्चों को एनर्जी ड्रिंक और चोकोज वितरित कर और नागरिकों को काढ़ा और मास्क सेनेटाइजर वितरित कर किया गया। यह अभियान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्म दिवस के अवसर पर शुरू हुआ था जो एक माह तक चला। इसमें एनर्जी ड्रिंक के 2 लाख पैकेट शहर के हर हिस्से में बांटे गये। इस अवसर पर गोविन्द मालू ने बच्चों से आग्रह किया कि वे एस एम एस कर अपने माता-पिता और परिवार जन को एस एम एस अपनाने याने सोशल डिस्टेंसिंग (एस), मास्क (एम), सेनेटाईजेशन (एस) को अपनाने के लिए मोबाइल से आव्हान करें।

सखी संगठन ने किया गाँधी जयंती का आयोजन

अहमदाबाद। साहित्य एवं सामाजिक मनन चिंतन समिति के अंतर्गत 02 अक्टूबर को माहेश्वरी सखी संगठन अहमदाबाद ने गाँधी जयंती के उपलक्ष में एक ऑनलाईन कार्यक्रम रखा गया। इसका विषय था,- "गाँधीजी का चश्मा 1948 में खो जाता है, जो उन्हें 2019 में मिलता है, तब वो भारत को जिस नजरिये से देखते हैं। उसका विवरण अपने शब्दों में या एक्ट कर के बताइये।" इस कार्यक्रम में सखियों ने अपनी बहुत सुन्दर प्रस्तुति दी। उक्त जानकारी नीलिमा मालू व दीपा धूत ने दी।

नो मास्क नो इंट्री पोस्टर विमोचित

भीलवाड़ा। कोरोना महामारी से बचाव के लिए एक जागरूकता अभियान अंतर्गत "नो मास्क नो इंट्री" पोस्टर का विमोचन श्री महेश सेवा समिति भीलवाड़ा द्वारा किया गया। जिला माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष प्रदीप पलोड़ ने बताया कि कोरोना महामारी से बचाव व आम नागरिकों को जागरूक करने के लिए इसे भीलवाड़ा जिले की हर इकाई क्षेत्र में लगाने का प्रयास किया जायेगा। इस अभियान का शुभारम्भ एवम इस पोस्टर का विमोचन महेश शिक्षा सदन में विधिवत किया गया। इसमें श्री महेश सेवा समिति के अध्यक्ष ओम नराणीवाल का सानिध्य में रहा। मंत्री राघव कोठारी ने बताया कि इस अवसर पर अनिल बांगड़, देवेंद्र सोमानी, राजेंद्र कचोलिया, केदार जागेटीया, अतुल राठी, महावीर समदानी, जगदीश लढा, राजेंद्र मालू राकेश शारदा, हरीश पोरवाल आदि उपस्थित थे।

लघु वेबीनार का किया आयोजन

इंदौर। पश्चिमी मध्य प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन एवं प्रदेश युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान में कोरोना महामारी के हानिकारक प्रभाव से उबरने हेतु "बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि ले" विषय पर माहेश्वरी समाज के प्रख्यात चिंतक व मोटिवेशनल स्पीकर रमेश मर्दा मुंबई के लघु वेबीनार का आयोजन किया गया। इसमें श्री मर्दा ने वर्तमान कठिन समय में कैसे जीवन जीना व सुधार करने का मार्गदर्शन देते हुए नए विचार, नई उर्जा, नए दृष्टिकोण के साथ अपने भविष्य को संवारने की सुंदर राह दिखाई। इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़, राष्ट्रीय युवा संगठन के महामंत्री आशीष जाखेटिया व राष्ट्रीय आंचलिक उपाध्यक्ष मंगल मर्दा आदि भी विशेष रूप से उपस्थित थीं। स्वागत उद्बोधन व अतिथि परिचय प्रदेश अध्यक्ष वीणा सोमानी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश मंत्री व समिति संयोजिका जाखेटिया ने किया।

ऑनलाईन कुकिंग वर्कशॉप सम्पन्न

इंदौर। इंदौर जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा जूम ऐप पर दो दिवसीय ऑनलाईन कुकिंग वर्कशॉप 'मास्टर शेफ' आयोजित की गई। इसमें सुप्रसिद्ध शेफ तरुणा बिड़ला ने भारतीय मारवाड़ी त्यौहारों पर बनाई जाने वाली मिठाई बेसन चक्की, मक्खनबड़े, मालपुए, रबडी, घेवर, जलेबी, बूंदी, पुडिंग आदि की दो घण्टे में लाईव रूप से विधि सिखाई गई। संस्था सचिव नम्रता राठी, संयोजक अर्चना भूतड़ा व कविता लाहोटी ने अतिथि परिचय दिया। इस कार्यशाला में 1000 से 1100 महिलाओं व युवतियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभा वर्मा, निर्मला बाहेती, वीणा सोमानी, रमा शारदा, उर्मिला झंवर, उषा सोडानी आदि उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन व आभार प्रदर्शन नर्मदा राठी ने किया।

संस्कार शिविर का हुआ आयोजन

गीता परिवार एवं पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के संयुक्त तत्वाधान में बाल एवं किशोरी विकास समिति के अंतर्गत पाँच दिवसीय संस्कार शिविर "संस्कार पुष्पिका" 5-10 अक्टूबर तक प्रतिदिन दो सत्र में आयोजित हुआ। दो सत्र एक सुबह 8:30 से 10 बजे तक तथा शाम को 4 बजे से 5:15 तक आयोजित होते थे। दोनों सत्रों में क़रीब 200 बच्चे शामिल हुए। प्रमिला माहेश्वरी (ताई) प्रमुख प्रशिक्षिका थी जिन्होंने बहुत पारिवारिक एवं सुरम्य वातावरण में बच्चों को योगासन, श्लोक, कथा कथन आदि माध्यम से सुसंस्कारित किया। अंत में कला प्रशिक्षण दिया गया। सभी विधाओं में बच्चों की उत्साहजनक भागीदारी रही। वॉट्सऐप ग्रुप पर बच्चों ने अपनी रचनात्मकता दिखाते हुए वीडियो और फ़ोटो भी शेयर किए। दैनिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतियोगिताएं भी रखी गई

बिन्नानी को कोरोना कर्मवीर सम्मान

बीकानेर। बिन्नाणी भाईपा (बिन्नाणी पंचायती ट्रस्ट) ने अध्यक्ष सुशील कुमार बिन्नाणी एवं सचिव सुरेश बिन्नाणी के नेतृत्व में कोरोना काल में रचनाकारों का सम्मान किया। इस श्रृंखला में बीकानेर निवासी लेखक गोवर्धनदास बिन्नाणी राजा बाबू को कोरोना कर्मवीर सम्मान से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि इन्होने कोरोना पर अनेक बार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सकारात्मकता से ओतप्रोत आलेख लिखकर समाज को जागरुक करने में अपना योगदान दिया है। इसी प्रकार बीकानेर के शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लेखक डॉ. नरसिंह बिन्नाणी ने भी युवाओं के विकास व सामाजिक उत्थान के लिए रोजगार से सम्बंधित तथा अनेक प्रकार की वर्तमान गतिविधियों पर सजगता से लेख लिखकर लोगों को जागरूक होने का सराहनीय संदेश दिया।

जिला सभा की वर्चुअल बैठक संपन्न

भीलवाड़ा। अन्तिम यात्रा एवं उठावना में अतिआवश्यक होने पर ही जाना चाहिये। कोरोना की गाइड लाइन का पालन कर स्वयं और परिवार को बचाना चाहिए। हम बचेंगे तो परिवार, समाज और व्यवसाय बचेगा। उक्त उद्गार माहेश्वरी महासभा के पूर्व सभापति रामपाल सोनी ने भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा के कार्यकारी मण्डल की वर्चुअल मीटिंग को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। राष्ट्रीय युवा संगठन अध्यक्ष राजकुमार काल्या ने भी कोरोना से सावधान रहने की बात कही। इससे पूर्व जिला सभा के सत्र 2019-22 के कार्यसमिति के शेष रहे चुनाव की प्रक्रिया जिला मुख्य चुनाव अधिकारी रोशनलाल तोतला व चुनाव अधिकारी तेजकरण बहेड़िया ने पूर्ण करवाई। पर्यवेक्षक नारायणलाल जागेटिया भी उपस्थित थे। उक्त जानकारी जिला मंत्री देवेन्द्र सोमानी ने देते हुए बताया कि जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू ने इस वर्चुअल मीटिंग के समन्वयक सुमित जागेटिया सहित सभी का आभार व्यक्त किया।

मंदिर जीर्णोद्धार पश्चात नृसिंह चौदस को पुनः स्थापना

उज्जैन। छोटा सर्राफा स्थित करीब 150 वर्ष पुराने नरसिंह मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। भगवान श्री लक्ष्मी नृसिंह जी की प्रतिमा को पुरुषोत्तम मास की नरसिंह चौदस 30 सितंबर को गोधूलि बेला में अपने नवसुसज्जित गर्भगृह में पुनः प्रतिष्ठित किया गया। इसके पूर्व 28 से 30 सितंबर तक श्री लक्ष्मी नरसिंह देवस्थान ट्रस्ट द्वारा तीन दिवसीय हवन-पूजा एवं यज्ञ का आयोजन किया गया। रामानुजाचार्य महाराज श्री स्वामी कांताचार्य महाराज, रामानुज कोट पीठाधीश्वर स्वामी रंगनाथाचार्य महाराज व युवराज स्वामी श्री माधव प्रपन्नाचार्य ने कार्यक्रम संपन्न कराया। पुजारी रमेश व्यास भी उपस्थित रहे। प्रातः 9 से रात 8 बजे तक पूजन अनुष्ठान एवं यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री लक्ष्मी देवस्थान ट्रस्ट सचिव मंगलप्रसाद भट्टर ने बताया कि इसमें लगभग 6500 स्क्वायर फीट पर 3 मंजिला भवन बनाया जाएगा। इसमें प्रथम तल पर गर्भगृह के साथ 300 व्यक्तियों के बैठने का स्थान तथा 12 दुकाने निर्मित की जाएंगी। दूसरी मंजिल पर प्रवचन हाल, भोजनशाला एवं 800 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था होगी। इसी के साथ तीसरी मंजिल पर 24 कमरे का निर्माण संत एवं आमजन के लिए होगा। कार्यक्रम में निर्माण समिति अध्यक्ष महेश लेखा लड्ढा, ट्रस्ट अध्यक्ष कैलाश सोनल माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष नवनीत राधा काबरा, ट्रस्टी रूपनारायण किरण झंवर, गिरीश उषा भट्टर आदि ने भाग लिया। राधेश्याम चौखड़ा, ओमप्रकाश काबरा, राजकुमार झंवर, महेश चांडक, सुरेश काकानी, मनमोहन मंत्री, संजय बजाज, सत्यनारायण मूंदड़ा, नारायण जाजू, लक्ष्मी निवास झंवर, गोपाल कोठारी, शरद चिचानी, रेखा लड्ढा, पुष्पा कोठारी, तारा कोठारी आदि का विशेष सहयोग रहा।

जाजू काव्य स्पर्धा में द्वितीय

वर्धा। रोटरी क्लब गांधी सिटी, वर्धा के जनसंपर्क अधिकारी तथा माहेश्वरी मंडल के समन्वयक राजकुमार जाजू ने हाल ही में रेडिओ एम.गिरी की ड्राइंग एवं कविता लेखन स्पर्धा में भाग लिया था जिसमें कविता लेखन का विषय था "कोरोना और जीवन"। श्री जाजू ने इसमें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

हनुमान चालीसा एवं परिवार प्रबंधन पर ऑनलाईन व्याख्यान

बैंगलुरू। स्थानीय माहेश्वरी सभा के संयोजन में अधिकमास में पंडित विजयशंकर मेहता उज्जैन के हनुमान चालीसा एवं परिवार प्रबंधन पर व्याख्यान व सत्संग का आयोजन माहेश्वरी सभा एवं माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा ऑनलाईन जूम ऐप पर किया गया। माहेश्वरी सभा अध्यक्ष निर्मलकुमार तापड़िया ने उपस्थित सभी श्रद्धालुओं का शाब्दिक स्वागत किया गया। माहेश्वरी महिला मंडल कार्यसमिति सदस्य कल्पना बाहेती ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल सहसचिव सुनीता लाहोटी ने किया।

With Best Compliments From

Sacchindanand L. Malani

Kelkar Wadi
Murtizapur - 444107
Phone : 07256-243513
Mobile : 9422162213 / 8600047213
email : office.slmalani@gmail.com

SPECIALITY IN ASPHALTING OF ROADS & EARTHEN DAMS

अधिकमास में गरीब परिवारों को गो दान

उदयपुर। अधिकमास में गो दान करना किसी पुण्य से कम नहीं होता। गो दान मंदिर या गोशाला में नहीं करके ऐसे गरीब परिवारों के लिए किया जो कोरोना के कारण दयनीय स्थिति में आ गये। इस सोच के साथ निर्धन परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए "जिला माहेश्वरी महिला संगठन", माहेश्वरी महिला गौरव "महेश महिला परिषद" के सदस्य इस पुण्य कार्य में भागीदार बने। आशा नरानीवाल ने बताया कि अखिल भारतीय महिला संगठन की पूर्व कोषाध्यक्ष कौशल्या गट्टानी ने इस पुण्य कार्य को करने की प्रेरणा प्रदान की। 5 गायें दान करने का लक्ष्य बनाया गया था, जो 11 गायों तक पहुंच गया। जिला अध्यक्ष मंजू गांधी ने बताया कि गायों के 6 महीने के खान-पान की व्यवस्था के साथ ही सभी सदस्याओं ने विधिवत पूजा अर्चना की। प्रदेश संगठन मंत्री सरिता न्याती ने बताया कि पूरे दक्षिणी राजस्थान प्रदेश में अब तक 21 गायों का दान हो चुका। इस कार्यक्रम में जूम के माध्यम से राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़, प्रदेश अध्यक्ष कुंतल तोषनीवाल, ममता मोदानी, शिखा भदादा आदि ने इस पुण्य कार्य में ऑनलाइन अपनी भूमिका निभाई। सचिव सीमा लाहोटी ने आभार व्यक्त किया। रेखा असावा, राजकुमारी कोठारी, सरोज सोडानी, सुमन सोनी, मधु मूंदड़ा, नीमा देवपूरा व सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

कृष्णलीला पर क्विज का आयोजन

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत स्वाध्याय व आध्यात्मिक समिति द्वारा वर्ड स्क्रैंबल क्विज का आयोजन 7,14, 20 व 28 जून को सुबह 11:00 बजे से ऑनलाइन कराया गया। इसके टॉपिक क्रमशः कृष्ण के नाम, कृष्ण लीलाओं के पात्रों के नाम, कृष्ण लीला के स्थान व कृष्ण बलराम द्वारा किया गया वध थे। इसमें प्रथम विजेता पार्थ चितलांगिया राजनांदगांव, द्वितीय प्रसन्न चितलांगिया राजनांदगांव व तृतीय विजेता सौम्या मल रायपुर रहीं। मानव जीवन में गुरु के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गुरु महिमा का वीडियो बनाकर भेजने की प्रतियोगिता का जुलाई माह में गुरु पूर्णिमा पर आयोजन किया गया। जिसमें 120 प्रतिभागियों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

विद्यालय में सहयोग अपेक्षित

तिरुनिन्नवुर। सन् 1991 में, विवेकानंद एजुकेशनल ट्रस्ट ने नाच्चियारचत्रम, तिरुनिन्नवुर में श्रीमती कृष्णा मूलचंद माहेश्वरी विवेकानंद विद्यालय की स्थापना की थी। यह कार्य प्रमुख दानकर्ता स्वर्गीय श्री मूलचंद माहेश्वरी के उदार सहयोग से संभव हुआ था। शुरुआत में प्रथम से दूसरी कक्षा में कुल 77 छात्र थे, आज दसवीं कक्षा तक विद्यार्थियों को संख्या बढ़कर लगभग 1100 बच्चों की हो गई है। इस अंतराल में कई दयालु व्यक्तियों और संगठनों के उदार योगदान ने स्कूल के विकास में मदद की है। स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश छात्र निम्न एवं मध्यम आय, कृषि परिवारों से है। अपनी स्कूली शिक्षा को पूरा करने के लिए अन्य संस्थानों में प्रवेश करते समय उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः कई पालक विद्यालय को 12वीं तक संचालित करने का अनुरोध भी कर रहे हैं। विद्यालय प्रबंधन ने विद्यालय को आर्थिक सहयोग प्रदान करने की अपील की जिससे इसका विकास हो सके।

पारायण का आयोजन

रायपुर। पुरुषोत्तम मास के प्रारंभ में महेश महिला संगठन द्वारा 17 से 27 सितंबर तक रामायण के नौ परायण का पाठ किया गया। प्रतिदिन समिति द्वारा गीता जी के श्लोकों का स्वाध्याय भी किया गया। दुर्ग जिले के अंतर्गत भिलाई, बेमेतरा, गुंडरदेही में बहुत अधिक संख्या में पाठ किया गया। 21 सितंबर से अखंड रामायण का पाठ किया गया। 26 सितंबर से1008 हनुमान चालीसा का पाठ घरों में रहकर संपन्न किया गया। राजनांदगांव में 9 दिन का अनुष्ठान किया गया, जिसमें 24000 गायत्री मंत्र का जाप किया गया।

जरूरतमंदों को दो सिलाई मशीनें भेंट

हैदराबाद। माहेश्वरी समाज (महिला विभाग) हैदराबाद सिकन्दराबाद द्वारा कबूतरखाना स्थित माहेश्वरी भवन में आयोजित कार्यक्रम में जरूरतमंद महिलाओं को चार सिलाई मशीनें भेंट की गई। महिला विभाग अध्यक्ष शकुन्तला नावन्दर एवं मंत्री संतोष भंडारी ने बताया कि महिला विभाग द्वारा प्रति माह जरूरतमंद महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से सिलाई मशीनों का वितरण किया जाता है। इसमें विगत पांच वर्षों में लगभग 200 महिलाओं को लाभ मिला। लाहोटी परिवार द्वारा सौरभ लाहौटी की स्मृति में दो मशीनें एवं गुप्तदान इस प्रकार चार मशीनें भेंट की गई। कार्यक्रम में मंजू लाहोटी, पूष्पा बूब, सुशीला करवा, शोभा अट्टल, मंजू अट्टल, अनुराधा नावन्दर, रेणुका जाजू, किशनप्यारी जाजू, गीता मालपानी, सरला जाजू, किरण करवा आदि सदस्याऐं उपस्थित थीं।

उत्तम से सर्वोत्तम वही हुआ है;
जिसने बड़ा दिल रखकर
आलोचनाओं को सुना और सहा है।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की विभिन्न समितियों का राष्ट्रीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

इन्दौर। अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की विभिन्न समितियों के राष्ट्रीय कार्यक्रम गत दिनों सम्पन्न हुए। इसमें समाजहित में कई आयोजन हुए। ग्राम विकास ऐवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के राष्ट्रीय कार्यक्रम का शुभारंभ महामंत्री मंजू बांगड ने किया। अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने ग्राम विकास ऐवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति में हुए कार्यो की सराहना करते हुए 5 जी गाय ,गंगा ग्रामीण, गीता और गोविन्द के महत्व को अति सुन्दर ढंग से समझाया। समिति प्रभारी प्रेमा झंवर ने सबका शाब्दिक स्वागत किया। मुख्य अतिथि गीता मूंधडा थीं।

स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा 10 सितम्बर को राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। संजीवनी संस्था के साथ गठबंधन से इसका आयोजन सबसे बड़ी उपलब्धि थी। समिति प्रभारी शिखा भदादा ने त्रिवर्षीय गठबंधन की कार्ययोजना व उससे होने वाले समाज जनों को लाभ के बारे में जानकारी दी। डॉ. संगीता काबरा ने 'कैंसर को हराना है हारना नहीं' पर वक्तव्य दिया। समिति प्रभारी प्रमुख कलावती जाजू ने 'पुत्र को सुपुत्र' और 'पुत्री को सुपुत्री' कैसे बनाए? इससे अवगत कराया। पारिवारिक समरसता के अनुकूल 'साथ रहने को घणों सुख' राजस्थानी नाटिका मध्यांचल सहप्रभारी डॉ सीमा मूंदड़ा ने मीठी मारवाड़ी बोली में प्रस्तुत की।

आध्यात्मिक एवं स्वाध्याय समिति द्वारा 16 सितंबर को राष्ट्रीय कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने किया। स्वागत अभिनंदन राष्ट्रीय समिति प्रभारी अरुणा लड्ढा एवं प्रमुख उषा करवा ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में आशा माहेश्वरी ने अपना उद्बोधन दिया।

'महिला अधिकार उत्थान सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन 11 सितंबर को राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी एवं महामंत्री मंजू बांगड़ की उपस्थिति में जूम सभागार में 425 सदस्यों की उपस्थिति किया गया। समिति प्रभारी उषा मोहंता ने स्वागत उद्बोधन दिया एवं राष्ट्रीय रिपोर्ट पढ़ी। कार्यक्रम 2 सितंबर से 16 सितंबर तक जूम ऐप पर संपन्न कार्यसमिति मीटिंग में 15 सितंबर को पर्व एवं सांस्कृतिक समिति द्वारा टैलेंट उत्सव-2 राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष शोभा सादानी थी। इसमें सभी अंचल से अपने-अपने प्रदेशों द्वारा दिए गए टॉपिक्स पर कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण वीडियो के माध्यम से मंगवाया गया। इस तरह कुल 27 प्रदेशों द्वारा प्रस्तुति आई और कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सभी प्रदेश संयोजिकाओ ने कार्यक्रम के लिए एक कड़ी के रूप में कार्य किया। समिति प्रभारी प्रमुख मंजू कोठारी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। विवाह संबंध सहयोग समिति ''गठबंधन'' ने ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता के लिए 'चलें गांव की ओर' कार्यक्रम का आयोजन 4 अक्टूबर को किया गया। स्वागत गीत राष्ट्रीय प्रभारी शर्मिला राठी ने प्रस्तुत किया। प्रभारी प्रमुख शशि नेवर, ग्रामीण क्षेत्र सह प्रभारी निर्मला बाहेती आदि थीं। शहरों से जो युवतियां 2006 के बाद गांव में शादी होकर गई हैं, उनके बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किये हुए अनुभव के 111 वीडियो 17 प्रदेशों द्वारा भेजे गए, जिसमें से 65 वीडियो चलाये गए।

ज्वेलरी प्रोडक्ट की डिस्ट्रीब्यूटरशीप शहर स्तर पर देना है

इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें

महाकाली सिल्वर एण्ड गोल्ड प्रा.लि.

कोल्हापुर (महा.)

संपर्क- **निलेश डांगरा, मो.98223-70069**

सी-5, सिल्वर झोन, कागल हातकंगले फाईव स्टार, MIDC कोल्हापुर (महा.)

E-mail-orders.mahakalijewellers@gmail.com

पर्वों के आयोजन-पूजन के वीडियो का विमोचन

भीलवाड़ा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत दक्षिण राजस्थान प्रदेश के प्रयासों से राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ द्वारा दीपावली पूजन, नवरात्र हवन, करवा चौथ तथा भगवत गीता के वीडियो का विमोचन किया गया। दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा स्वाध्याय एवं आध्यात्म समिति तथा पर्व एवं संस्कृति समिति के माध्यम से वीडियो विमोचन कार्यक्रम 20 अक्टूबर को संपन्न हुआ।

प्रदेश अध्यक्ष कुंतल तोषनीवाल ने बताया कि श्रीमद्भागवत गीता यथा रूप शब्दार्थ व भावार्थ को सरल शब्दों में वीडियो बनाकर यूट्यूब पर अपलोड किया गया। इससे बड़ी उम्र वाले जिनकी नजरें कमजोर हो चली और युवा पीढ़ी जो क्लिष्ट शब्दों के कारण भगवत गीता नहीं पढ़ पाती, उनके लिए यह सुलभ होगा। नवरात्रि हवन का वीडियो बनाकर भी अपलोड किया गया। लोकार्पण राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ द्वारा किया गया। दीपावली पूजन की संपूर्ण विधि का प्रसारण पूजन सामग्री के साथ विधिवत रूप से वीडियो के माध्यम से किया गया। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री मधु बाहेती ने रा0अध्यक्ष आशा माहेश्वरी का शुभकामना सन्देश प्रेषित करते हुए बताया कि कोरोना महामारी के चलते यह घर-घर में पूजा के लिए उपयोगी होगा। देश विदेश में बैठे बच्चे व बडे आसानी से बिना पंडित के पूजा कर पाएंगे ।प्रदेश सचिव अनिला अजमेरा ने बताया कि करवा चौथ पूजा की कहानियां एक वीडियो में संग्रहीत की गई। इसी तरह 12 महीनों के व्रत त्यौहार की कहानियां वीडियो बनाकर प्रसारित की जाएंगी। इसमें बोल भीलवाड़ा नगर मंत्री रीना डाड के हैं । वीडियो एडिटिंग सुधा चांडक द्वारा की गई है। आभार सीमा कोगटा भीलवाड़ा जिला अध्यक्ष व मंत्री प्रीति लोहिया द्वारा व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में पश्चिमांचल उपाध्यक्षा ममता मोदानी, संयुक्त मंत्री सविता पटवारी, पर्व एवं संस्कृति प्रमुख मंजू कोठारी, प्रभारी पुष्पा सोमानी, साहित्य एवं अध्यात्म समिति प्रमुख उषा करवा, समिति प्रभारी अरुणा लड्डा आदि मौजूद थीं। नगर अध्यक्ष भीलवाड़ा भारती बाहेती ने बताया कि दक्षिणी राजस्थान प्रदेश भीलवाड़ा, जिला व नगर की सदस्याऐं भी उपस्थित थीं।

वेबीनार को काबरा ने किया सम्बोधित

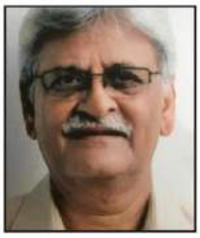

पूर्वी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा द्वारा प्रदेशाध्यक्ष श्रीराम माहेश्वरी के नेतृत्व में वेबीनार का आयोजन गत 11 अक्टूबर को किया गया। मुख्य अतिथि आंध्र प्रदेश के पूर्व डीजीपी उमेश काबरा थे। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री काबरा ने कहा कि बदलते परिवेश में हो रहे परिवर्तन को पहचानने के लिए समाज को जागरूक रहते हुए उन्हें अंगीकार करते चलना चाहिए। परिवर्तन के संदर्भ में उन्होंने प्रमुख लेखक सोबती के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि परिवर्तन जब भी होते हैं अचानक नहीं होते हैं, वह इतनी खामोशी से भी नहीं होते कि आपको पता ही न चले। अपनी जागरूकता में हमें शिक्षा को प्राथमिकता देना चाहिए। शिक्षा में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन को समाहित कर लेना अत्यंत आवश्यक है वरना हम पिछड़ जाएंगे। व्यापार करने के तौर-तरीके में आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है। 30- 40 साल पहले की व्यापारिक शैली में आज काफी बदलाव आया है। नई-नई टेक्नोलॉजी एवं मार्केट ट्रेंड के साथ व्यापार जगत में आश्चर्यजनक बदलाव आ रहा है। इनके प्रति जागरूक रहकर और उन्हे एडाप्ट करने पर ही व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में हमारा समाज खड़ा रह पाएगा।

बुरा वक्त एक ऐसी तिजोरी है,
जहां से सफलता के हथियार मिलते हैं?

स्मार्ट मोबाईल क्लास का आयोजन

नागदा। माहेश्वरी महिला मण्डल, द्वारा 6 दिवसीय ऑन लाइन स्मार्ट मोबाइल क्लास का आयोजन किया गया। मण्डल सचिव सीमा लड्डा ने बताया कि अध्यक्ष प्रीति मालपानी के नेतृत्व में मोबाइल गुरु संतोष सोडानी उज्जैन, राजकुमारी माहेश्वरी उज्जैन, इंदू सोमानी देवास और स्मिता बियानी खरगोन द्वारा माहेश्वरी समाज उज्जैन जिला की 250 महिलाओ को मोबाइल के सभी फीचर्स से अवगत कर, निःशुल्क ऑनलाइन प्रशिक्षित किया गया। विशेष अतिथि के रूप मे उपस्थित जिला अध्यक्ष राधा असावा एवम् पूर्व जिलाध्यक्ष अनिता राठी ने माहेश्वरी महिला मण्डल नागदा के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में उर्मिला डांगरा, हेमा मोहता, सुनीता मालपानी, रेखा राठी, बबली मोहता, कुसुम काबरा, शोभा बिसानी, चंद्रिका मोहता,सीमा मालपानी एवम् उषा राठी का विशेष सहयोग रहा।

कन्या भोज का हुआ आयोजन

चेन्नई। नवरात्र के पावन अवसर पर डोरी सखी चेन्नई की तरफ से पिछले 4 वर्षों की तरह इस बार भी अनाथ कन्याओं के लिए भोजन तथा श्रृंगार सामग्री के वितरण का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत चेटपेट स्थित सर्वोदय कन्या आश्रम में डोरी सखी की सदस्याओं ने सभी कन्याओं को अपने हाथों से बहुत तरह के पकवान बनाकर भोजन परोसे और उन्हें श्रृंगार, मास्क तथा व्यक्तिगत तौर पर काम आने वाली वस्तुओं का गिफ्ट दिया। कार्यक्रम संयोजिका शोभना सिकची, ग्रीष्मा राठी और हर्षदा सिकची थी। इस अवसर पर डोरी सखियों बीना झंवर, माधुरी राठी, आरती चांडक, नीलम सारडा, रश्मि धीरन, रेखा राठी, पायल गोयदानी, ज्योति सिकची, निर्मला, सुशीला राठी, निशा, मंजू आदि ने उपस्थित होकर सहयोग किया।

गोबर से बनेगी लकड़ी

अहमदाबाद। गोबर से समिधा बनाने की मशीन लगाकर सृष्टि का सम्मान किया जा सकता है। इस सोच के साथ ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति' के तत्वाधान में अहमदाबाद के चारों संगठन श्रीमाहेश्वरी प्रगति मंडल (महिला विभाग) शाहीबाग अहमदाबाद, माहेश्वरी संगिनी संगठन अहमदाबाद, माहेश्वरी सखी संगठन अहमदाबाद तथा जैसलमेर माहेश्वरी महिला मंडल अहमदाबाद ने संगठित होकर गोबर से लकड़ी बनाने की मशीन अद्वैत आश्रम में गत 22अक्टूबर को स्थापित की। इसमें अध्यक्ष नीलिमा मालू व सचिव दीपा धूत के नेतृत्व में सभी सदस्याओं ने योगदान दिया।

कभी हार ना मानने की आदत ही एक दिन जीत दिलाती है ?
'विजेता बनें'

कोरोना की रोकथाम के लिए वेबीनार आयोजित

कोलकाता। वैश्विक महामारी कोरोना की रोकथाम के लिए माहेश्वरी समाज के ख्यात वैज्ञानिक रमेश तोषनीवाल द्वारा बनाई गई प्रभावी औषधि के उपयोग की विधि के लिए एक वेबीनार का आयोजन प्रदेश सभा द्वारा गत 25 अक्टूबर को सायंकाल 5 बजे किया गया। सभाध्यक्ष विनोद जाजू के स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कार्यक्रम संयोजक चन्द्रशेखर सारडा ने वेबीनार के प्रमुख वक्ता रमेश तोषनीवाल का परिचय दिया। औषधि के उपयोग की विधि का एक 6 मिनट का वीडियो भी श्री तोषनीवाल ने वेबिनार में उपस्थित सदस्यों के साथ शेयर किया। वेबीनार की प्रारंभिक भूमिका मंत्री नन्द कुमार लड्ढा ने रखी। धन्यवाद ज्ञापन प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश झंवर ने किया। वेबीनार को सफल बनाने में सम्पत मानधन्या, गणेश बागड़ी एवं राजेश नागोरी का विशेष सहयोग रहा।

श्रीमती माहेश्वरी बनी अध्यक्ष

शाजापुर (म.प्र.)। राजराजेश्वरी महिला नागरिक सहकारी बैंक मर्या. शाजापुर के चुनाव गत 24 अक्टूबर को संपन्न हुए। इसमें श्रीमती रूचिका-दीपक माहेश्वरी (मानधना) को सर्वसम्मति से बैंक का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।

नवरात्रि में हुई ऑनलाईन प्रतियोगिताऐं

देवास। कोरोना महामारी की इस विपरीत परिस्थिति में भी वैश्य महासम्मेलन देवास द्वारा प्रदेश मंत्री अशोक सोमानी के मार्गदर्शन एवं जिला अध्यक्ष गौरव खंडेलवाल व महिला इकाई की जिलाध्यक्ष मंजू बाला जैन के नेतृत्व में नवरात्रि के पावन पर्व पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिता के समापन समारोह में वैश्य महासम्मेलन की महिला इकाई की प्रदेश अध्यक्ष डॉ मीना गुप्ता एवं प्रसिद्ध टेलीविजन कलाकार विनीता मलिक विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित थीं।

जिलाधीश डाड से भेंट

रतलाम। जिला माहेश्वरी समाज रतलाम के पदाधिकारियों द्वारा जिलाधीश गोपाल डाड से सौजन्य भेंट की गई। जिला समाज के अध्यक्ष सुनील डांगरा (माहेश्वरी), उपाध्यक्ष ओम प्रकाश झंवर, मांगीलाल अजमेरा, महासभा प्रतिनिधि प्रेम प्रकाश मालपानी, जिला सचिव कमल नयन राठी, जिला संगठन मंत्री प्रकाश राठी, सदस्य संतोष काबरा, पश्चिमांचल प्रतिनिधि नरेंद्र गिलडा आदि समाजजन उपस्थित थे।

गौ काष्ट मशीन स्थापित

चित्तौड़गढ़। पुरुषोत्तम मास के पवित्र अवसर पर अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के आह्वान पर आध्यात्मिक एवं स्वाध्याय समिति तथा ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत सभी अंचलों में प्रदेशों द्वारा गौ संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गये। दक्षिण राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की प्रदेश अध्यक्ष कुन्तल तोषनीवाल ने बताया कि इस मुहिम के अंतर्गत गाय के गोबर से लकड़ी बनाने की कुल९ गोकाष्ट मशीनें लगाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत चित्तौड़गढ़ के बदरखा ग्राम से राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ द्वारा हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने प्रोजेक्ट की प्रशंसा की। जिलाध्यक्ष कृष्णा समदानी के अनुसार ग्राम सरपंच व अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। प्रदेश सचिव अनिला अजमेरा ने बताया इन मशीनों को लगाने का मुख्य प्रयोजन यह है कि इसके द्वारा बनाई गई लकड़ी को बेचकर गौशालाओं की आमदनी होगी और बूढ़ी बीमार गायों का रखरखाव और संरक्षण होगा। भीलवाड़ा जिला ध्यक्ष सीमा कोगटा के अनुसार लावारिस लाशों के अंतिम संस्कार के लिए भी यह लकड़ी उपयोग में आएगी।

कैंसर जागरूकता अभियान

पुणे। अखिलभारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा ब्रेस्ट (स्तन) कॅन्सर जागरूकता अभियान का आयोजन हुआ। इससमें प्रवक्ता डॉ. अंजलि डावले नांदेड द्वारा सरल तरीके से समझाते हुए विस्तृत जानकारी दी गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी का शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ तथा आशीर्वाददाता कलावती जाजू, शिखा भदादा, शैला कलंत्री, पुष्पा तोष्णीवाल, प्रदेश अध्यक्ष अनुसूया मालू तथा सचिव सुनीता पलोड अतिथि के रूप में उपस्थित थीं।

स्व. श्यामसुन्दर मालपाणी

ब्रिजमोहन श्यामसुन्दर मालपाणी
मो. 7775028333
लक्ष्मीनारायण श्यामसुन्दर मालपाणी
मो. 9325621051
अमेय ब्रिजमोहन मालपानी

यशोदा एग्रो इंडस्ट्रीज

होटल किंग तुवर दाल एवं त्रिमूर्ति तुवर दाल के निर्माता

किन्ही रोड बायपास कारंजा लाड, जिला वाशीम मो. 9423128333,

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

दीप पर्व पर कैसे करें शास्त्रोक्त विधि से पूजन

दीपावली पर्व वास्तव में पर्वों का महापर्व है, जिसमें धनतेरस से लेकर दीपावली तक के पर्व प्रमुखता से शामिल हैं। इन पर्वों का अपना विशेष महत्व है, लेकिन इसका पूर्ण लाभ तभी प्राप्त होना सम्भव है, जब सम्बंधित पर्व की समस्त पूजा विधि शास्त्रोक्त विधि-विधान से सम्पन्न हो। तो आईये हम जानें कैसे करें विधि विधान से दीपोत्सव की समस्त पूजन। इस बाद दीपावली चतुर्दशी के संयोग के साथ विशेष संयोग बना रही है ।

प्रथम पर्व धनतेरस

सर्वप्रथम नहाकर साफ वस्त्र धारण करें। भगवान धन्वन्तरि की मूर्ति या चित्र साफ स्थान पर स्थापित करें तथा पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएं। उसके बाद भगवान धनवन्तरि कर आह्वान निम्न मंत्र से करें-

सत्यं च येन निरत रोग विधूतं
अन्वेषित च सविधिं आरोग्यमस्य ।
गूढ़ निगूढ़ औषध्यरूपम्,धन्वन्तरि च सततं प्रणमामि नित्यं।

इसके पश्चात् पूजन स्थल पर आसन देने की भावना से चावल चढ़ाएं। इसके बाद आचमन के लिए जल छोड़ें। भगवान धन्वन्तरि के चित्र पर गंध, अबीर, गुलाल, पुष्प आदि चढ़ाए। चांदी के पात्र में खीर का नैवैद्य लगाएं। (अगर चांदी का पात्र उपलब्ध न हो तो अन्य पात्र में भी नैवैद्य लगा सकते हैं।) तत्पश्चात् पुनः आचमन के लिए जल छोड़े। मुख शुद्धि के लिए पान, लौंग, सुपारी चढ़ाएं। भगवान धन्वन्तरि को अर्पित रोगनाश की कामना के लिए इस मंत्र का जाप करें।

"ऊँ रं रूद्र रोगनाशाय धन्वन्तर्य फट्।।"

इसी दिन इसके बाद भगवान धनवन्तरि को श्रीफल व दक्षिणा चढ़ाए। पूजन के अंत में कर्पूर आरती करें।

घर के मुख्य द्वार पर यमराज के निमित्त दीपदान करना चाहिए। रात्रि को एक दीपक में तेल, एक कौड़ी, काजल, रौली, चाँवल, गुड़, फल, फूल व मीठे सहित दीपक जलाकर यमराज का पूजन करना चाहिए।

द्वितीय पर्व - नरक चतुर्दशी

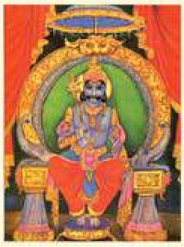

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी कहते हैं। इस दिन यमराज की पूजा व व्रत का विधान है। इस दिन शरीर पर तिल के तेल से मालिश करके सूर्योदय के पूर्व स्नान के दौरान अपामार्ग (एक प्रकार का पौधा) को शरीर पर स्पर्श करना चाहिए। अपामार्ग को निम्न मंत्र पढ़कर

मस्तक पर घुमाना चाहिए-

सितालोष्ठसमायुक्त सकण्टकदलान्वितम।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः ।।

स्नान करने के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर तिलक लगाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके यम से परिवार के सुख की कामना करें। इसके साथ ही प्रदोषकाल में चार बत्तियों वाला दीपक जलाकर दक्षिण दिशा में रखें और उसका निम्न मंत्र से पूजन करें-

"दीपश्चतुर्दश्यां नरक प्रीतये मया।
चतुर्वर्ति समायुक्त र्वपानतये (लिंग पुराण)

अर्थात्- आज चतुर्दशी के दिन नरक के अभिमानी देवता की प्रसन्नता तथा सर्व पापों के नाशों के लिये मैं 4 बत्तियों वाला चौमुखा दीप अर्पित करता/करती हूं।

इस बार विशेष- इस बार चर्तुदशी और दीपावली दोनों एक ही दिन हैं। इस तिथि को सूर्योदय सूर्योदय के पूर्व ही प्रातःकाल स्नान करने का बड़ा माहात्म्य माना गया है। श्री ब्रह्मा पुराण के अनुसार जो मनुष्य प्रातःकाल स्नान करता है, वह प्रायः निरोगी रहता है, जीवन भर सुखी और संतुष्ट रहता है। इस पर्व पर स्नान करने के पूर्व शरीर पर तिल के तेल की मालिश करने का अधिक माहात्म्य बताया गया है। इस चतुर्दशी के दिन यदि दीवाली भी शामिल हो जाए तो तेल में लक्ष्मी और जल में गंगाजी निवास करती है, ऐसा विश्वास किया जाता है। चतुर्दशी को महारात्रि माना जाता है, इसलिए इसमें शक्ति के उपासकों को शक्ति की पूजा करनी चाहिए। इस रात्रि में मंत्र भी सिद्ध किए जा सकते हैं।

तृतीय पर्व दीपावली महापर्व

देहली विनायक, दवात व कलम का भी दीपावली पर महालक्ष्मी के साथ पूजन किया जाता है। इसके लिये निम्न विधि अपनाऐं -

देहली विनायक पूजन- व्यापारिक प्रतिष्ठादि में दीवारों पर "ॐ श्रीगणेशाय नमः" स्वस्तिक चिन्ह, शुभ-लाभ आदि मांगलिक एवं कल्याण शब्द सिन्दूर से लिखे जाते हैं। इन्हीं शब्दों पर ॐ देहलीविनायकाय नमः इस नाममंत्र द्वारा गंध -पुष्पादि से पूजन करें।

श्रीमहाकाली (दवात) पूजन-स्याहीयुक्त दवात को भगवती महालक्ष्मी के सामने पुष्प तथा चावल के ऊपर रखकर उस पर सिंदूर से स्वस्तिक बना दें तथा मौली लपेट दें।

"ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः" मंत्र से गंध-पुष्पादि पंचोपचारों से या षोडशोपचारों से दवात तथा भगवती महकाली का पूजन करें और अंत में इस प्रकार प्रार्थनापूर्वक उन्हें प्रणाम करें-

कालिके त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तस।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये ।।
या कालिका रोगहरा सुवन्द्या
भक्तैः समस्तैव्यवहारदक्षैः।
जनर्जानानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यादास्तु।।

लेखनी पूजन-लेखनी (कलम) पर मौली बांधकर सामने रख लें और-

लेखनी निर्मित पूर्व ब्रम्हाणा परमेष्ठिना।
लोकांना च हितर्थय तस्मात्तां पूज्याम्यहम्।।
ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः

इस नाममंत्र द्वारा गंध, पुष्प, चावल आदि से पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें-

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्युयाद्यातः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव।।

बहीखाता पूजन -बही, बसना तथा थैली में रोली या केसरयुक्त चंदन से स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं एवं थैली में पांच हल्दी की गांठ, धनिया, कलमगट्टा, अक्षत, दुर्वा और द्रव्य रखकर सरस्वती का पूजन करें। सर्वप्रथम सरस्वती का ध्यान इस प्रकार करें-

"या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युशंकरप्रभृतिभिदेवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।
ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः"

इस नाममंत्र से गंधाकद उपचारों द्वारा पूजन करें-

कुबेर पूजन -तिजोरी अथवा रूपए रखे जाने वाले संदूक आदि को

स्वस्तिकादि से अलंकृत कर उसमें निधिपति कुबेर का आव्हान करें-

"आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरू।
कोशं वद्राय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ।।"

आह्वान के बाद ॐ कुबेराय नमः नाममंत्र से गंध,पुष्प आदि से पूजन कर अंत में इस प्रकार प्रार्थना करें -

धनदाय नमस्तुभ्य निधिपद्माधिपाय च।
भगवान् त्वप्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः।।

इस प्रकार प्रार्थनाकर पूर्व पूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य,दूर्वादि से युक्त थैली तिजोरी में रखें।

तुला (तराजू) पूजन-सिंदूर से तराजू पर स्वस्तिक बना लें। मौली लपेटकर तुला देवता का इस प्रकार ध्यान करें-

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।

ध्यान के बाद "ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः"
इस मंत्र से गधाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन करें।

दीपमालिका (दीपक) पूजन- किसी पात्र में ग्यारह, इक्कीस या

उससे अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रखकर उस दीपज्योति का "ॐ दीपावल्यै नमः" इस नाममंत्र से गंधादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करें-

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चनद्रो विद्यदर्निश्च तारकाः।
सर्वेषा ज्योतिषां ज्योतिर्दीपाल्यै नमो नमः।।

दीपमालाओं का पूजन कर संतरा, ईख, धान, इत्यादि पदार्थ चढ़ाए। धान का लावा (खील), गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को भी अर्पित करें। अंत में अन्य सभी दीपकों को प्रज्वलित करें।

महालक्ष्मी पूजन

कार्तिक कृष्ण अमावस्या (दीपावली) को भगवती श्री महालक्ष्मी एवं भगवान गणेश की नूतन (नई) प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। पूजन के लिये किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन

पर गणेश जी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी की मूर्ति को स्थापित करें। पूजन के दिन घर को स्वच्छ कर पूजा स्थान को भी पवित्र कर लें एवं स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा भक्ति पूर्वक सायंकाल महालक्ष्मी व भगवान श्रीगणेश का पूजन करें। श्री महालक्ष्मी जी की मूर्ति के पास ही पवित्र पात्र में केसर युक्त चंदन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य लक्ष्मी (रूपयों) को भी स्थापित करें तथा एक साथ ही दोनों की पूजा करें। सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री धारण, मार्जन, प्राणायाम कर अपने ऊपर तथा पूजा-सामग्री पर निम्न मंत्र पढ़कर जल छिड़के-

ऊँ अपवित्रः पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः ।।''

उसके बाद जल अक्षत लेकर पूजन का निम्न मंत्र से संकल्प करें-
ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे पुण्याममावस्यायां तिथौवार का उच्चारण वासरे... (वार का नाम) गोत्रोत्पन्नः (गोत्र का उच्चारण करें)/गुप्तोहंश्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तिकामनया ज्ञाताज्ञातकायिकवाचिकमानसिक सकलपापानिवृत्तिपूर्वकं स्थिरलक्ष्मीप्राप्तये श्री महालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये। तदङ्त्वेन गौश्रीगणपत्यादिपूजनं च करिष्ये।

ऐसा कहकर संकल्प का जल छोड़ दे।

प्रतिष्ठा- पूजन से पूर्व नूतन प्रतिमा की निम्न रीति से प्राण प्रतिष्ठा करें। बाएं हाथ मे चावल लेकर निम्नलिखित मंत्रों को पढ़ते हुए दाहिने हाथ से उन चावलों को प्रतिमा पर छोड़ते जाए-

ऊँ मना जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पितिर्यज्ञमिमं
तनात्वरिष्टं समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामोम्पतिष्ठ।
ऊँ अस्ये प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्ये देवत्वपमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

पूजन - सर्वप्रथम भगवान गणेश का पूजन करें इसके बाद कलश तथा षोडशमातृ का (सोलह देवियों का) पूजन करें। तत्पश्चात प्रधान पूजा में मंत्रों द्वारा भगवती महालक्ष्मी का षोडशोपचार पूजन करें-

'ऊँ महालक्ष्म्यै नमः' इस नाम मंत्र से भी उपचारों द्वारा पूजा की जा सकती है।

प्रार्थना- विधिपूर्वक श्री महालक्ष्मी का पूजन करने के बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

सुरासरेंद्रादिकिरीटमौक्तिकै-
युक्तं सदा यक्तव पादवपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगल
नमामि भक्तयाखिलकामसिद्धये ।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोस्तु ते।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा में भूयात् त्वदर्चनात् ।।
ऊँ महालक्ष्म्यै नमः प्रार्थनापूर्वक समस्कारान् समर्पयामि।
प्रार्थना करते हुए नमस्कार करें।

महालक्ष्मी की आरती- दीपावली पर देवी महालक्ष्मी, भगवान श्रीगणेश, देहली विनायक, दवात, लेखनी, बही, कुबेर, तुला व दीपमाला पूजन के पश्चात महालक्ष्मी की आरती की जाती है। आरती के लिए थाली में स्वस्तिक आदि मांगलिक चिन्ह बनाकर चावल तथा पुष्पों के आसन पर शुद्ध घी का दीपक जलाएं। एक पृथक पात्र में कपूर भी प्रज्जवलित कर वह पात्र भी थाली में यथास्थान रख लें। आरती-थाल व स्वयं की जल से शुद्धि करें (छिड़क लें)। पुनः आसन पर खड़े होकर अन्य परिवारजनों के साथ घण्टानादपूर्वक महालक्ष्मीजी की आरती करें।

मंत्र पुष्पांजलि- आरती पश्चात् दोनों हाथों में कमल आदि के पुष्प लेकर हाथ जोड़े और निम्न मंत्र का पाठ करें-

ऊँ या श्री स्वयः सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।
ऊँ श्री महालक्ष्मै नमः मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

समर्पण- पूजन के अंत में-

'कृतोनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम।'

यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करें तथा जल गिराएं।

विसर्जन- पूजन के अंत मे अक्षत लेकर श्रीगणेश एवं महालक्ष्मी की नूतन प्रतिमा को छोड़कर अन्य सभी आवाहित प्रतिष्ठित एवं पूजित देवताओं को अक्षत छोड़ते हुए निम्न मंत्र से विसर्जित करें-

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम।
इष्टकामसमृयर्थ पुनरागमनाय च।

पूजन के विशेष मुहूर्त

धन्वंतरि प्राकट्य दिवस (धन त्रयोदशी) पर यम निमित्त दीपदान दिनांक 13 नवम्बर 2020 शुक्रवार को सायं 5/59 तक रहेगा।

नर्क चतुर्दशी एवं दीपावली
14 नवम्बर 2020 शनिवार को चतुर्दशी योग दोपहर 2/18 तक रहेगा। ब्रह्म मुहूर्त में चतुर्दशी योग में अभ्यङ्ग, तेल उबटन लगाकर स्नान कर अपने इष्ट देवता तथा ग्राम देवता का दर्शन पूजन करना शुभकारी होता है तथा नर्कवास के योग को समाप्त करता है। इसी दिवस अमावस्या काल में महालक्ष्मी पूजन प्रशस्त है।

श्रेष्ठ लग्न मुहूर्त - वृश्चिक लग्न प्रातः 6/53 से 9/08। कुम्भ लग्न दोपहर दोपहर 1/01/से 2/34 तक। वृषभ लग्न सायं 5/44 से 7/42 तक। सिंह लग्न रात्रि 12/11 से रात्रि पर्यन्त 2/24 तक।

श्रेष्ठ होरा मुहूर्त - मद्यमान प्रातः 10/40 तक दोपहर 1/40 तक, दोपहर 2/40 से कुछ लोग चौघड़िया मुहूर्त में भी पूजन कर लेते हैं।

बही खाताक्रय

श्री विक्रम संवत् 2077 ईस्वी सन् 2020 कार्तिक कृष्ण पक्ष दीपोत्सव पर्व का प्रारंभ पुष्य योग में व्यापारिक तथा व्यावसायिक बही खाता क्रय करने के मुहूर्त से प्रारंभ होता है। इस वर्ष पुष्य योग 7 और 8 नवम्बर 2020 शनिवार तथा रविवार को रहेगा। शनिवार को प्रातः 8/05 से रात्रि पर्यन्त तथा रविवार को सूर्योदय से प्रातः 8/54 तक रहेगा।

5 दिवस दीपोत्सव में आखिर ऐसे क्यों?

धनतेरस पर भगवान यमराज के निमित्त दीपदान किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि जो धनतेरस के दिन दीपदान करता है उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं सताता। इस मान्यता के पीछे पुराणों में एक कथा वर्णित है एक समय यमराज ने अपने दूतों से पूछा कि क्या कभी तुम्हें प्राणियों के प्राण का हरण करते समय किसी पर दयाभाव भी आया है। तो वे संकोच में पड़कर बोले-नहीं महाराज! यमराज ने उनसे दोबारा पूछा तो उन्होंने संकोच छोड़कर बताया कि एक बार एक ऐसी घटना घटी थी, जिससे हमारा हृदय कांप उठा था। हेम नामक राजा की पत्नी ने जब एक पुत्र को जन्म दिया तो ज्योतिषियों ने नक्षत्र गणना करके बताया कि यह बालक जब भी विवाह करेगा, उसके चार दिन बाद ही मर जाएगा। यह जानकर उस राजा ने बालक को यमुना तट की गुफा में ब्रह्मचारी के रूप में रखकर बड़ा किया। एक दिन जब महाराजा हंस की युवा बेटी यमुना तट पर घूम रही थी, तो उस ब्रह्मचारी युवक ने मोहित होकर उससे गंधर्व विवाह कर लिया। चौथा दिन पूरा होते ही वह राजकुमार मर गया। अपने पति की मृत्यु देखकर उसकी पत्नी बिलख-बिलखकर रोने लगी। उस नवविवाहित का करूण विलाप सुनकर हमारा हृदय कांप उठा। उस राजकुमार के प्राण हरण करते समय हमारे आंसू नहीं रूक रहे थे। तभी एक यमदूत ने पूछा-क्या अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है? यमराज बोले -हां उपाय तो है। अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को धनतेरस के दिन पूजन और दीपदान विधिपूर्वक करना चाहिए। जहां यह पूजन होता है, वहां अकाल मृत्यु का भय नहीं सताता। कहते है कि तभी से धनतेरस के दिन यमराज के पूजन के पश्चात् दीपदान करने की परंपरा प्रचलित हुई।

धनतेरस का त्योहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन भगवान धनवन्तरी क्षीरसागर से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए वैद्य समाज हर्षोल्लास के साथ धन्वंतरि जयंति मनाता है। उल्लेखनीय है कि अमृतपान करने वाला प्राणी अमर हो जाता है, इसीलिए धनवन्तरि भगवान ने देवताओं को अमृतपान करवाकर अमर कर दिया था। भगवान विष्णु के अंश से अवतरित भगवान धनवन्तरी आयुर्वेद के प्रवर्तक तथा आरोग्य के देवता रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। यही कारण है कि धनतेरस के दिन दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना के लिए भगवान धनवन्तरी के पूजन का विशेष माहात्म्य है। धनतेरस की प्राचीनता का प्रमाण वैदिक साहित्य में भी पाया जाता है। चूंकि यमराज वैदिक देवता माने जातक हैं, इसलिए इस दिन यमराज की भी पूजा की जाती है। धनतेरस के दिन लक्ष्मी का आवास घर में माना जाता है। इस तिथि को पुराने बरतनों के बदले नये बरतन खरीदना शुभ माना गया है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि चांदी के बरतन खरीदने से अधिक पुण्य लाभ मिलता है।

दीपावली के एक दिन पूर्व नरक चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन मुख्य रूप से मृत्यु के देवता यमराज की पूजा की जाती है। नरक चतुर्दशी का पर्व मनाने के पीछे कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। उन्हीं में से एक कथा नरकासुर वध की भी है। प्रागज्योतिषिपुर नगर का राजा नरकासुर नामक दैत्य था। उसने अपनी शक्ति से इंद्र, वरूण, अग्नि,

वायु आदि सभी देवताओं को परेशान कर दिया। वह संतों को भी त्रास देने लगा। महिलाओं पर अत्याचार करने लगा। उसने संतों आदि की 16 हजार स्त्रियों को भी बंदी बना लिया। जब उसका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो देवता व ऋषिमुनि, भगवान श्रीकृष्ण की शरण में गए। भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें नरकासुर से मुक्ति दिलाने का आश्वासन दिया। लेकिन नरकासुर को स्त्री के हाथों मरने का श्राप था इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा को सारथी बनाया तथा उन्हीं की सहायता से नरकासुर का वध कर दिया। इस प्रकार श्रीकृष्ण ने कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को नरकासुर का वध कर देवताओं व संतों को उसके आंतक से मक्ति दिलाई। तभी से नरक चतुर्दशी तथा अगले दिन दीपावली का त्योहार मनाया जाने लगा।

इस त्यौहार की व्रत कथा का उल्लेख धर्मग्रंथों में इस प्रकार हुआ है- 'एक बार सनतकुमार ने शौनकादि ऋषि-मुनियों से पूछा-दीपावली के त्यौहार पर लक्ष्मीजी के अलावा अन्य देवी-देवताओं का पूजन क्यों किया जाता है? वे बोले-एक बार दैत्यराज बलि ने अपने बाहुबल से अनेक देवी-देवताओं सहित लक्ष्मीजी को बंदी बनाकर कारागर में डाल दिया। जब कार्तिक की अमावस्या को श्रीहरि विष्णु भगवान ने वामन का रूप धारण कर बलि को बांध लिया तब कहीं जाकर उन सभी को कारागार से मुक्ति मिली। फिर श्रीहरि लक्ष्मी के साथ शयन हेतु क्षीरसागर में चले गये। इसीलिए अन्य देवी-देवताओं के साथ लक्ष्मी के शयन व पूजन का विधान बनाया गया है। जो भी व्यक्ति उनका स्वागत उत्साहपूर्वक करके स्वच्छ कोमल शय्या प्रदान करता है, पूजन करता है, उनको लक्ष्मी छोड़कर नहीं जाती। जबकि प्रमाद व निद्रा मे पड़े लोगों के घर लक्ष्मी नहीं जाती।

ब्रह्मा, विष्णु और शिव से वरदान पाकर दैत्यराज महिषासुर तीनों लोकों में आंतक मचाने लगा। इससे दुःखी देवता और मानव त्रिदेवों के पास पहुँचे तो शिव के सुझाव से देवी पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती से शक्तियां प्राप्त कर शक्ति स्वरूपा काली का जन्म हुआ। महादेवी और महिषासुर में नौ रातों तक भयंकर संग्राम चला। इसमें महिषासुर का अंत हुआ। इसके बाद भी देवी का क्रोध शांत नहीं हुआ और रौद्र रूप में नृत्य करने लगी। तब भगवान शिव ने कहा कि दीप जलाकर, मंगल गीतों से देवी की आराधना करो। तब से दीप पर्व मनाया जाने लगा।

इसी प्रकार वामन अवतार में दानवीर राजा बली की त्रिलोक विजय से भयभीत इंद्र ने भगवान विष्णु से उसे रोकने का अनुरोध किया। भगवान बौने का रूप धारण कर बेली के पास पहुंचे और कहा, मुझे अपने तीन कदम के बराबर भूमि दान चाहिए। फिर उन्होंने विराट का रूप धारणकर एक कदम में पूरी धरती, दूसरे कदम में पूरा आकाश नाप लिया। बली को यह समझते देर नहीं लगी कि वे स्वयं नारायण हरि है। उसने हाथ जोड़कर कहा कि तीसरे पग के लिए मेरा मस्तक प्रस्तुत है। भगवान ने उसके सिर पर पैर रखकर उसे पाताल में भेज दिया। उन्होंने बली की दानशीलता से प्रसन्न होकर यह वरदान दिया कि उसकी याद में धरती पर प्रतिवर्ष दीपोत्सव मनाया जाएगा।

700 अधिक प्रोफेशनल बॉयोडेटा के साथ

श्री माहेश्वरी मेलापक

विवाह योग्य युवक-युवतियों की विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री

- विभिन्न वर्गों के लिये भिन्न-भिन्न पृष्ठ
- उत्कृष्ट बॉयोडाटा व आकर्षक कलेवर आज ही
- आज ही सुरक्षित करवाएँ अपनी प्रति

Rs. 750/-

पृथक से प्रति बुक करवाने के लिए शुल्क मात्र (डाक खर्च अतिरिक्त)

अब रिश्ते आयेंगे - आपके द्वार

'श्री माहेश्वरी मेलापक'

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता क्रं.-31725815057

IFSC Code-SBIN0030062

में जमा कर जमापर्ची की छायाप्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

हाईटिक व प्रोफेशनल युवक-युवतियों की पहली पसन्द

90, विद्या नगर (टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे), इंदौर रोड, उज्जैन (मप्र)

मो.- 96305-62161, 74770-72161, 94250-91161

e-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com

गृहलक्ष्मी की प्रसन्नता के बिना अधूरी है महालक्ष्मी की पूजा

लक्ष्मी प्रसन्नता के सूत्र

यदि आप चाहते हैं कि दीपावली पर माता महालक्ष्मी को इस तरह प्रसन्न करें जिससे सुख समृद्धि की आपके परिवार पर वर्षा हो, तो शास्त्रोक्त पूजा के साथ कुछ उपाय भी जरूरी हैं। इसमें सबसे प्रथम है, गृहलक्ष्मी की प्रसन्नता। याद रखें शास्त्र वचन है, ''यस्य नार्यस्तु पूज्यंते'' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ लक्ष्मी का वास होता है। वास्तव में देखा जाऐ तो यहाँ इस वचन का सम्बंध सुखी दाम्पत्य से है। इसके लिये अपनाऐं ये सूत्र.....

एक दूसरे का सम्मान जरूरी

आपका दाम्पत्य जीवन स्नेहिल, सुगंधित और पुष्पित हो, इसके लिए आवश्यक है कि आप अपनों से आत्मीय रूप से जुड़ें,एक-दूसरे को अपनाएं। दाम्पत्य जीवन में उस लड़की को मान-सम्मान दें, जो सब कुछ छोड़कर आपके घर-संसार में आकर मिल गई है। आप उसका जितना आदर करेंगे, वह आपके प्रति, आपके परिवार के प्रति उतनी ही अधिक समर्पित होगी। समर्पण का यह भाव ही दाम्पत्य जीवन का आदर्श है। पति-पत्नी का एक दूसरे पर न्यौछावर हो जाना ही इस रिश्ते की मजबूती को कायम रखता है। एक-दूसरे की भावनाओं को महसूस करना, उनके अस्तित्व को स्वीकार करना, एक दूसरे में छुपी प्रतिभा को निखारने में सहायक बनना, प्रोत्साहित करना, एक-दूसरे की सफलता पर बधाई देना। यही छोटी-छोटी बातें तो सुखी और आदर्श गृहस्थी का राज होती हैं

एक दूसरे को सदा दें महत्व

पत्नी के स्नेह, संतोष और सेवा की उपेक्षा मत कीजिए। वह सदैव आपकी इच्छाओं को अपनी इच्छा मानती है। आप भी उसकी इच्छाओं का ध्यान रखिए। आपकी पत्नी के मन में कभी यह भाव नहीं आना चाहिए कि आपके दिल में उसके लिए प्रेमपूर्ण स्थान नहीं है। पुरूष बने रहिये ताकि वह आपको सम्मान की दृष्टि से देखें। यदि नारी में सद्गृहिणी के गुण हैं तो बाधा बनने के स्थान पर वह पति के मार्ग में सद्प्रेरणा भर देगी। चाहे जीवन भर निर्धन रहें किन्तु उनकी प्यार से भरी मुस्कुराहट गृहस्थी में रंगों की वर्षा किये रहेगी। सुखों के लिए धनवान होने की आवश्यकता नहीं है, धनवान हों तब भी दुखी हो सकते हैं और धनवान न हों तब भी सुखी हो सकते हैं।

आपस में न करें कोई छुपाव

पति-पत्नी दोनों का जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों में अभिन्नता है, एक्य है। भारतीय संस्कृति में तो पुरूष और स्त्री को आधा-आधा अंग मानकर एक शरीर की व्याख्या की गई है, जिसमें पुरूष को अर्द्धनारीश्वर तथा स्त्री को अर्द्धांगिनी कहा गया है। दाम्पत्य-जीवन स्त्री-पुरुष की अनन्यता का गठबंधन है। अतः परस्पर किसी तरह का दुराव, छुपाव, दिखावा, बनावटी व्यवहार करना, परस्पर अविश्वास जैसी स्थितियां एक दूसरे के प्रति घृणा को जन्म देती हैं और इसी से दाम्पत्य-जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। याद रखें कितना ही छुपाऐं वह प्रकट हो ही जाता है। याद रखें दोनों से ही पूर्ण होता है, जीवन। नारी शक्ति है तो पुरूष, पौरूष। बिना पौरूष के शक्ति व्यर्थ ही धरी रह जाती है, तो बिना शक्ति के पौरूष भी काम नहीं आता है, वह अपंग है। शक्ति और पौरूष का समान प्रवाह, संयोग व एकता नव सृजन तथा नव निर्माण के लिए आवश्यक है।

भावनाओं की अभिव्यक्ति जरूरी

पति-पत्नी के लिए सिर्फ प्यार करना ही काफी नहीं, बल्कि उसका प्रदर्शन करना भी आवश्यक है। प्यार की अभिव्यक्ति की कमी से दाम्पत्य जीवन में बाधा आती है। जबकि प्यार की अभिव्यक्ति से जीवन सहज तथा सरल बनता है। प्यार की अभिव्यक्ति की नाजुक डोरी ही आदमी को शक्ति, साहस तथा उत्साह प्रदान करती है। यहीं तीनों एकजुट होकर दाम्पत्य जीवन को मजबूत धरातल प्रदान करती हैं। परिवार को बिखरने से बचाने के लिये आवश्यक है कि पति-पत्नी समय-समय पर हँसी-ठिठोली कर प्यार की अभिव्यक्ति करते रहें। स्त्री की खूबियाँ बयान करें, उसका आदर करें, उसके उत्तम कार्यो पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करें और इन सबके लिए थोड़ी प्रशंसा भी करें। बार-बार उसे यह भी दर्शाऐं कि आज उसे बहुत प्रेम करते हैं। यह समझकर चुप न रह जाऐं कि उससे एक बार ही कह दिया है। वह आपके मुख से अपने प्रति बार-बार सुनना पसन्द करती है।

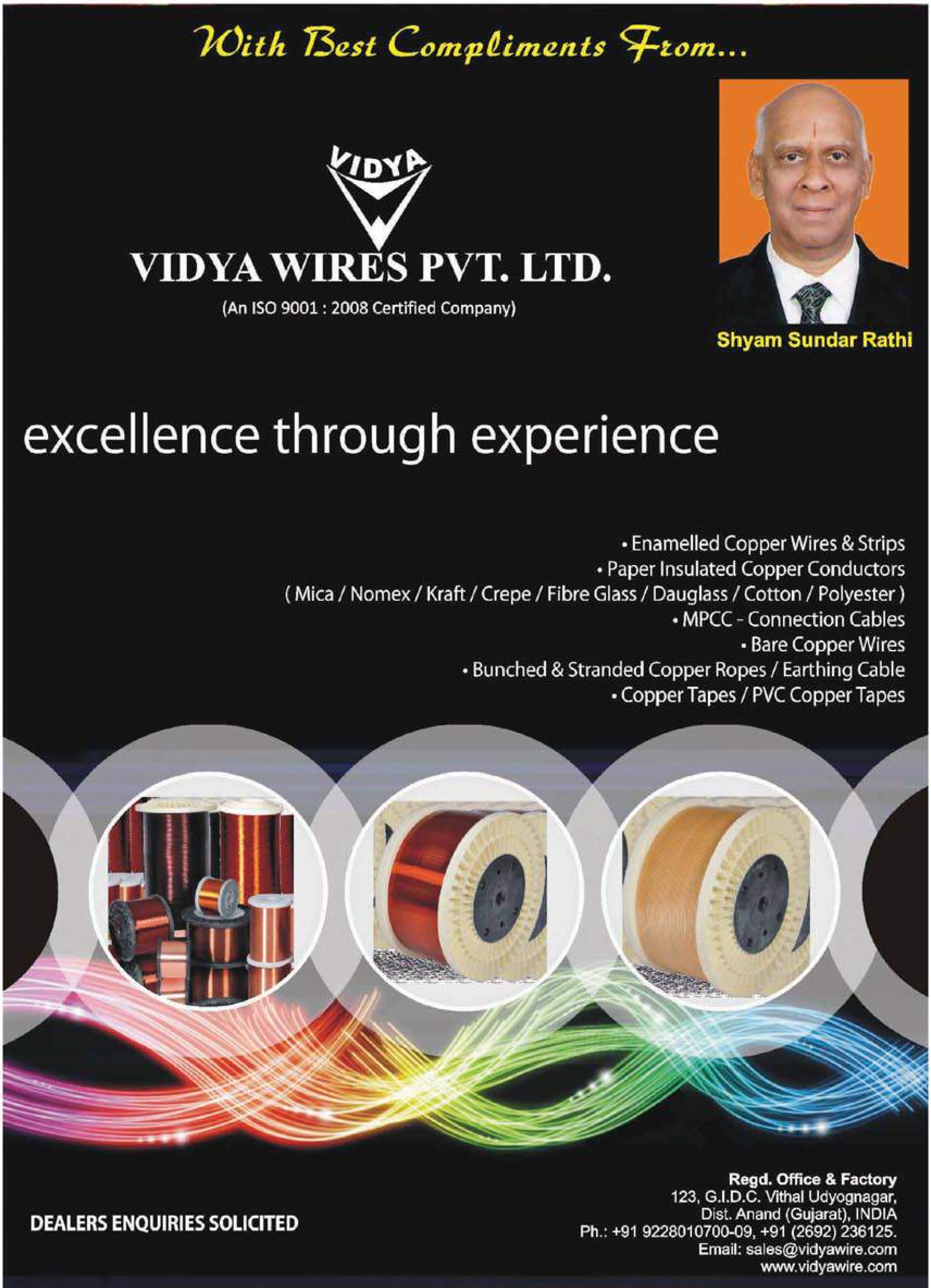
With Best Compliments From...
VIDYA
VIDYA WIRES PVT. LTD.
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
Shyam Sundar Rathi
excellence through experience
• Enamelled Copper Wires & Strips
• Paper Insulated Copper Conductors
(Mica / Nomex / Kraft / Crepe / Fibre Glass / Dauglass / Cotton / Polyester)
• MPCC - Connection Cables
• Bare Copper Wires
• Bunched & Stranded Copper Ropes / Earthing Cable
• Copper Tapes / PVC Copper Tapes
DEALERS ENQUIRIES SOLICITED
Regd. Office & Factory
123, G.I.D.C. Vithal Udyognagar,
Dist. Anand (Gujarat), INDIA
Ph.: +91 9228010700-09, +91 (2692) 236125.
Email: sales@vidyawire.com
www.vidyawire.com

जनहित कार्यों से बने समाज के गौरव और राष्ट्र की प्रेरणा

श्री आर.डी. बाहेती

को 85 वें वर्ष में मंगल प्रवेश पर हार्दिक शुभकामनाएँ

महामहिम राज्यपाल द्वारा 'राजस्थान श्री' उपाधि से विभूषित

तन–मन–धन से समाज को समर्पित व्यक्तित्व जो अपने सरल, स्वाभाविक स्वभाव के कारण अत्यन्त लोकप्रिय और समाज के प्रति अपने योगदान के कारण प्रेरणा स्रोत है।

सम्यक भाव से सदैव समाज हित में कार्यरत बाहेती जी का व्यक्तित्व एक आदर्श है। हास्य सम्राट श्री बाहेती सर्वाधिक लोकप्रिय हैं– देश में प्रथम हास्य क्लब की स्थापना के लिए।

प्रमुख उपलब्धियाँ–

- भारत में प्रथम हास्य क्लब के संस्थापक।
- उत्तर भारत में प्रथम सामूहिक विवाह के प्रणेता।
- जयपुर में प्रथम लायंस क्लब की स्थापना।
- राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद के संस्थापक।
- राजस्थान स्पोर्ट्स क्लब की स्थापना।
- आदित्य विक्रम बिड़ला ट्रस्ट के संस्थापक सदस्य।
- माहेश्वरी समाज, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष व संरक्षक।

शुभेच्छु :
- हास्यम् परिवार
- लॉयन्स क्लब, डिस्ट्रिक्ट-3233E-1 के सभी सदस्य
- सामूहिक विवाह समिति के पदाधिकारी
- राजस्थान स्वास्थ्य योग परिषद् के सदस्यगण
- आर.डी.बाहेती चेरिटेबल ट्रस्ट एवं आर.डी.बी. ग्रुप ऑफ कम्पनी के सभी सदस्य।

आपकी प्रेरणास्रोत
श्रीमती कांता देवी बाहेती

योगदान

धार्मिक

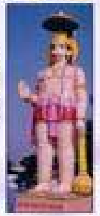

- राजस्थान में पहली बार 51 फुट हनुमानजी एवं शिवजी की मूर्तियाँ आगरा रोड स्थित 'खोलेकाधाम' परिसर में स्थापित।
- 1980 में वनीपार्क स्थित जंगलेश्वर महादेव मन्दिर के अध्यक्ष, मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया।
- 1984 में 15 दिवसीय अ. भा. संत सम्मेलन का आयोजन।
- 'इस्कान' मन्दिर, जयपुर परिसर में सत्संग भवन का निर्माण।
- पिंजरापोल गौशाला परिसर में 1 करोड़ रु. से अधिक की लागत से अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कान्ता देवी बाहेती की स्मृति में 1000 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता का वातानुकूलित सभागार का निर्माण।
- खोले के हनुमान, जयपुर मन्दिर के संरक्षक।

सामाजिक

- 1989 में श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के अध्यक्ष निर्वाचित।
- 1989 में एम.पी.एस., जवाहर नगर स्कूल भवन का भूमि पूजन।
- 1993 में जयपुर जिला माहेश्वरी सभा का गठन एवं 29 जोड़ों का सामूहिक विवाह।
- 1999 में अ.भा. माहेश्वरी महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने गए।
- 2005 में अ.भा. वैश्य सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाए गए।
- 2007 में विद्याधर नगर स्थित 'उत्सव' भवन के लोकार्पण पर विशिष्ट अतिथि।
- 2011 में समाज द्वारा निर्मित तकनीकी शिक्षण संस्थान (वर्तमान में स्कूल) का भूमि पूजन।
- 2014 में 'अभिनन्दन' जनोपयोगी भवन, मानसरोवर का भूमि पूजन कर एक हाल का निर्माण करवाया।
- वनीपार्क धर्मार्थ संस्थान के आप 7 बार अध्यक्ष रहे।
- श्री कृष्ण दास जाजू ट्रस्ट के कार्यकारिणी सदस्य।
- वैश्य महासम्मेलन के संरक्षक सदस्य।
- माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर के संरक्षक सदस्य।
- गुलाब उद्यान विकास समिति के संरक्षक सदस्य।
- माहेश्वरी समाज द्वारा निर्माणाधीन डायलिसिस, डायग्नोस्टिक सेन्टर में प्रथम तल के निर्माण हेतु 31 लाख रुपये का योगदान
- जयपुर क्लब के संरक्षक सदस्य।

संदेश–
हँसिए और हंसाइए - कोरोना दूर भगाइए
हँसिए और हंसाइए - जीवन सुखी बनाइए

पिंजरापोल गौशाला में निर्मित श्रीमती कान्तादेवी बाहेती सभागार

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोंसिंह शेखावत द्वारा 29 जोड़ों का सामूहिक विवाह आयोजित करने पर श्री बाहेती को बधाई देते

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल को लाफ्टर थेरेपी देते श्री बाहेती

हास्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते राज्य के तत्कालीन चिकित्सा मंत्री श्री दुर्रुमियां एवं जयपुर की महापौर ज्योति खंडेलवाल

भाजपा विधायक श्री अशोक लाहोटी एवं राजस्थान सरकार के परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास के साथ हास्य मुद्रा में श्री बाहेती

संयुक्त परिवार की मिसाल
खटोड़ परिवार

समाज में, आज हम परिवारों को रोज टूटते एवं बिखरते हुए देख रहे हैं। लेकिन इस कठिन समय में भी समाज में ऐसे परिवार हैं जहाँ दर्जनों सदस्य साथ में रहते हैं इतना ही नहीं पूरे परिवार की रसोई भी एक ही जगह बनती है। ऐसा ही तेजी से सफलता की सीढ़ी चढ़ता एक परिवार है, अकोला का खटोड़ परिवार जिसकी शक्ति ही उसका संयुक्त होना है।

संदेश रांदड, अकोला

माहेश्वरी महिला मंडल अकोला की उपाध्यक्षा श्रीमती हेमा खटोड़ के संयुक्त परिवार की दास्तान समाज के लिए मिसाल है, जहाँ 35 सदस्यों का अपना एक ही रसोई घर है। इस परिवार की कहानी निश्चित ही प्रेरणा देने वाली एवं मन को सुकून देने वाली है। इस परिवार के पूर्वज स्व. श्री कल्याणमल खटोड़ अठारहवीं सदी में ही राजस्थान के सांबर से अकोला आए थे। अपने बेटे नथमल एवं पोते स्व. नारायणदास के साथ साधारण परिवार के रूप में काम चल रहा था। स्व. नारायणदासजी को पढ़ने का बड़ा शौक था, उन्होंने एल.एल.बी. कर वकालत शुरू की। उनको नायब तहसीलदार की नौकरी भी मिली लेकिन "दो छोटे भाईयों को छोड़कर बदली वाली नौकरी मैं नहीं करना चाहता", ऐसा कहते हुए उन्होंने विदर्भ केसरी ब्रजलाल बियाणी द्वारा स्थापित विदर्भ चेंबर ऑफ कॉमर्स, अकोला में नौकरी कर ली। साथ ही 1952 में खटोड़ ऑइल इंडस्ट्रीज की शुरूआत की। उनकी मिलनसार कार्यशैली की वजह से, स्वतंत्रता सेनानी श्री सुगनचंद तापड़ीया के मध्यस्थता में नारायणदास का विवाह नगरसेठ सुखदेव मोहनलाल कोठारी की बेटी कमलादेवी के साथ हुआ। स्व.नारायणदासजी के स्वभाव के कारण लोग उन्हें आदर से डेडी कहते थे। अकोला में माहेश्वरी समाज को संगठित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1968 में माहेश्वरी समाज ट्रस्ट की स्थापना कर स्व. श्री खटोड संस्थापक प्रधानमंत्री बने। नगरपालिका में भी वे दो बार चुनकर आए व सभापति भी बने।

फिर बड़ी बहू बनी मुखिया

2001 में अपनी 73 वर्ष की आयु में नारायणदासजी के स्वर्गवास के बाद संयुक्त परिवार की पूरी जिम्मेदारी बड़ी बहू हेमा बसंत खटोड के सशक्त कंधो पर गयी। पतिदेव श्री वसंत खटोड का स्वर्गवास 1993 में ही हो गया था। ऐसे में श्रीमती हेमा ने मन ही मन निश्चय किया कि मेरे परिवार को मुझे एक सूत्र में बांधे रखना है। उन्होंने 5 देवर एवं 5 देवरानियों के भरे पूरे परिवार एक जुट रखने का संकल्प लिया। हेमाजी ने परिवार को अपने संस्कारों से सींचकर बड़ा आकार दिया है। छोटे-बड़े सभी एक दूसरे की भावनाओं का आदर करने का मूलमंत्र संयुक्त परिवार को उन्होंने दिया। यही कारण है कि हेमाजी की 4 ननद लता गिरधारीलाल गांधी (मलकापुर), पुष्पा विनोद चितलांगे (नंदुरबार), उमा अशोक चाण्डक (दर्यापुर), उषा गोपाल मणियार (बुरहानपुर) चारों भी बड़ी भाभी में अपनी माँ को देखती हैं।

समाजसेवा को समर्पित पूरा परिवार

पांच देवर सबसे बड़े एवं परिवार के आधार स्तंभ पुरूषोत्तम खटोड सामाजिक कार्यकर्ता हैं। समाज ट्रस्ट में ट्रस्टी, विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन के संयुक्त मंत्री जैसे कई पदो पर उन्होंने अपनी सेवाएं दी है। उनकी धर्मपत्नी कल्पना, पुत्र सीए अर्पित, पुत्रवधु गरिमा, पुत्र-पुत्री डॉ. कौस्तुभ एवं डॉ. नेहा के साथ परिवार में योगदान दे रहे हैं। दूसरे देवर उद्योजक सुनिल उनकी धर्मपत्नी मंजू, पुत्र सीए मुकुंद, पुत्रवधु सीए राधिका, सुपुत्री डॉ. समृद्धि एवं पिलानीसे इंजीनियर बने गोविंद भी संयुक्त परिवार को महका रहे हैं। तीसरे देवर धर्मप्रेमी संजय अपनी धर्मपत्नी सुमित्रा, सुपुत्री आर्किटेक्ट, कु. नम्रता एवं पुत्र अभियंता पुष्कर के साथ भजनानंदी बनकर प्रभु के नाम का जयकारा लगाते हैं। चौथे देवर कुशल संघटक कृष्णा भैया उनकी धर्मपत्नी ममता, पुत्र गौरव एवं सुपुत्री सीए सुबोधिनी ने मिलकर खटोड़ परिवार की बगिया की खुशबू को संजोया है। पांचवे देवर सफल व्यवसायी शिव, धर्मपत्नी संजना, सुपुत्री आर्किटेक्ट श्रेया एवं पुत्र श्रीहर्ष के साथ परिवार में मिठास घोलने का प्रयास करते रहते हैं। इस संयुक्त परिवार की मुखिया हेमाजी ने एम.एस. एवं एस.सी.एच. तक शिक्षित अपने पुत्र डॉ. अंबरीष, पुत्रवधु डॉ. रमा एवं आय.आय.टी. से इंजीनिरिंग के बाद कैलीफोर्निया से एम.एस. की उपाधि प्राप्त करने वाले दूसरे पुत्र अनिरूद्ध, पुत्रवधु अॅड. करिश्मा को भी इस तरह संस्कारित किया है कि वे अपने पांचो चाचा एवं चाची के साथ इस स्वर्ग जैसे परिवार में रह रहे हैं।

परिवार का 'कमल नारायण' में निवास

खटोड़ परिवार ने कीर्ति नगर अकोला में स्थित अपने छह भाईयों के संयुक्त निवास स्थान का नाम "कमल नारायण " रखा है। क्योंकि वे मानते हैं कि अपने माता-पिता के आशीर्वाद से ही यह सब संभव हो रहा है। परिवार में श्रीनाथजी की सेवा है। 125 साल पुरानी गणेशजी की ताम्र प्रतिमा परिवार के पास धरोहर के रूप में है। इनके घर पर प्रति वर्ष गणेश उत्सव की धूम देखते ही बनती है। सारे त्यौंहार साथ मिलकर मनाना खटोड परिवार की विशेषता है। हर साल, होली के दिन परिवार अपने नागपुरी जीन वाले मकान पर एकत्रित होकर होली का त्यौहार मनाते हैं। खटोड परिवार के ऑईल मिल से शुरू हुए व्यवसाय में आज दाल मिल, वेअर हाउसेस, वेल्डिंग रॉड्स, डिस्ट्रीब्यूटरशीप, कमिशन एजेंट आदि व्यापार सफलतापूर्वक संचालित किए जाते हैं। सभी के लिये यह खटोड परिवार प्रेरक हैं क्योंकि इसकी नई पीढ़ी में डॉक्टर्स, सीए, सीएस, आय.आय.टी., इंजिनीयर्स, एम.बी.ए. जैसे उच्च शिक्षित बच्चे हैं। साथ ही जिनकी नई पीढ़ी की बहुए भी सीए, एडव्होकेट, डॉक्टर्स एवं इंजीनियर्स तक शिक्षा ग्रहण कर आयी हैं और सभी हंसी-खुशी साथ-साथ रह रहे हैं।

सफल तथा सुफल परिवार है यह

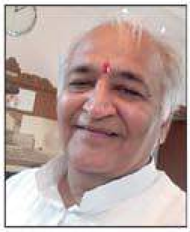

हमारे पूर्वजो ने, जो संयुक्त परिवार के लाभ की हमको सिख दी थी , उसकी पूर्ण साकारकता दिखती है, स्व. श्री नारायणदासजी खटोड़ के इस भाईयो के संयुक्त परिवार मे अकोला माहेश्वरी समाज तथा हम सब के लिये यह एक अच्छा तथा प्रेरणादायी उदाहरण है । सभी भाईयो के अलग-अलग आवास एक ही कम्पाउंड मे है, किन्तु सभी के खाना खाने का चौका एक ही है परिवार की यह आपसी प्रेम तथा आत्मीयता विचारणीय तथा अनुकरणीय उदाहरण है -

■ **अनिल भूतड़ा** पूर्व सचिव माहेश्वरी समाज ट्रस्ट आकोला

ERA T & D LTD, UMRED.

ERA TRANSMISSION & DISTRIBUTION

WISHES YOU ALL A VERY HAPPY DIWALI

May the Divine light of Diwali spread in your Life Peace, Prosperity, Happiness and Good Health

ERA T&D Ltd, an ISO 9001:2015 Certified Company with State-of-the-art Tower Manufacturing and Galvanizing facility located at Plot no D2, MIDC Umred. The plant is approved by Power Grid Corporation of India for 765 kV Tower manufacturing.

Best Wishes from,

Shri. RAMBILASJI SARDA (CHAIRMAN)

Shri. PANKAJ RAMBILASJI SARDA (MD)

हम दीपावली पर अपने घर तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठान को रंग-रोगन कर सजाते हैं, जिससे माता महालक्ष्मी प्रसन्न हों। वास्तव में उन्हें सुन्दर स्थान प्रिय है। लेकिन यदि इस रंग रोगन को आप अपनी आवश्यकता तथा अपनी जन्मकुण्डली के अनुसार कर लें तो यह आपके लिये निश्चय ही उन्नति का कारण बन सकता है।

करें अपने ग्रहों के अनुरूप रंग रोगन

अपनी जन्मकुण्डली के अनुसार हम शुभता के लिये रत्न धारण करते हैं। ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार साधारणतः लग्नेश व नवमेश से सम्बंधित शुभ ग्रह का रत्न धारण किया जाता है। ऐसे रत्न सुख-समृद्धिकारक व भाग्योदयकारी होते हैं। ठीक यही स्थिति मकान के रंगों की भी होती है। घर या व्यावसायिक-प्रतिष्ठान में हम अपना अधिकतम समय व्यतीत करते हैं। अत: उसके रंग का भी सीधा प्रभाव रत्नों की तरह ही पड़ता है। कुण्डली के अनिष्टकारी ग्रहों के रंगों का उपयोग परेशानियों का कारक होता है। वहीं शुभ स्थिति वाले ग्रह के रंग का उपयोग उन्नति का मार्ग खोल देता है।

ग्रहों के अनुसार लगाये कौन सा रंग

सफेद- यह रंग सुख-शांति का प्रतीक है। उसके प्रयोग से एकाग्रता में वृद्धि होती है। अतः बच्चों की शिक्षा आदि के लिये सफेद रंग अत्यधिक शुभ है। वैसे चंद्र से सम्बंधित जातक यदि सफेद रंग का उपयोग करें तो उनके लिये यह उन्नतिदायक हो सकता है।

हल्का नीला सफेद- ऐसा सफेद रंग जिसमें अत्यंत कम मात्रा में नीला रंग मिश्रित हो, वह शुक्र से सम्बंधित है। यह दम्पत्तियों के जीवन में मधुरता लाने के लिये अत्यंत श्रेष्ठ है। शुक्र ग्रह से सम्बंधित जातक इस रंग का विशेष रूप से उपयोग कर सकते हैं।

लाल- गहरा लाल रंग मंगल ग्रह से सम्बंधित है। मंगल ग्रह की प्रधानता वाले जातक इसका प्रयोग कर लाभान्वित हो सकते हैं। यदि इसका अधिक उपयोग करना सम्भव न हो, तो बैक ग्राउण्ड जैसे अलमारी के पीछे और दक्षिण दिशा की दीवार पर इसका अवश्य ही उपयोग किया जा सकता है।

गुलाबी- यह रंग प्यार का प्रतीक है। अतः बेडरूम में इसका उपयोग विशेष रूप से किया जा सकता है। यह रंग सूर्य से सम्बंधित है। अतः सूर्य ग्रह की प्रधानता वाले जातक इस रंग का उपयोग कर विशेष रूप से लाभान्वित हो सकते है।

हरा- यह रंग भी सुख -शान्ति व सुकुन देने वाला है। इसके प्रयोग से वहाँ निवास करने वाले लोगों में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। हरा रंग बुध ग्रह का रंग माना जाता है। अतः बुध ग्रह से सम्बंधित जातक इस रंग का विशेष रूप से उपयोग कर सकते हैं।

पीला- पीला रंग परम्पराओं और मान्यताओं से जोड़ता है। विशेष रूप से यह चरित्र से सम्बंधित है। यह रंग ब्रहस्पति ग्रह से सम्बंधित है। अतः बृहस्पति ग्रह की प्रधानता वाले जातक इसका विशेष रूप से उपयोग करें, उन्हें विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है।

नीला- यह रंग शांति और उत्साह का प्रतीक है। इसके उपयोग से एक नई ताजगी आती है। वैसे यह शनि ग्रह से सम्बंधित भी है, जो अंग्रेजी शिक्षा आदि का कारक भी है। अतः जिन पर शनि ग्रह की विशेष कृपा हो उनके लिये यह रंग अत्यधिक उन्नतिदायक हो सकता है। बैंगनी रंग को भी शनि से ही सम्बंधित माना जाता है।

काला रंग- यह रंग कला और उत्साह का प्रतीक माना जाता है। अतः कलाकार वर्ग का इसकी ओर विशेष रूझान रहता है। वर्तमान दौर में फर्श आदि पर इसका उपयोग किया जा रहा है। यह रंग राहु ग्रह से सम्बंधित है। अतः राहु की शुभता वालों के लिये लाभदायक होकर उन्हें व्यावसायिक उन्नति प्रदान करवा सकता है।

नारंगी- केतु के रंग को लेकर कई अपवाद है, फिर भी नारंगी रंग को इससे सम्बंधित माना जाता है। यह रंग त्याग व आध्यात्म का रंग है। अतः इसका उपयोग वहाँ निवास करने वालों को परोपकारी बनाता है। केतु की शुभता वाले जातकों के लिये यह रंग विशेष रूप से हितकर हो सकता है।

Pravin Kumar Ratanlalji Rathi

Rathi Agencies

Shivaji Nagar, Warud, Distt. Amravati

Pharma Distributor

Matoshri Medicoes

Pandhurna Chauk,
Warud Distt. Amravati

Ph. : 07229-232481
Mo. : 78755-55300, 94229-16228

माता महालक्ष्मी की पूजन में शंख विशेष रूप से शामिल होता है। इसका कारण यही है कि इस सुख-समृद्धि का कारण माना गया है। यह धन वैभव देता है, तो स्वास्थ्य भी। आईये तथ्यों के आधार पर देखें ऐसा क्यों है और कैसे?

सुख–समृद्धि का कारण है शंख

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, शंख चंद्रमा और सूर्य के समान ही देवस्वरूप है। इसके मध्य में वरुण, पृष्ठ भाग में ब्रह्मा और अग्र भाग में गंगा और सरस्वती का निवास है। शंख से शिवलिंग, कृष्ण या लक्ष्मी विग्रह पर जल या पंचामृत अभिषेक करने पर देवता प्रसन्न होते हैं। कल्याणकारी शंख दैनिक जीवन में दिनचर्या को कुछ समय के लिए विराम देकर मौन रूप से देव अर्चना के लिए प्रेरित करता है। यह भारतीय संस्कृति की धरोहर है। कोई भी पूजा, हवन, यज्ञ आदि शंख के उपयोग के बिना पूर्ण नहीं माना जाता है। कुछ गुह्य साधनाओं में इसकी अनिवार्यता होती है। शंख साधक को उसकी इच्छित मनोकामना पूर्ण करने में सहायक होते हैं तथा जीवन को सुखमय बनाते हैं। शंख को विजय, समृद्धि, सुख, यश, कीर्ति तथा लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। वैदिक अनुष्ठानों एवं तांत्रिक क्रियाओं में भी विभिन्न प्रकार के शंखों का प्रयोग किया जाता है।

पौराणिक कथा में शंख

पौराणिक कथानुसार समुद्र मंथन के समय देव- दानव युद्ध के पूर्व समुद्र मंथन से 14 अनमोल रत्नों की प्राप्ति हुई। जिनमें आठवें रत्न के रूप में शंखों का जन्म हुआ। इनमें सर्वप्रथम पूजित देव गणेश के आकर के गणेश शंख का प्रादुर्भाव हुआ जिसे गणेश शंख कहा जाता है। इसे प्रकृति का चमत्कार कहें या गणेश जी की कृपा कि इसकी आकृति और शक्ति हू-ब-हू गणेश जी जैसी ही है। गणेश शंख प्रकृति का मनुष्य के लिए अनूठा उपहार है। निश्चित रूप से वे व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होते हैं जिनके पास या घर में गणेश शंख का पूजन दर्शन होता है। भगवान गणेश सर्वप्रथम पूजित देवता हैं। गणेश जी की कृपा से सभी प्रकार की विघ्न- बाधा और दरिद्रता दूर होती है।

लक्ष्मी पूजन में दक्षिणावृत्ति शंख महत्वपूर्ण

शंख तीन प्रकार के होते हैं - दक्षिणावर्ती शंख, मध्यवर्ती शंख तथा वामावर्ती शंख। जो शंख दाहिने हाथ से पकड़ा जाता है, वह दक्षिणावर्ती शंख कहलाता है। जिस शंख का मुँह बीच में खुलता है, वह मध्यवर्ति शंख होता है तथा जो शंख बायें हाथ से पकड़ा जाता है, वह वामावर्ती शंख कहलाता है। मध्यवर्ती एवं दक्षिणावर्ती शंख सहज रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं। इनकी दुर्लभता एवं चमत्कारिक गुणों के कारण ये अधिक मूल्यवान होते हैं। दक्षिणावर्ती शंख का उपयोग लक्ष्मी प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसके साथ श्री गणेश शंख का पूजन जीवन के सभी क्षेत्रों की उन्नति और विघ्न बाधा की शांति हेतु किया जाता है। इसकी पूजा से सकल मनोरथ सिद्ध होते है। गणेश शंख आसानी से नहीं मिलने के कारण दुर्लभ होता है। सौभाग्य उदय होने पर ही इसकी प्राप्ति होती है। शंख के पूजन से आर्थिक, व्यापारिक और पारिवारिक समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होती है। वैसे श्री यंत्र की भांति आकृति के अति शुभ महालक्ष्मी शंख का भी उल्लेख होता है। इसे प्राकृतिक श्री यंत्र भी माना जाता है।

पूजा स्थल शंख के बिना अधूरे

हिन्दू धर्म में पूजा स्थल पर शंख रखने की परंपरा है क्योंकि शंख को सनातन धर्म का प्रतीक माना जाता है। शंख निधि का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि इस मंगलचिह्न को घर के पूजास्थल में रखने से अरिष्टों एवं अनिष्टों का नाश होता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। स्वर्गलोक में अष्टसिद्धियों एवं नवनिधियों में शंख का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दू धर्म में शंख का महत्त्व अनादि काल से चला आ रहा है। शंख का हमारी पूजा से निकट का सम्बन्ध है। कहा जाता है कि शंख का स्पर्श पाकर जल गंगाजल के सदृश पवित्र हो जाता है। मन्दिर में शंख में जल भरकर भगवान की आरती की जाती है। आरती के बाद शंख का जल भक्तों पर छिड़का जाता है जिससे वे प्रसन्न होते हैं। जो भगवान कृष्ण को शंख में फूल, जल और अक्षत रखकर उन्हें अर्घ्य देता है, उसको अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है।

With Best Compliments From

Shri Krishna Udyog

Mfg. of Brass Circles utensils,
Road, Hex & Flats
Mfg. of Stoneless Sortex Rice

Udyog Nagar, Bhandara - 441904 (MS)
Ph. : 07184-252217, 252117
email : krishnaudyog18@gmail.com

शिखर पुरुष का स्नेहिल स्पर्श

नेतृत्व व संगठनात्मक व्यवस्था जैसी कई विशेषताऐं राजनीतिक व सामाजिक दोनों संगठनों में समान रूप से रहती हैं। इसके बावजूद सामाजिक संगठनों के नेतृत्व से उस संगठन को राजनीति का अखाड़ा न बनाने की अपील की जाती है। आखिर क्या है, राजनीतिक व सामाजिक संगठन में अंतर?

किशन माहेश्वरी, रांची

सामाजिक संगठन का परिवेश राजनीतिक संगठन से जरा भिन्न होता है। राजनीतिक संगठन से जुड़ने का मतलब है, व्यक्ति का ख्वाब राज्य स्तर या केन्द्रीय स्तर पर मंत्री पद पाने का हो जाता है। ऐसा व्यक्ति मात्र संगठन के वरीय पद पर बैठना ही नहीं चाहता। अगर वह व्यक्ति नैतिकता को ताक पर रखकर राजनीति के गलियारे में चहलकदमी कर रहा होता है, तो वह मात्र तख्त ही नहीं चाहता वरन् वह यह भी चाहता है कि देश की धन-सम्पदा उसकी जेब में समाती रहे। वह तकदीर का सिकंदर निकल जाए तथा स्थित और स्थिर हो जाऐ ठीक वैसे ही जिस प्रकार भगवान श्री हनुमान जी के हृदय में श्रीराम-सीता विराजमान रहते हैं। कुछेक नेताओं को भ्रष्टाचार व सरकारी अधिकारी अति प्रिय होते हैं। राजनीतिक संगठन का शिखर पुरूष यदि राष्ट्रभक्त नहीं हो तो वह तानाशाह बन जाता है। ऐसा मनुष्य मानवता और राष्ट्र का विनाशक होता है। राजनीति से यदि अच्छे लोग चुने जाते हैं तो समस्त मानव जाति का कल्याण होता है।

यद्यपि सामाजिक संगठन का दायरा छोटा होता है, किंतु सामाजिक संगठन का नेतृत्व करने वालों की महत्वाकांक्षा तकरीबन राजनीतिक दलों के नेताओं जैसी ही होती है। यह सर्वविदित है कि प्रत्येक संगठन चाहे वह राजनीतिक हो या गैर-राजनैतिक सभी का अपना अलग-अलग संविधान होता है और अपनी-अपनी आचार संहिता होती है। किंतु इसके बावजूद भी नेतृत्व हथियाने की जोड़तोड़ में मनमानी और बेईमानी काफी चलती है। बलातपूर्वक पद-प्रतिष्ठा पाने की लालसा में नियमादि और नैतिकता धरी की धरी रह जाती है और दबंगई चल जाती है।

प्रायः संगठनों में पदाधिकारियों को पद पर प्रतिष्ठित करने की चुनावी प्रक्रिया समाज को संगठित और सुदृढ़ बनाती है। किंतु नेतृत्व संभालने और नाम कमाने का नशा छोटे-बड़े सभी प्रकार के नेताओं को सिद्धांतविहीन और मदांध कर देता है। नेताओं की यह सनक और धमक समाज को कतई लाभान्वित नहीं कर पाती हैं। राजनीतिक दलों के संगठनों में और स्वजातीय संगठनों में भी धनी-मानी व्यक्तियों का ही बोलबाला रहता है, चाहे वे अयोग्य क्यों न हों?

समाज की नेतृत्व मंडली तथा आम सदस्य के मध्य अपनत्व और आत्मीयता होनी चाहिये, वर्ना संगठन सही मायने मे सक्रिय नहीं रह पाता है। अपनापन के अभाव में संगठन मात्र कागजी दिखावा बन जाता है। ऐसा सामाजिक संगठन जिसका नेता स्वजातीय बंधु-बांधवों के साथ मेल-मिलाप और भाईचारा नहीं रखता, उसे अन्य संगठनों में भी सम्मान और आदर प्राप्त नहीं होता है। किन्तु कहीं-कहीं वह अपने ताम-झाम से व्यक्तिगत और व्यावसायिक लाभ उठा लेता है। वह व्यक्ति अपने स्वजातीय समाज के लिये कोई वृहद जनहितार्थ का कोई संगठनात्मक आयोजन सम्पन्न नहीं कर पाता है। वह व्यक्ति तानाशाही का आवरण ओढ़कर संगठन चलाता है। ऐसा व्यक्ति गैरों का चरण स्पर्श करता दिखता है, किंतु अपनी जाति-बिरादरी से स्नेहिल स्पर्श भी नहीं रखता। उसकी जिन्दगी सदैव व्यंग्य बाणों से बिंधती रहती है।

यह शाश्वत सत्य है कि समाज को चलाने के लिए स्वार्थ नहीं सारथी चाहिए, वह भी श्री कृष्ण जैसा। ऐसा सारथी चाहिए जो मानवीय संवेदना रखता हो और जिसका उच्च आदर्श हो। वर्तमान समय में पैसे के दिखावे और खोखले प्रभुत्व ने स्वजातीय समाज के संगठन का स्वरूप बिगाड़ डाला है। इसीलिए लोग अपनी जाति और जातीय संगठन से दरकिनार होने लग गये हैं। इसका एकमात्र कारण है समाज के संगठन में सक्षम और सुयोग्य नेतृत्व का अभाव। कुछ व्यक्ति परमार्थ भाव से ट्रस्ट या व्यक्तिगत रूप से अल्प आय वाले स्वजातीय सदस्य को आर्थिक सहयोग कर उसे आत्मनिर्भर बनाने की दिली ख्वाहिश रखते भी हैं, किन्तु इस सहायता में कुछ गलत महानुभाव अकारण आ धमकते हैं और काम बिगड़ जाते हैं।

जो व्यक्ति षड्यंत्र कर और तालमेल बैठाकर नेतृत्व संभालते हैं, वह व्यक्ति समाज के अन्दर प्रतिभा को उभरने नहीं देना चाहते। महाभारत काल में कौरवराज धृतराष्ट्र को शकुनी मिल गया था, जिसने पूरे कौरव वंश को काल कवलित कर डाला किंतु यह बात द्वापर युग में ही समाप्त नहीं हो गई, आज भी स्वजातीय संगठनों में राजा धृतराष्ट्र और विशेष सलाहकार शकुनी मामा बहुतायत संख्या में पाये जाते हैं। याद रखें जिसने भी रिश्ते-नातों को प्रताड़ित किया है, उसका सर्वनाश हुआ है।

सामाजिक संगठनों में यदि असामाजिक कार्य हो रहे है तो उसका विरोध और बहिष्कार करना चाहिए। किंतु समाज और सामाजिक संगठन को छोड़कर नहीं जाना चाहिए। स्वयं श्रीकृष्ण ने पांडवों को कौरवों की गलत नीति से पलायन नहीं विरोध करने हेतु प्रेरित किया था। जंगल में रहकर ही सांप का फन कुचलने की महारथ हासिल करनी चाहिए, ताकि सांप द्वारा कहीं भी डसने का भय समाप्त हो जाय। हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। समाज को सुसंस्कार और सुसंस्कृति से संस्कारित किया जाना मानवता के लिए हितकर है और प्रत्येक मानव का धर्म है।

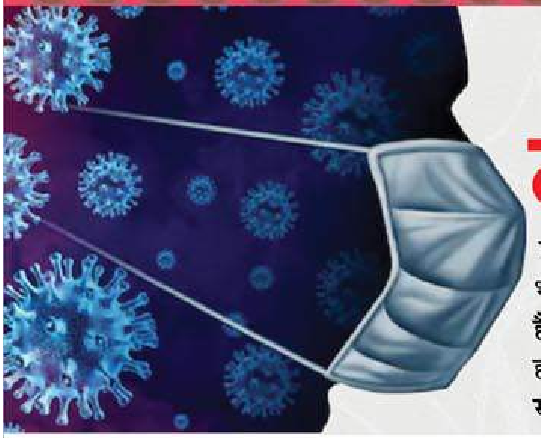

कैसे पराजित करेंगे हम

कोरोना का भय

कोरोना महामारी से हम लगभग 6 माह से जूझ रहे हैं। अपनी इस संघर्ष यात्रा में हम सफल भी हुए हैं। लेकिन इस लम्बे संघर्ष ने हमारे अन्दर मानसिक भय व अवसाद उत्पन्न कर दिया है, जो कोरोना से भी अधिक खतरनाक है। यह मानसिक परेशानी आर्थिक मोर्चे पर तो हमारे लिये चुनौती उत्पन्न कर ही रही है, साथ ही कई बीमारियों का खतरा भी उत्पन्न कर रही है। आईये समाज के प्रबुद्धजनों से जानें "कैसे पराजित करें हम कोरोना का भय?"

जिंदगी जिंदादिली का नाम है

लगता है लोक विख्यात शायर इमाम बख़्श नासिख का शेर "जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं" पहले से अब, विशेषतः कोरोनाकालमें अधिक प्रासंगिक हो गया है। इस भय, अनिश्चिंतता, अकेलेपन एवं आशंकाओं को भोगते-भोगते सरकारी अमला ही नहीं, देशभर के व्यवसायी, उद्योगपति, आम नागरिक एवं युवा यहां तक कि विद्यार्थी भी एक विचित्र उहापोह में आ गये हैं।

मेरे एक मनोवैज्ञानिक मित्र बताते हैं कि इन दिनों अवसाद के सर्वाधिक केस आ रहे हैं एवं इनकी संख्या अहर्निश बढ़ती ही जा रही है। देशभर में लाखों लोग आज संक्रमित हैं, मौत का आंकड़ा भी अनुदिन बढ़ रहा है। लोगों की भागती-दौड़ती जिन्दगी में मानो यकायक ब्रेक लग गया है। आज भी देश के अनेक हिस्सों में कहीं लॉक डाऊन तो कहीं धारा 144 लगी है। बूढे घर पर सिमट गए हैं, तो जो काम पर जाते हैं, वे एवं उनके घरवाले एक विचित्र भय में हैं कि वे घर संक्रमण लेकर न आ जाएं।

ऐसे में अवसाद के अतिरिक्त माइग्रेन, सरदर्द, अल्सर, श्वास आदि मनोजन्य रोग बढ़ रहे हैं। लोग चिड़चिड़े हो गए हैं एवं इसका शरीर एवं मन पर भावनात्मक प्रभाव भी बढ़ रहा है। कई कमजोर व्यक्ति नशा आदि व्यसनों की ओर भी लपक रहे हैं। इन सबकी जड़ में कहीं न कहीं मौत का भय ही अहम है। कभी-कभी मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि मौत तो पहले भी उतनी ही अनिश्चित थी, जितनी आज है वरन् कुलमृत्यु दर आज पहले से कम है, फिर भी यह भय प्रसार क्यों ले रहा है? सदियों पहले यक्ष ने युधिष्ठर से पूछा था कि संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है, तो युधिष्ठर ने 'मृत्यु' कहा था। आज वही आश्चर्य सर चढ़कर बोल रहा है? हमारा आशा भाव, जीवट, आत्मविश्वास फिर कहां चला गया है? निश्चय ही हमें हमारे पुरातन ज्ञान, मनीषा की ओर लौटना होगा, हमारी आस्था को बलवती बनाना होगा। कोरोना का भय आज शरीर पर ही दुष्प्रभाव नहीं डाल रहा है, वरन शनैः शनैः मानसिक एवं मनोजन्य रोगों को भी बढ़ा रहा है। मेरे जैसी स्त्री जो अकेली रहती हैं एवं जिसके बच्चे दूरस्थ रहते हैं, उसे यह भय भावनात्मक स्तर पर भी प्रतिकूलरूप से प्रभावित कर रहा है। 'कल कुछ हो गया तो क्या होगा'? का भाव कभी-कभी मन-प्राणों में न चाहते हुए भी औसान बना लेता है। इससे निजात पाने के लिए हमें सामाजिक तो होना ही है, सकारात्मक भाव से भी आपूरित होना है। ऐसे समय में आप अपने शरीर को नित्य व्यायाम, प्राणायाम कर चुस्त-दुरस्त तो रखें ही, अपने खान-पान का भी पूरा ध्यान रखें। सम्यक आहार एवं सम्यक चिंतन ऐसे समय में रामबाण हैं। आप आशावादी बनें, विश्वास रखें कि मनुष्यता एवं समाज ने पहले भी ऐसी अनेक बाधाएं पार की हैं तो हम इस संकट की घड़ी से भी निकल जायेंगे। जगत में कुछ भी स्थाई नहीं है, जीवन चक्र सदैव, सतत् परिवर्तनशील है। ऐसे में अंधेरा कब तक रह सकता है? सवेर-देर-सवेर उसे शिकस्त देकर प्रकाश आ ही जायेगा। क्या पहले हमारे जीवन में कठिनाइयां नहीं आई? अगर वे नहीं रही तो ये क्यों कर रहेंगी? वे भी इतनी ही दुःसाध्य थी। उन्हें भी तो हमने हमारी सुझबूझ धैर्य से सुलझाया है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम ऐसे समय में आध्यात्म का अवलंब लें। हमारे वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, मानस, गीता आदि ग्रंथ तनाव प्रबंधन अर्थात् स्ट्रेस मैनजमेंट के सूत्रों से भरे पड़े हैं। मैं अक्सर इनका पारायण करती हूं।गीता स्ट्रेस मैनजमेंट नहीं तो और क्या है? इससे बड़ा तनाव युद्ध के मैदान में और क्या होगा कि पाण्डवों का मुख्य किरदार युद्ध के प्रारम्भ में ही यह कह दे कि "केशव! मेरी त्वचा सूख रही है, प्राण कांप रहे हैं, गांडीव हाथ से छूटा जा रहा है।" यह अवसाद अगर अर्जुन जैसे महारथी के जीवन में आ सकता है तो हम सबके जीवन में भी आ सकता है। अंततः कृष्ण स्वयं इसका समाधान बता भी देते हैं क्योंकि अर्जुन उनका नित्य सखा है- "अनन्याश्चिंतयंतेमां ये जनापर्यु पासते, तेषामनित्याभि युक्ता नाम योग क्षेमंव्हाम्यहम" अर्थात् जो परम श्रद्धा से, पूरे विश्वास के साथ मुझे भजते हैं, मैं उनकी दिन-प्रतिदिन के कष्टों, अवसादों से इस तरह रक्षा करता हूं जैसे चिमनी बाती की करती है। रामचरितमानस में काक भुसुण्डी स्वयं गरूड़ को कहते हैं कि मनुष्य के रोग निर्मल मन एवं पवित्र हृदय से प्रभु श्री राम का स्मरण करने से मिट जाते हैं- "रामकृपा नासहिंस बरोगा, जो ऐहि भांति बने संयोगा।" हम जीवन के कठोरतम क्षणों में प्रभुनाम, अध्यात्म की डोरी थामें रहें। धैर्य रखें, समय बदलेगा। स्वयं को मानसिक रूप से मजबूत भी करें।

मधु समदानी, जोधपुर

कोरोना के साथ जीना होगा

भारत उत्सवों का देश है। कोरोना महामारी का व्यापक असर इन उत्सवों पर भी पड़ना लाजिमी है। उत्सवों की रौनक, उमंग व जोश को कोरोना जैसी व्यापक महामारी एवं लाकडाउन ने किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है। यह मुश्किल समय तो व्यतीत हो जायेगा लेकिन क्या पहले जैसा होश, उत्साह रह जायेगा यह कहना कठिन होगा व जिंदगी पहले जैसी पुनः हो पायेगी इसमें संशय है। विशेषज्ञों का कहना है कि हमें इस महामारी के साथ जीवन व्यतीत करने या जीने की आदत डालनी होगी। यह कहना मुश्किल है कि पहले जैसी स्वच्छन्द जिन्दगी अब कब लौटेगी।

हमें सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करने के साथ ही कुछ वर्षों तक स्वयं जागरुक होकर एवं अन्य लोगों को जागरुक करके जिन्दगी बितानी पड़ेगी। फेस मास्क, हेन्डसेनेटाइजर, सोशल डिस्टेन्सिंग आदि आवश्यक एवं कोविड 19 से बचाव के अन्य सभी आवश्यक उपाय भी करने होंगे। रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करने के लिए हमें अपनी प्राचीन पद्धति जैसे योग तथा देशी जड़ी बूटियों द्वारा निर्मित पेय पदार्थों को अपनी रोजमर्रा की आदतों में शामिल करना होगा। कोरोना ने न केवल सोचने का तरीका बदल दिया है बल्कि जीवन शैली पर भी व्यापक प्रभाव डाला है। मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या जिन्दगी पहले जैसी पुनः वापस लौटेगी? उत्सव अगले वर्षों तक फीके ही रहेंगे क्योंकि इतना सब कुछ घट गया है जो वर्षों तक सालता रहेगा और जिन्दगी को सामान्य नहीं होने देगा।

रितेश माहेश्वरी, मथुरा

SONI
OFFICE MATE
Innovation is our tradition
GLUE STICK
For Neat & Clean Adhesion
Available in 8 g, 15 g, 25g, 35 g
CORRECTION PENS
For Neat & Quick Correction
Available in 7ml, 9ml
CORRECTION TAPE
For Instant Correction
5mm x 6m
WHITEBOARD MARKER
Non Stick, easy wipe
PERMANENT MARKER
HIGHLIGHTER
Available in 5 colours
CD / DVD MARKER
For permanent marking on Glass, Plastic, Wood, Metal & Any Plain Surface.
PAINT MARKER
Permanent Marking for any surface
Available in Colours
Regular Tip
Fine Tip
Chisel Tip
WINDOW MARKER (FLUORESCENT)
Can be used on
Glass
Acrylic Sheets
Mica Boards
LED Boards
Any non-porous surface
DRY WIPE
Available in eight colours
NOTE GRIP
For Counting Currency Notes without slipping
Available in 10 g, 30 g, 53 g
STAMP PAD
Available in 3 sizes in all colours
ELECTION / INDELIBLE INK MARKER PEN
INDELIBLE INK
FOR ENQUIRIES DEALERSHIP, DISTRIBUTORSHIP & CNF PLEASE CONTACT-
SONI POLYMERS PVT. LTD.
ISO 9001-2008 CERTIFIED COMPANY
'Utkarsha-Vishakha, 42, Bajaj Nagar, Nagpur - 440 010 (INDIA)
Ph : 91-712-2236463, 2232002, 2221746 Fax : 91-712-2249598
E-mail : domestic@soniofficemate.com, export@soniofficemate.com
Website : www.soniofficemate.com

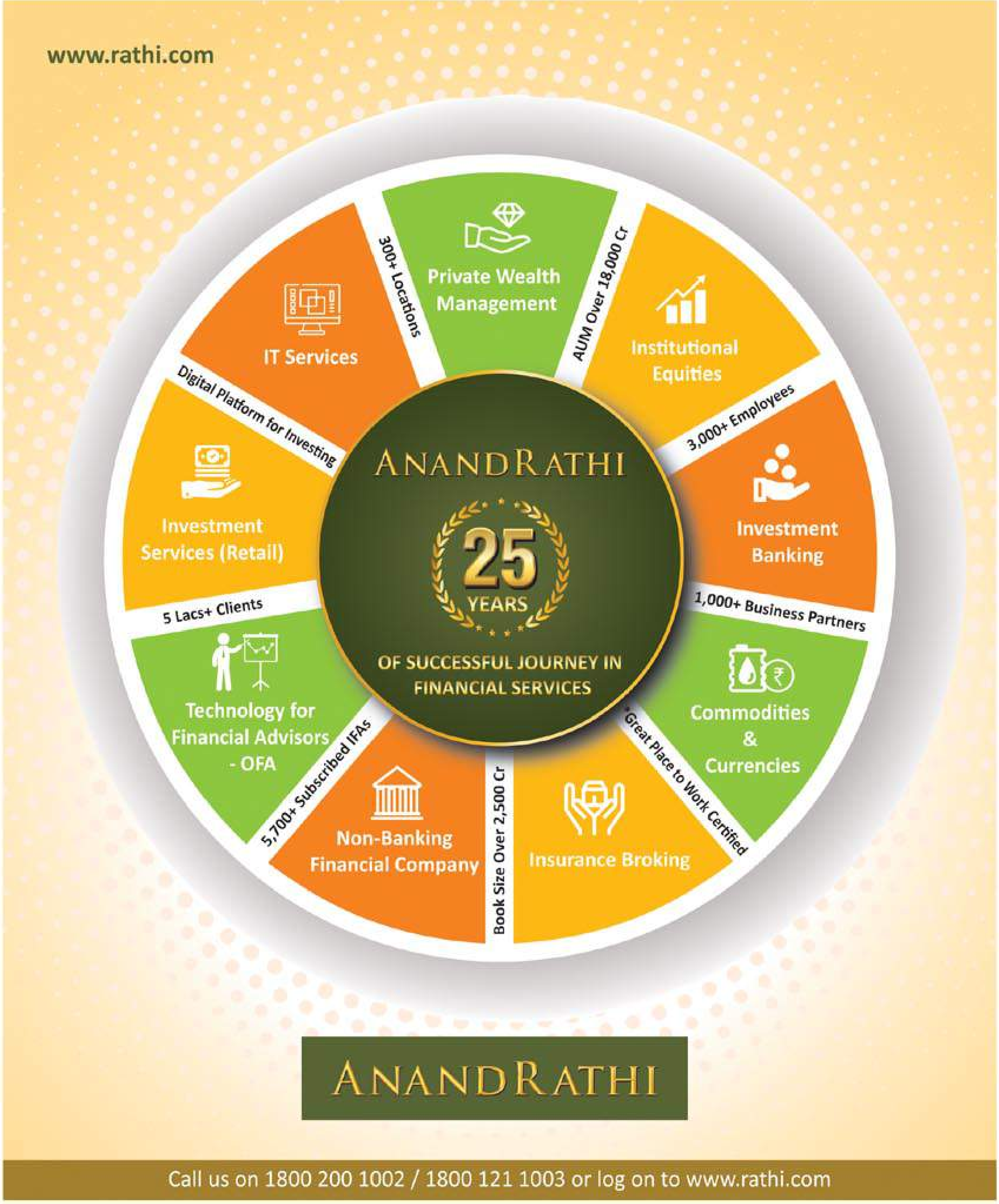

Call us on 1800 200 1002 / 1800 121 1003 or log on to www.rathi.com

Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd. / AnandRathi Advisors Ltd.
Regd. Office: Express Zone, A Wing, 9th Floor, Western Express Highway, Opposite Oberoi Mall, Goregaon (E). Mumbai - 400063. India. Tel: 022 6281 7000
BSE (Mem.ID.949) CM: INB011371557 FO: INF010676931 BSE CD: Exchange Regn. | NSE (Mem.ID.06769) CM: INB230676935 FO: INF230676935 CD: INE230676935 | MSE (Mem.ID.1014) CM: INB260676938 FO: INF260676938 CD: INE260676935 | DP- NSDL: IN-DP-NSDL-149-2000, CDSL: IN-DP-CDSL-04-99. | Research Analyst - INH000000834 | MCX: MCX/TCM/CORP/0525 Mem.ID.: ITCM8500 | NCDEX: NCDEX/TCM/CORP/0178 Mem.No.: TCM00147 | NCDEX SPOT: NCDEXSPOT/043/CO/08/10050 Mem.No.: 10050 | PMS: INP000000282 | MBD-INM000010478 | Investment Adviser: INA000000268 | AMFI: ARN-4478 is Registered under "Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd." | ARN-100284 is Registered under "AR Wealth Management Pvt. Ltd." | ARN-111569 is Registered under "AR Venture Fund management Pvt. Ltd." --We are a distributor of Mutual Fund. Anand Rathi Global Finance Limited is registered as NBFC Regn. No.: B-13.01682. Insurance is registered under "Anand Rathi Insurance Brokers Ltd." License No. 175. PMS registered under Anand Rathi Advisors Ltd. Insurance Products are distributed under Anand Rathi Insurance Brokers Ltd. PMS, PAS & Wealth Management are not offered in commodities segment. Commodities is registered under Anand Rathi Commodities Ltd. | *Anand Rathi Wealth Services Limited.

Disclaimer: Investment in securities market are subject to market risks, read all the related documents carefully before investing. Investments in Mutual Fund are subject to market risk, read all the related documents carefully before investing.

कैसे देखें पञ्चाङ्ग

लक्ष्मी और काल अर्थात् समय का गहन सम्बंध है। लक्ष्मी उन्हीं पर प्रसन्न होती हैं, जो समय को महत्व देते हैं। इसी महत्व को देखते हुए दीपावली पर होने वाली महालक्ष्मी की पूजन में पंचांग की भी पूजन की जाती है। लेकिन इस पूजन का महत्व तभी है, जब हम पंचांग देखकर इसका लाभ ले सकें। तो आईये जानें किस तरह और क्या-क्या जान सकते हैं, हम अपने पंचांग से?

''पंञ्चांग'' शब्द का शाब्दिक अर्थ है, पाँच अंगों की जानकारी। काल गणना के पाँचों प्रमुचा अंगों की जानकारी जो दे उसे ही पंचांग कहते हैं। इनमें प्रमुख पाँच अंग हैं, वर्ष, माह, वार, तिथि और नक्षत्र। वास्तव में देखा जाऐ तो स्थूल रूप से पंचांग की शुरूआत इन्हीं के लिये हुई थी, जो कलांतर से सतत शोध से और भी गहन व सुक्ष्म होता चला गया। वर्तमान में पंचांग ज्योतिष का आधार स्तम्भ है, जिसके आधार पर ही कोई भी ज्योतिषी फलकथन कहता है।

देश-शहर के बारे में विस्तृत जानकारी

सर्वप्रथम तो हम पंचांग से सम्बंधित शहर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें उस शहर में सम्बंधित दिनं का दिनमान, सूर्योदय-सूर्योस्त का समय, चंद्रोदय-चंद्रास्त तथा खगौलिकीय जानकारी के लिये सम्बंधित शहर के अक्षांश व देशांश शामिल होते है। वर्तमान में पंचांग में देश के सभी प्रमुख शहरों के साथ ही लगभग सम्पूर्ण विश्व के प्रमुख शहरों के देशान्तर भी दिये होते हैं। इन देशान्तरों के द्वारा कुछ गणनाकर हम इन सभी शहरों के सम्बंध में भी यह सभी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

तिथि-वार आदि काल गणना

पंचांगों में ईसवी वर्ष के अनुसार दिनांकों के साथ लगभग उनके सामने ही उस दिनांक की तिथि भी अंकित होती है। उसके आगे सम्बंधित तिथि की समाप्ति का समय ज्योतिषिय कालगणना के अनुसार घटी-पल में और उसके आगे वर्तमान कालगणना पद्धति के अनुसार घंटा-मिनिट में भी दिया होता है। गत दिनांक की तिथि समाप्ति से उक्त दिनांक की तिथि समाप्ति तिथि तक सम्बंधित तिथि रहती है। अतः हम शुद्धतापूर्वक किसी भी दिनांक को किसी भी समय रहने वाली तिथि को ज्ञात कर सकते हैं। इस सारिणी में सम्बंधित दिनांक के वार के साथ ही नक्षत्र, योग, दिनमान, सूर्योदय-सूर्योस्त आदि जानकारी भी दी जाती है। वर्तमान में इसी सारणी में सम्बंधित दिवस के व्रत-त्यौहार की जानकारी भी अंकित की जाती है।

किसी भी कार्य का मुहूर्त

कहा जाता है कि सही समय पर किसी कार्य शुभारम्भ का अर्थ उसकी आधी सफलता है। इसीलिये हमारी संस्कृति में हर शुभकार्य के लिये मुहूर्त देखा जाता है। यह कार्य सामान्यतः ज्योतिषाचार्य ही करते आये हैं, लेकिन वर्तमान में पंचांगों से आम व्यक्ति भी आसानी से मुहूर्त ज्ञात कर सकता है। वर्तमान में जैसे उदाहरणार्थ उज्जैन से प्रकाशित श्री विक्रमादित्य पंचांग में प्रारम्भ के पृष्ठों में विभिन्न कार्यो के लिये मुहूर्त शुद्ध कर दिये होते हैं। अतः पाठक इनके द्वारा अपने इच्छित कार्य के लिये मुहूर्त को देख सकते है। इतना ही नहीं विवाह जैसे गहन अवसरों के लिये भी सामान्यतः घर बैठे मुहूर्त देखा जा सकता है। इसके लिये वर-वधू की चंद्र राशि के अनुसार विवाह मुहुर्त शुद्धता पूर्वक दिये जाते हैं। इनमें अतिश्रेष्ठ, पूजा योग्य (अर्थात् मध्यम) व नेष्ट (त्याज्य) का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। चौघड़िये भी सूर्योदय के अनुसार स्पष्ट किये जा सकते हैं।

ज्योतिष गणनाओं का आधार

ज्योतिष के विशेषज्ञ तिथि आदि की गणना वाले पृष्ठ के नीचे दी गई ग्रह स्थिति और लग्न मान से गणना कर जन्म कुण्डली आदि का निर्माण जैसे समस्त ज्योतिषिय कार्य कर सकते हैं। वैसे इसके लिये ज्योतिष की कम से कम सामान्य जानकारी होना आवश्यक है। फिर भी इसमें सूर्योदय-कालीन समस्त ग्रह स्पष्ट इस तरह किये जाते हैं कि इनसे बड़ी आसानी से सम्बंधित समय व शहर के अनुसार ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

कई जानकारियों का खजाना

वर्तमान में पंचांग अत्यंत वृहद रूप ले चुके हैं। इनमें सूर्य व चंद्र ग्रहण की स्पष्ट स्थिति उसके ग्रहण काल के अनुसार तो दी ही जाती हैं, साथ ही देश आदि के लिये वर्षफल भी स्पष्ट है। इनके साथ जातक का सामान्य राशिफल भी स्पष्ट होता है। इसके साथ और भी कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ पंचांगकर्ता शामिल करते हैं। जैसे श्री विक्रमादित्य पंचांग में अनिष्टकारी ग्रहों की शांति के उपाय, कुंडली मिलान, स्वप्न विचार, वैधव्य, विष कन्या, तथा मांगलिक योग, व्यापार भविष्य आदि कई जानकारियाँ दी गई हैं।

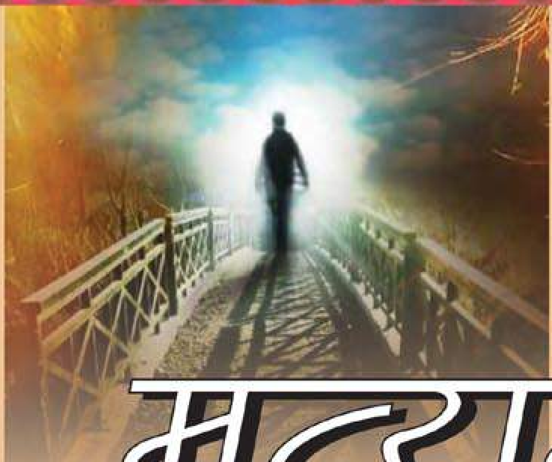

"मृत्यु" वास्तव में परम सत्य है, लेकिन इस शब्द का उल्लेख होते ही एक बार पूरे शरीर मे सिहरन न हो जाए ऐसा हो नहीं सकता। फिर कल्पना करें कि "मृत्युगंध" अर्थात मृत्यु का पूर्वाभास कैसा होगा? आईये इसी को जानने की कोशिश करते है, ख्यात कहानीकार हरिप्रकाश राठी की इस प्रस्तुत कहानी में।

मृत्युगंध

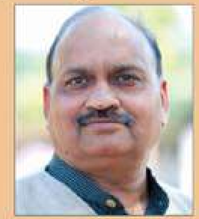

हरिप्रकाश राठी
94141-32483

न जाने क्यों कुछ मित्र आपकी परेशानी का सबब होते हुए भी आपको प्यारे लगते हैं ? वे आपको वे बातें कहते हैं जो आप सुनना नहीं चाहते फिर भी आप पुनः पुनः उन्हीं बातों को सुनने उनके पास चले जाते हैं। अब विष्णु को ही लो, उसके पास ऐसी-ऐसी रहस्यमयी बातों का खजाना है, भूत-प्रेत, डायन-पिशाचिनों, तंत्र-मंत्र आदि की इतनी कहानियां हैं कि आप तौबा करलें पर जाने उसमें ऐसा कौनसा आकर्षण, सम्मोहन है कि मैं पुनः प्रेरा हुआ सा उसके पास चला आता हूं। मैं भी लगता है कोई उल्टी खोपड़ी आदमी हूं, डरता भी हूं एवं डरावनी बातों में रस भी लेता हूं। विष्णु मेरी इस कमजोरी को समझता है, तभी तो इसी शहर में पचास पार होने के बाद भी हम अब तक एक दूसरे के मित्र हैं। यूं ऐसा भी नहीं है कि वह मात्र अंड-बंड बातें करता है, विष्णु मेरे बचपन का सहपाठी है, यारों का यार है एवं मेरे ऑटोपार्ट्स के व्यापार में प्रतिस्पर्धी होते हुए भी उसने मुझे अनेक बार संगीन मुसीबतों से निकाला है। इस सबके बीच वह उतना ही रहस्य, रोमांच एवं तिलिस्म से भरा है कि कभी-कभी तो मैं उसकी बातों को सुनकर कांप उठता हूं। इतना ही नहीं, इन सब बातों को सुनकर उन पर इतना सोचता हूं, मंथन करता हूं या यूं कहूं कि उनमें इस कदर डूब जाता हूं कि मेरी खोपड़ी गरमा जाती है। संजना मेरी इस दशा को देखकर तुरंत पहचान जाती है, कहती भी है, विष्णुजी ने कोई और नया प्रेत-पुराण खोपड़ी में घुसेड़ दिया क्या ? तब मेरे पास चुप रहने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं होता।

ऐसी ही एक बात विष्णु ने मेरी खोपड़ी में दस दिन पूर्व इस कदर पैठाई कि आज तक उस पर सोच रहा हूं। दरअसल हम दोनों मॉर्निंग वॉक से लौट रहे थे कि आधे रास्ते पर रामचबूतरा दिखा। यहां नित्य सुबह असंख्य कबूतर एवं अन्य पक्षी चुग्गा चुगने आते हैं। मॉर्निंगवॉक से लौटते हुए हम अक्सर यहां रुकते थे। हम दोनों कुछ देर वहीं लगी एक लकड़ी की बेंच पर बैठ गए। ओह! पक्षियों को दाना चुगते देख कितना आनंद आता है। कबूतर जब ऊपर से नीचे उतरते हैं अथवा फिर वापस उड़कर लौटते हैं तो उनसे लगने वाली हवा आपको रूहानी आनंद से भर देती है। असंख्य पक्षियों के तृप्त होने का अहसास कहीं आपको भी अबूझ आत्मतृप्ति से सराबोर करता है।

मैं यूं ही बैठा इन दृश्यों को निहार रहा था कि यकायक जाने कहां से एक बूढ़ा, कृशकाय कौआ कांव-कांव करते हुए आया एवं मेरे सिर पर बैठ गया। मैं चौंका, मैंने हाथ ऊपर कर उसे उड़ाया एवं उसके उड़ते ही विष्णु से बोला, "यार ! यहां कौवे कब से आने लग गए ?" विष्णु कुछ देर चुप रहा तो मैं गंभीर हुआ। मैंने पुनः उससे यह प्रश्न किया तो उसकी आंखों में उदासी मिश्रित रहस्य का विचित्र भाव तैर गया। विष्णु का पूरा नाम विष्णुदेव पुरोहित था, वह पंडित था, मैं महाजन बनिया। मुझमें इतना धैर्य कहां था कि इस रहस्य को जाने बिना रह सकूं।

"तूने सुना नहीं ? तू तो ऐसे निराश एवं उदास हो गया है जैसे सिर पर कौआ नहीं बला आकर बैठ गई हो ।" यह कहकर मैं उसकी ओर उत्तर के लिए यूं तकने लगा कि पंडित जो कहना है कह, यूं बेवजह मित्र को डराना उचित है क्या ?

"बला होती तो मैं टाल देता संजु ! आखिर दोस्त इसी के लिए बने होते हैं। क्या बताऊं ! आज तो तेरे सिर वह बैठ गई जिसे कोई व्यक्ति अपने दोस्त के लिए कह भी नहीं सकता।" कहते-कहते उसने मेरा एक हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"अब बता भी क्या बैठ गई ? इतनी देर से पहेलियां बुझा रहा है।" मैं लगभग चीख पड़ा।

"संजु ! क्या बताऊं अब तेरा-मेरा साथ छूट गया। अब तू और मैं मात्र एक माह के लिए मित्र रहेंगे।" कहते-कहते उसकी आंखों में पानी तैरने लगा।

"यह कौन सा अपशकुन हो गया यार और ऐसा हो भी गया तो डरता क्यों है, एक महीने बाद पुनः मित्र हो जाएंगें। किसकी ताकत है जो तुझे मुझसे जुदा करे।" मैंने वार्ता का रुख मोड़ने का प्रयास किया।

"संजु ! तू बिल्कुल बेवकूफ है। तुझे समझाना टेढ़ी खीर है। अब कैसे और किस मुंह से कहूं आज तेरे ऊपर साक्षात् मौत बैठकर गई है।" कहते हुये वह रुंआसा हो गया। मेरा नाम संजय मणिहार है। पर विष्णु मुझे बचपन से संजु कहता आया है।

"अबे क्या बक रहा है ? अभी तो तेरे भतीजे-भतीजी दोनों कुंवारे हैं। उनका ब्याह तू करवायेगा क्या ?" मेरा दिल फटने लगा था।

"संजु ! अब क्या बताऊं, ? सच तो यह है कि जब भी बूढ़ा कौआ अथवा गिद्ध सिर पर आकर बैठ जाए तो समझो आदमी अधिकतम एक माह और जीएगा। बडे-बुजुर्ग एवं शास्त्र ऐसा ही कहते हैं। मौत आने के एक माह पहले इशारों द्वारा प्रकट कर देती है कि मौत आने वाली है। बस पहचानने वाला चाहिए। ऐसे अनेक संकेत हैं जिससे मृत्यु का पूर्वाभास हो

जाता है।'' उत्तर देते-देते वह हांफने लगा था।

''वे संकेत कौनसे हैं ?'' मेरी आंखें आश्चर्य से फैल गई। भला मैं ऐसी बातों में रस क्यों कर न लेता। यह बातें तो मेरे दिमाग की खुराक थी।

''इसमें प्रथम संकेत तो वही है जो अभी-अभी तेरे साथ हुआ। और भी कुछ संकेत हैं। अगर चांद अथवा सूरज में काली दरार नजर आए अथवा उनके चारों ओर काला घेरा नजर आए तो समझो मृत्यु निकट है। निकट यानि एक महीने के भीतर-भीतर।''कहते हुए विष्णु मुझे ऐसे देख रहा था जैसे सिद्ध गुरू अल्पज्ञ चेले की ओर देखता है।

''यह तो तूने ग़ज़ब बात बतायी। मौत के अन्य और चिह्न क्या हैं ?'' अब तक मेरी आंखों में विस्मय सिमट आया था।

''अगर कानों पर हाथ रखने पर आवाज न सुनाई दे, हाथ की लकीरें टूटने लगे, शीशे में अलग परछाई दिखने लगे, अगर कोई चलते हुए किसी साये को साथ चलता हुआ महसूस करे, चेहरा अचानक पीला पड़ जाए तो समझो मौत करीब है।''विष्णु बिना रुके बोल गया।

''बाकी बचे चिह्न भी उगल दे।' मैं भयभीत उसके समीप सरक गया।

''रात घर के बाहर कुत्ते जोर से भौंकने लगे, मुंह के इर्दगिर्द नीली मक्खियां मंडराने लगे, अचानक आंखों के आगे अंधेरी एवं साथ में चक्कर आने लगे, बांया हाथ लगातार दो दिन तक फड़के, बेवजह मुंह एवं कंठ सूख जाए तो समझो यमदूत शीघ्र ही द्वार पर आने वाले हैं।'' विष्णु एक सांस में शेष सभी चिन्ह् बोल गया।

''ये यमदूत क्या होते हैं विष्णु ! क्या यह सच में होते भी हैं ?'' अब मेरा मुंह सूखने लगा था। लगा जैसे शब्द गले में अटक रहे हैं।

''यमदूत मृत्यु के देवता यम के दूत होते हैं। वे आत्मा को ले जाते समय जीव को पहले तो उसके दुष्कर्मों के लिए फटकारते हैं तत्पश्चात् ऊपर ले जाकर उसे कर्मो के अनुसार दंड देते हैं।'' कहते हुए विष्णु ने अपनी आंखें फैलाई तो क्षणभर के लिए वह मुझे काला भसूण्डा यमदूत लगा हालांकि इसके पहले जैसा कि वह था, मुझे सदैव गोरे रंग का तीखा-बांका, लंबा, स्मार्ट बंदा लगा। अनेक लोग तो हमें भाई समझते थे क्योंकि कद-काठी, रूप में मैं भी विष्णु जैसा ही था। पचास पार भी हम दोनों के बाल काले थे एवं चेहरे पर वो सलवटें नही थी जो बहुधा इस उम्र के लोगों में आ जाती हैं।

विष्णु की बातें सुनकर मेरा हृदय भीतर तक कांप गया विशेषतः ऐसा एक अनिष्ट चूंकि पहले ही मेरे साथ घट गया था एवं अब जबकि मेरा गला सूखने लगा था, आंखों के आगे अंधेरी एवं हल्का चक्कर आने लगा था, मृत्यु के अन्य चिहन् भी स्पष्ट होने लगे थे।

मैंने सर उठाकर ऊपर आसमान की ओर देखा। हे लीलाधर! जीवनभर ठोकते रहे , अब मारने पर उतर आए। सर्दी के दिन थे। दिसम्बर समाप्त होने को था। आसमान में हल्की धुंध छाई थी। कुछ पक्षी इधर से उधर उड़ रहे थे तो कुछ दाना लेने नीचे उड़कर आते एवं तृप्त होकर पुनः उड़ जाते। पूर्वी क्षितिज से सूरज ऊंघता हुआ ऊपर उठ रहा था। मैंने गौर से देखा, आज जाने क्यूं मुझे लगा सूरज को आड़े चीरती हुई एक दरार उसे विभक्त कर रही है। मैं घबरा गया, मैंने पुनः सिर उठाकर सूरज की ओर देखा, उसके चारों ओर आज एक काली झांई थी जो धीरे-धीरे गहरा रही थी। मेरे औसान जाते रहे, दम टूटने लगा। मैं उसी क्षण बेंच से उठकर खड़ा हो गया।

''चलो, अब घर चलते हैं।'' विष्णु को कहते हुए मैं लगभग चिड़चिड़ा गया। मेरी दशा देखकर विष्णु भी शेष रास्ते कुछ नहीं बोला।

घर पहुंचते-पहुंचते मेरी आधी शक्ति क्षीण हो चुकी थी जैसे किसी ने जिस्म से खून निचोड़ लिया हो। विष्णु की हर बात सच लगने लगी थी। मुझे लगा संजना को विष्णु की बात बताऊं , पर फिर यह सोचकर चुप रह गया कि यह फिर अपना सिर पीटकर वही कहेगी जो अभी दस रोज पहले कहा था, बूढ़े हो गए हो पर आपका दिमाग आज भी कच्ची मिट्टी है। अगर आपको कोई सड़क पर उल्टा चलने को कहे एवं इसके फायदे गिनवाए तो शायद आप थोड़े दिन में उल्टे चलने लगोगे। क्या औंधी खोपड़ी मरद मिला है? कभी सीधा सोचता ही नहीं। मैं चुप्पी मार गया। मुझे मेरी स्वर्गीय मां का स्मरण हो आया जो बहुधा नहाने के बाद मेरी पेशानी चूमकर कहती थी, मेरा राजा बेटा कित्ता बुद्धिमान है।

अगले दस रोज हालांकि मैं पूर्व दिनचर्या की तरह नित्य विष्णु के साथ मॉर्निंगवॉक पर जाता, धीरे-धीरे सूखने लगा। मुझे वे सभी चिह्न, संकेत जो विष्णु ने बताए थे, मेरे जीवन में घटते हुए नजर आए। एक दोपहर सड़क पर चलते हुए मैंने ध्यान से पीछे मुड़कर दूर तक देखा, हालांकि मुड़ते हुए मैंने पूरा ध्यान रखा कि लोग मुझे मूर्ख न समझें, मुझे मेरा साया नहीं दिखाई दिया। मैं कांप गया। उसी रात कमरे में जाते हुए मुझे लगा कोई मेरे साथ चल रहा है। मैं बालकनी में आया। बाहर दो कुत्ते चांद की ओर देखकर भौंक रहे थे। मैं डर गया। भीतर आकर हनुमान चालीसा का पारायण किया, तब जाकर मेरा भय दूर हुआ। सुबह योगा करते हुए मैंने नित्य की तरह कान दबाकर ओम् का उच्चारण करने वाला प्राणायाम किया लेकिन मुझे उतनी ही आवाज सुनाई दी जितनी किसी बहरे को सुनाई देती है। अबके पहले मुझे यह आवाज स्पष्ट सुनायी देती थी। मैं एक कपोलकल्पित भय से घिर गया , हथेलियां पसीने से भीग गई। मैंनें वर्षों बाद मेरी हथेलियों को ध्यान से देखा, अरे ! मेरी इतनी रेखायें टूट कैसे गई ? पहले तो ऐसा नहीं था। मैं डरकर शीशे की ओर भागा। शीशे में मैं नहीं मानो भूत खड़ा था। मैं सहम गया। बेडरूम में आकर पलंग पर लेटा तो यकायक बांया बाजू फड़कने लगा। अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी। इन दिनों रात या तो नींद नहीं आती अथवा आती तो ऐसे स्वप्न आते जिसमें मेरे वे रिश्तेदार चुप खड़े दिखाई देते जो वर्षो पहले मर चुके थे। भूख प्यास सब मर गयी। मुंह बैरी हो गया। अब बात पक्की हो गई। मृत्यु मौन पदचाप से मेरी ओर इस तरह आ रही थी जैसे कोई भूखी शेरनी मेमने की ओर बढ़ती है। अगर मृत्यु का एक संकेत मृत्यु की संभावना बता देता है तो मुझमें घटित होते हुए इतने सारे संकेत यह बताने के लिए पर्याप्त थे कि मेरी मृत्यु समीप खड़ी है। मैं भीतर ही भीतर सिमट गया। लगा जैसे किसी ने मेरे दिल पर मन भर की सिल रखदी हो।

विष्णु ने जो कुछ कहा उस बात को अब दस रोज हो चुके थे। इन दिनों मैं अक्सर चुप रहता। भीतर रुदन मचा था , किससे कहता ? मौत असमय आ जाए तो कोई बात नहीं लेकिन यूं कहकर , डरा-डराकर आए तो इसकी व्यथा वही जानता है जो भुगतता है।

आज लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिससे मुझे किंचित् राहत मिली। मॉर्निंगवॉक से लौटते हुए मैं एवं विष्णु नित्य की तरह रामचबूतरा के पास बेंच पर बैठे थे तभी वही बूढ़ा, कृश कौआ कांव-कांव करते आया , कुछ पल तो मेरे ऊपर उड़ता रहा फिर मुझे छोड़कर विष्णु के सिर पर बैठ गया। मुझे मानो प्राणवायु मिली। मुझे पहली बार लगा हमदुखियारे कितना सुकून देते हैं। विष्णु ने कातर आंखों से आंख ऊंची कर इस दृश्य को देखा, उसका चेहरा लटक गया। मैंने हाथ ऊपर कर कौवे को उड़ाया।

''लगता है हम दोनों पर कोई भारी विपत्ति आने वाली है। हो सकता है किसी दुर्घटना में हम दोनों साथ मर जाएं।'' कहते-कहते विष्णु की

आंखे फैल गयी।

"अब क्या करें विष्णु ?" मैंने भी सहमे-सहमे विष्णु से पूछा। वह न जाने क्यों अब गहरी-गहरी सांस ले रहा था।

"संजु ! यकायक मुझे एक विचित्र गंध आने लगी है। इस गंध का बयां करना मुश्किल है। इसे सिर्फ वही सूंघ सकता है जो मरने वाला हो। यह मृत्युगंध है। लगता है तेरी-मेरी मित्रता को नजर लग गई है। अब तांत्रिकों, भोपों की शरण में जाना ही होगा, मैं तुझे भी फोन कर बताऊंगा। फिलहाल हम विदा लेते हैं। अब हम दोनों आज के एक माह बाद ही मिलेंगें। दुर्घटना से टलने का यही उपाय है।"इतना कहकर विष्णु उठा, मुझसे हाथ मिलाया एवं हम दोनों अपनी राह पर चल पड़े।

अब सोचने-सुनने को क्या बचा था।

घर पहुंचा तब तक मुझे पूरा यकीन हो गया मैं मात्र चंद दिनों का मेहमान हूं। रात करवटें पर करवटें ले रहा था। आंखें नींद से बोझिल थी पर पलकें बंद होने से इंकार कर रही थी तभी मुझे एक विचित्र गंध का अहसास हुआ जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की। मेरा कलेजा बैठ गया। रातभर बैडरूम से बालकनी में आता-जाता रहा। सुबह न जाने कैसे संजना ने यह बात ताड़ ली कि मेरे साथ कुछ लफड़ा हो गया है। उसने मुझे पूछा तो पहले मैं टाल गया पर जब उसने आंखें तरेरकर पुनः प्रश्न दोहराया कि सच-सच बताओ क्या हुआ है? तो मैंने पिछले दस दिन से हृदय में छुपाया सारा भेद उगल दिया। मेरी बात सुनकर पहले तो वह सहमी फिर क्षणभर में सामान्य होकर बोली, "हम आज ही डॉ त्रिवेदी के घर चलेंगे। वे अच्छे मनोचिकित्सक होने के साथ प्रख्यात अध्यात्मविद् भी हैं। उनके पास हर समस्या का समाधान है। वे मेरे पापा के अच्छे मित्र भी हैं, मैं अभी पापा से बात करती हूं। और खबरदार जो विष्णुजी से इन दिनों मिले अथवा फोन पर बात की। बेवजह अपने साथ आपको भी भोपों में फंसा देंगे।"

शाम पांच बजे मैं डॉ त्रिवेदी के घर ड्राईंगरूम में उनके सामने बैठा था। संजना को उन्होंनें पहले ही कह दिया था कि वे मुझसे अकेले में बात करेंगे। मुझे पता था संजना ने उन्हें पहले ही मेरे भूत-प्रेत, डायन-पिशाचों के ज्ञान के बारे में बता दिया होगा। मुझे यह भी पता था वह स्पष्ट कह देगी कि यह दिन-रात हॉरर बुक्स पढ़ते हैं एवं फिर रात सपनों में डरते हैं। क्यों न कहे अभी तीन दिन पहले ही तो पसीने से तरबतर उठकर मैंनें संजना को पुकारा था।

"हेलो संजयजी, कैसे हैं ?"डॉ त्रिवेदी की आवाज सुनकर मैं इस तरह चौंका जैसे किसी ने मुझे नींद से जगा दिया हो।

"जी , ठीक हूं। " मैं ठीक नहीं था पर मुझे यही उत्तर सूझा।

"फिर चेहरे पर यह हवाइयां क्यूं उड़ रही हैं ?"कहते हुए वे जोर से हंस पडे। मुझे एकबारगी लगा वे मेरा उपहास कर रहे हैं पर यह बात सच भी तो थी। उनसे कुछ भी छुपाना दाई से पेट छुपाने जैसा था।मैंनें उन्हें सारा घटनाक्रम उतनी ही सत्यता से बता दिया जैसे संजना को बताया था। दिल का गुबार निकालने के बाद लगा जैसे सिर पर रखा आधा बोझ नीचे रख दिया हो। आज मुझे पहली बार लगा, अनेक दुःख हम यूं ही ढोते हैं, अगर उन्हें किसी को कह दें अथवा बांट लें तो दुःख वैसे ही काफूर हो जाता है जैसे दीया जलाने पर अंधेरा। लेकिन ऐसा विश्वासपात्र व्यक्ति मिलता कहां है ?

"तुम्हें किसने कह दिया तुम मर जाओगे ? मृत्यु तुम्हें मार ही नहीं सकती।' 'डॉ त्रिवेदी अब मेरा चार्ज लेने लगे थे।

"वह कैसे ?" मुझे मानो इन्हीं शब्दों की तलाश थी।

"मृत्यु तुम्हें नहीं मारती, उसे मारती है जो तुम नहीं हो। मृत्यु देह को मारती है लेकिन तुम देह कहां हो ? देह तो नश्वर है। ऐसी देह तो जन्म-जन्मांतर में अनेक बार तुम प्राप्त कर चुके हो। वे सभी देह विनष्ट हो गयी तो क्या तुम विनष्ट हो गए ? तुम आज भी तो हो। क्यों ? ऐसा इसलिए कि तुम एक शक्तिशाली, ज्योतिपुंज आत्मा हो जो कभी नष्ट नहीं होती। अगर तुम्हारी आत्मा अनश्वर, ऊर्जा से परिपूर्ण, जीवंत है तो फिर किसके नष्ट होने का दुःख लिए तुम भयभीत हो रहे हो ?" डॉ त्रिवेदी का दार्शनिक भाव अब उनके चिकित्सकीय भाव के साथ प्रकट होने लगा था।

"ओह ! आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। यह बात मैंने भी गीता एवं अन्य पुस्तकों में पढ़ी है पर संकट के समय ज्ञान जाने किस कंदरा में जाकर छुप जाता है।"मैंनें बात आगे बढ़ाई।

"ऐसा इसलिए कि तुम्हारा मन उन सब बातों को शह देता है जो तुम बलात् अपने विचारों में बसा लेते हो। तुम उससे बाहर आना ही नहीं चाहते। तुम्हारी बुद्धि तुम्हारे हर दुश्चिंतन के लिए तर्क जुटा लेती है जैसे कि तुमने जुटा लिए हैं। यह 'ऑबसेशन' अर्थात् बाध्यता नाम का रोग है। इस रोग को हम ही क्रियेट करते हैं एवं हम ही हमारे सत्चिंतन, आत्मविश्वास से बाहर आ सकते हैं। रोग तुमने बनाया है तो मिटाओगे भी तुम्हीं। उसे तांत्रिक, भोपे कैसे मिटा सकते हैं ?" डॉ त्रिवेदी का चिकित्सा भाव अब दर्शन भाव को लांघने लगा था।

"इस ऑबसेशन से मुक्त होने का क्या उपाय है ?" मैं धीरे-धीरे उनके चिकित्सकीय शरण में जाने लगा था। उनके आंखों में ऐसा सम्मोहन था जो मुझे वह सोचने को विवश कर रहा था जो वह चाहते थे एवं जो जगत् का अंतिम सत्य भी था।

"मैं तुम्हें तीन-चार थैरेपी सैशन में बुलाऊंगा , कुछ दवाइयां भी दूंगा जिससे तुम कुछ समय के लिए शांत रहोगे। हो सकता है तुम्हें नींद अधिक आए। उसके पश्चात् तुम एक माह के लिए किसी हिलस्टेशन पर घूमकर आओ। जिंदगी के प्रति सकारात्मक नजरिया पैदा करो। अपनी ऊर्जा, प्राणों को फालतू बातों में खपाने के बजाय ध्यान, आध्यात्मिक, प्रेरक पुस्तकों आदि को पढ़ने में लगाओ। ऐसी बातों में रस न लो जो तुम्हें भयाक्रान्त करती हैं।" डॉ त्रिवेदी ने यकायक मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया था।

"ओह ! सचमुच मैं भटक गया था अंकल ! एक बात लेकिन समझ नहीं आई कि वह मृत्युगंध क्या थी ?" मैंने न चाहते हुए भी मेरा संशय प्रकट कर दिया।

"मृत्युगंध और कुछ नहीं जीवन का उत्साह, उमंग और उल्लास से दूर होना है। मृत्युगंध उचित जीवनदर्शन का अभाव है। यह गंध उन्हें ही आती है जिनका आत्मविश्वास, जीवट मर गया है। जो परिस्थितियों का मुकाबला करना नहीं जानते। जो मुर्दादिल हैं। जिंदादिल, साहसी लोगों को तो सदैव जीवनगंध ही आती है। वे हर पल, हर घड़ी जीते हैं। उन्हें मृत्युगंध कभी नहीं आती। " डॉ त्रिवेदी की बातें सुनकर मेरे आंखों की चमक बढ़ गई।

उनके क्लिनिक से बाहर आते-आते मेरी मुट्ठियां तन गई। किसी ने मेरे भीतर एक नये विश्वास का शंखनाद कर दिया था। हां मैं ऐसा कर सकता हूं, हां मैंऐसा ही करूंगा।

भीतर दीपक जल जाए तो वहां अंधेरा कैसे रहेगा ?

हम हिलस्टेशन से लौटकर आए तो मुझे किसी अन्य मित्र से यह दुःखद सूचना मिली, "कल देर रात तुम्हारे मित्र विष्णु का स्वर्गवास हो गया है।"

ASHOK SOMANY

SOMANY IMPEX
Stone that stuns

ASHOK SOMANY

AAKASH SOMANY

M/s. ASHOK SOMANY & Co.

Mining of Natural Stone & TIles

Khol House, Circular Road, Rewari - 123401 (Hry) Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel. : 01274-225385, Mob. : 981245677, Res. : 01274-260088, 260048
Email : accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

SOMANY NATURAL STONES (I) Pvt. Ltd.

All Kind of Natural Stone & Tiles

Plot No.5, Delhi Rewari Road, Rewari-12340 1 (Hry)
Mobile : 9812345677, 9812028488
Email : mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY IMPEX

Exporter of All Kind of Natural Stoen &Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari-123401 (Hry), Unit-Khol Road, Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel.: 01274-225385, Mob. : 9812028488, 9215689102
Email: accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

DEVVRAT OVERSEASE

All Kind of Natural Stone & Tiles

Vil. Mehtawas, Mehtawas Road (Raj), Mobile : 9812345677, 9812025385
Email: mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY (P.G) INSTITUTE OF TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Running B.Tech & M.Techinfidderent Discilines of Engineering

Near Delhi-Jaipur Highway No. 8, Beside 3 km, From Rewari City, Rewari (Hry) Tel. 01274-261239, 261781
Fax: 01274-261239, Mob. 9541069998
Email : Info@sitmrewari.com | admin@sitmrewari.com | accounts@sitmrewari.com

कौन होंगे इस बार ?

माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2020

अपनीं परम्परानुसार श्री माहेश्वरी टाईम्स समाज की उन विभूतियों को नववर्ष में माहेश्वरी ऑफ ईयर 2019 से सम्मानित करेगी, जिन्होंने किसी भी स्तर पर अपना विशिष्ट योगदान दिया है। यह सम्मान वास्तव में ऐसी विभूतियों की सेवाओं का सम्मान तो है ही, साथ ही इस अवसर पर ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' में प्रकाशित होने वाली उनकी सफलता की कहानी समाज की नई पीढ़ी को कुछ नया और कुछ हटकर करने की प्रेरणा भी देगी, जिस पर समाज व राष्ट्र गर्व कर सकें।

इस बार भी कई क्षेत्रों को सम्मान

श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रकाशन के साथ ही अवॉर्ड ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर'' की गरिमामयी शुरुआत भी हुई थी। लगभग 15 वर्ष की सफलता की इस यात्रा में श्री माहेश्वरी टाईम्स समाज की कई शीर्षस्थ हस्तियों को इस सम्मान से सम्मानित कर चुकी है। इसके अंतर्गत प्रतिवर्ष एक ही विभूति को सम्मानित किया जाता था। इससे कई सेवा क्षेत्र की विभूतियाँ सम्मानित होने से वंचित रह जाती थीं। अतः प्रबुद्धजनों के परामर्शानुसार गत 7 वर्ष से इसके स्वरूप को और भी वृहद करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में पृथक-पृथक रूप से माहेश्वरी ऑफ द ईयर सम्मान दिया जाने लगा है। इसी श्रृंखला में विभिन्न क्षेत्रों की शीर्ष विभूतियों की सम्मानित किया जाऐगा।

विशिष्ट सेवाओं के लिये समाज की विशिष्ट विभूतियों को प्रतिवर्ष ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर'' अवार्ड से सम्मानित करना ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' की परम्परा है। इसी श्रृंखला में वर्ष-२०२० की विभूतियों का फिर फैसला होगा और फैसले में अहम भूमिका निभाऐंगे आप जैसे प्रबुद्ध पाठक।

इस बार भी फैसला आपके हाथ

''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' अपनी परम्परानुसार पाठकों से इस सम्मान के लिये उनका मत आमंत्रित करती है। यदि आप समाज की किसी भी ऐसी हस्ती को जानते हैं जिन्होंने किसी भी कार्य क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपलब्धियों से समाज को गौरवान्वित किया है तो उनके नाम का प्रस्ताव संक्षिप्त जानकारी व संपर्क नम्बर के साथ प्रेषित करें। अपना यह प्रस्ताव आप ईमेल द्वारा भी प्रेषित कर सकते हैं। चयन समिति ऐसी विभूतियों में से माहेश्वरी ऑफ द ईयर 2020 अवॉर्ड के लिये प्रत्याशियों का चयन करेगी। ईमेल में माहेश्वरी ऑफ द ईयर 2020 लिखना न भूलें।

संपर्क- **मोबाइल : 9425091161**
ई मेल : smt4news@gmail.com

॥ दीपपर्व पर हार्दिक मंगलकामनाएं ॥

लोकप्रतिष्ठित साहित्यकार

हरिप्रकाश राठी

की कहानियां अब amazon एवं YouTube पर उपलब्ध

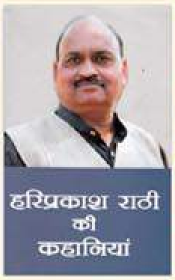

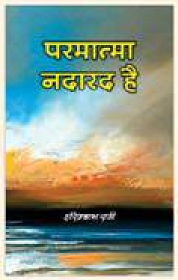

1. हरिप्रकाश राठी की कहानियां (भाग 1)
2. हरिप्रकाश राठी की कहानियां (भाग 2)
3. परमात्मा नदारद है।

YouTube
Hari Prakash Rathi Ki Kahaniya
टाइप कर सुन सकते हैं ।

With Best Compliments From

S B RANDER GROUP

RISING FROM THE ROOTS

Sri Bhagirath Textiles Ltd.

(Spinning Unit)

Shrigopal Rameshkumar Sales Pvt. Ltd.

(Cotton Merchant)

Multiurban Infra Services Pvt Ltd.

(Water Supply Contractors and Solution Providers)

Head Office :

Sarvodaya Cloth Market, Gandhibagh, Nagpur - 440 002 (Maharashtra)
Phone : +91-712-2769035, 2777206,
Web Site : www.srcommodities.com
Email : info@srcommodities.com

Associates At

Coimbatore, Chittorgarh, Mumbai, Ichalkaranji, Indore, Lucknow

Shrigopal Rander

Madhusudan Rander

Ramesh Rander

With Best Compliments from

Company Identification No. U51100GJ1989PLC012428

SURYA GROUP

Surya Exim Limited

3040, Jash Textile & Yarn Market, Ring Road, SURAT (Guj.)-395 002, INDIA
Tel. : 0261-4083100/101/116
Fax : 0261-4083120, 2328842
E-mail : info@surya-exim.com, suryaexim@hotmail.com, jpsaboo@hotmail.com
Website : www.surya-exim.com

ताकतवर पूरक पोषण आहार है

सहजन

सहजन अर्थात मुनगा जिसे मालवांचल में सुरजना भी कहा जाता है, इससे आम व्यक्ति एक सब्जी की तरह परिचित है। वास्तव में यह कीचन में भोजन का जायका बढ़ाने वाली एक सब्जी तो है ही लेकिन साथ ही यह एक अत्यंत पौष्टिक पूरक आहार भी है। यही कारण है कि चिकित्सक भी विभिन्न रूप में इसकी फली से लेकर विभिन्न भागों का उपयोग करने की सलाह देते हैं।

कैलाश लढा, जोधपुर

दुनिया का सबसे ताकतवर पोषण पूरक आहार है- सहजन (मुनगा)। इसकी जड़ से लेकर फूल, पत्ती, फली, तना, गोंद हर चीज उपयोगी होती हैं। आयुर्वेद में सहजन से तीन सौ रोगों का उपचार संभव बताया गया है। सहजन के पौष्टिक गुणों की तुलना के अनुसार इसमें विटामिन सी-संतरे से सात गुना अधिक, विटामिन ए- गाजर से चार गुना अधिक, कैलशियम- दूध से चार गुना अधिक, पोटेशियम-केले से तीन गुना अधिक, प्रोटीन- दही की तुलना में तीन गुना अधिक होता है। स्वास्थ्य के हिसाब से इसकी फली, हरी और सूखी पत्तियों में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नीशियम, विटामिन-ए, सी और बी-काम्प्लेक्स प्रचुर मात्रा में पाई जाते हैं। इनका सेवन कर कई बीमारियों को बढ़ने से रोका जा सकता है। इसका बॉटेनिकल नाम 'मोरिगा ओलिफेरा' है। हिंदी में इसे सहजना, सुरजना, सेंजन और मुनगा नाम से भी जानते हैं, जो लोग इसके बारे में जानते हैं, वे इसका सेवन जरूर करते हैं। इतना ही नहीं सहजन की पत्तियां भी पानी में आर्सेनिक छोड़ती हैं।

कई रोगों में कारगर

हाई ब्लड प्रेशर करे कम

सहजन में भरपूर मात्रा में पोटैशियम, विटामिन्स पाए जाते हैं। जो ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद करता है।

वजन कम करने में करे मदद

शरीर में बढ़ी हुई चर्बी को कम करने में सहजन काफी कारगर साबित हो सकता है। इसमें अधिक मात्रा में फास्फोरस पाया जाता है। जो वसा कम करने में मदद करता है। इसलिए आप इसकी पत्तियों के रस का सेवन करे। इससे आपको लाभ मिलेगा।

डायबिटीज को कंट्रोल

अगर आप डायबिटीज की समस्या से पीड़ित हैं तो सहजन का सेवन करें। इससे आपका ब्लड व शुगर लेवल कंट्रोल में रहेगा। दरअसल सहजन में राइबोफ्लेविन अधिक मात्रा में पाया जाता है, जिसके चलते यह ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। लेकिन इसका ज्यादा सेवन करने से बचे।

इम्यूनिटी करें मजबूत

सहजन में भरपूर मात्रा में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो आपकी इम्यूनिटी को बूस्ट करने में मदद करते हैं। इससे किसी भी तरह की संक्रामक बीमारी आपसे कोसों दूर रहती हैं। इसके साथ ही आपकी हड्डियां भी मजबूत होती है।

सिर दर्द से दिलाए निजात

सहजन के पत्तों के रस को काली मिर्च के साथ पीस लें। इसके बाद इस पेस्ट को सिर माथे पर लगा लें। इससे आपको सिर दर्द से लाभ मिलेगा।

स्किन को रखें जवां

सहजन में भरपूर मात्रा में एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं जो आपको स्किन संबंधी हर समस्या से छुटकारा दिला देते हैं। इसके साथ ही इसमें विटामिन पाया जाता है, जो आपकी स्किन को जवां रखने में मदद करता है।

एनीमिया से दिलाए निजात

शरीर में खून की कमी के कारण एनीमिया की शिकायत हो जाती है। ऐसे में सहजन काफी कारगर साबित हो सकता है। सहजन की पत्तियों के एथनोलिक एक्सट्रैक्ट में एंटी-एनीमिया गुण मौजूद होते हैं। जिसका सेवन करने से शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ जाती हैं।

सहजन का सूप रखे बुढ़ापे से दूर

सहजन की फली की हरी सब्जी को खाने से बुढ़ापा दूर रहता है। इससे आंखों की रोशनी भी अच्छी होती है। सहजन को सूप के रूप में भी पी सकते हैं, इससे शरीर का खून साफ होता है। सहजन का सूप पीना सबसे अधिक फायदेमंद होता है। इसमें भरपूर मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। विटामिन सी के अलावा यह बीटा कैरोटीन, प्रोटीन और कई प्रकार के लवणों से भरपूर होता है, यह मैगनीज, मैग्नीशियम, पोटैशियम और फाइबर से भरपूर होते हैं। यह सभी तत्व शरीर के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी हैं। सूप बनाने के लिये सहजन की फली को कई छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लेते हैं। दो कप पानी लेकर इसे धीमी आंच पर उबलने के लिए रख देते हैं, जब पानी उबलने लगे तो इसमें कटे हुए सहजन की फली के टुकड़े डाल देते हैं। इसमें सहजन की पत्तियां भी मिलाई जा सकती हैं। जब पानी आधा बचे तो सहजन की फलियों के बीच का गूदा निकालकर ऊपरी हिस्सा अलग कर लेते हैं, इसमें थोड़ा सा नमक और काली मिर्च मिलाकर पीना चाहिए। सहजन के सूप के नियमित सेवन से सेक्सुअल हेल्थ बेहतर होती है। सहजन महिला और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से फायदेमंद है।

With Best Compliments From

Shrikant G. Mantri

Member : The Stock Exchange, Bombay

Surya Mahal, 2nd Floor, Nagindas Master Road
Fort, Mumbai - 400 001, India
Tel. : 022-2261 8384, 2267 2526
6635 9003, 6635 9004, Fax : 022-22623198
E-mail : sgmantri@usa.net
Resi. : 022-26184126, 2614 4933
Mo. : 98210-26725

सदा तंदुरुस्त रखेंगी 7 दिन की 7 औषधियाँ

वर्तमान दौर में अनियमित दिनचर्या व प्रदूषित वातावरण ने स्वास्थ्य के सामने कई चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। कई ऐसी-ऐसी बीमारियाँ तैयार हो बस हमारी लापरवाही का इंतजार कर रही है। ऐसे में भी हम रह सकते हैं, सदा स्वस्थ्य तंदुरुस्त, बस 7 दिन की 7 औषधियों का सेवन करके। आइये जानें क्या करें हम।

प्रो. के.डी. सोमानी, उज्जैन

वर्तमान दौर में न सिर्फ वातावरण प्रदुषित हुआ है, बल्कि व्यावसायिक व्यस्तता के कारण हमारी सम्पूर्ण दिनचर्या भी अनियमित हो गई है। इन सभी का मिलजुला रूप हमारे सामने विभिन्न बीमारियों के रूप में आता है। वैसे तो इनसे पूर्ण बचाव के लिये नियमित दिनचर्या व स्वच्छ वातावरण जरूरी है, लेकिन वर्तमान दौर में इनकी पूर्ण आदर्श स्थिति संभव नहीं।

रोज 10 मिनिट अपने आपको दें

वर्तमान की चुनौती पूर्ण जीवन शैली में हम यदि स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो हम कम से कम 10 मिनिट अपने आपको दें। इसके लिये पूरे सप्ताह की योजना बनाऐं। आयुर्वेद ने 7 ऐसी जड़ी-बुटी बताई हैं, जिनका क्रम से 7 दिनों तक यदि सेवन किया जाऐ तो हम हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं। इसके लिये इन औषधियों को प्रतिदिन गुनगुने पानी से लें। यह औषधि हमें केवल एक बार ही लेना है।

किस दिन लें हम क्या?

पहला दिन- सोमवार- हल्दी- यह त्वचा लीवर, रक्त से जुड़ी समस्याओं और शरीर में ट्यूमर बनने से रोकती है। करक्यूमिन नामक एल्कलाइट हल्दी का सबसे प्रभावी औषधीय तत्व है जो अस्थमा, साइनोसाइटिस और खांसी से बचाव करता है।

दूसरा दिन-मंगलवार- पुनर्नवा- यह किडनी और लीवर के रोगों से बचाने में बेजोड़ दवा है। यह पथरी को निकालने में बहुत मददगार है।

तीसरा दिन-बुधवार- तुलसी- यह एक उपयोगी एंटी ऑक्सीडेंट है। इसलिए बुढ़ापे को धीमा करती है। यह ब्लड के पीएच को एसिडिक नहीं होने देती जिससे ब्लाकेज नहीं बनते और हृदय स्वस्थ बना रहता है।

चौथा दिन-गुरुवार -दालचीनी- इसके नियमित सेवन से जोड़ों के दर्द को फायदा मिलता है, यह मेटाबालिज्म को बढ़ाती है। इसलिए वजनी लोगों को इसका प्रयोग जरुर करना चाहिए।

पांचवा दिन- शुक्रवार-अश्वगंधा- यह थायराइड की समस्या से बचाती है। इसके एंटीस्ट्रेस तत्व तनावमुक्त करने में मदद करते हैं। अश्वगंधा महिलाओं में हॉर्मोन्स के स्राव को नियमित करती है। माहवारी की समस्याओं में भी उपयोगी है।

छठा दिन-शनिवार-ब्रह्मी- इसके सेवन से दिमाग में सेरोटोनियम का स्तर बढ़ता है जिससे शांति मिलती है। यह यादगार बढ़ाने में भी मददगार होती है। हृदय से जुड़ी बीमारियों से बचाव होता है।

सातवां दिन रविवार-गुडूची- इसे गिलोय भी कहते हैं। यह शरीर के भीतर सफाई करके लीवर और किडनी के कार्य को सुचारु बनाती है। डेंगू से बचाव में भी बहुत कारगर है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Nandini Traders

Grain Marchant & Commission Agent

State Bank Road, Karanja (Lad) Dist. Washim (Akola Marchant)

Ph. : 07256-223042, Mobile : 9764274285

नंदिणी इन्टरप्राइजेस

पंताजली आयुर्वेद के थोक विक्रेता

स्टेट बैंक रोड, वर्धमान प्लाजा,

कारंजा (लाड) - जिला वाशिम - 444105

शेषनारायण देविलीशन धूत

गांव में बेटियों के विवाह से कॅरियर होता है प्रभावित

भ्रम है या सच्चाई?

वर्तमान दौर में जब नारी भी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कॅरियर के पथ पर आगे बढ़ रही है। ऐसे में अधिकांश शहरी बेटियां गांवों में विवाह नहीं करना चाहतीं। इसके पीछे उनके मन में भय है कि गाँव में विवाह किया तो उनका कॅरियर प्रभावित हो जाऐगा। ऐसे में यह विचारणीय हो गया कि इस कारण पर चिंतन करें आखिर हमारी शहरी बेटियों की यह सोच वास्तव में भ्रम है या सच्चाई? यह विषय समाज का एक अत्यंत ज्वलंत मुद्दा बन चुका है। गाँव में स्वच्छ पर्यावरण व तनावमुक्त जीवन मौजूद है। साथ ही अधिकांश माहेश्वरी परिवार आर्थिक रूप से भी सुदृढ़ हैं। फिर भी यह स्थिति है। ऐसे में इस विषय पर सामाजिक चिंतन अनिवार्य है। आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

सकारात्मक सोच की आवश्यकता

गांव के रहन-सहन का स्तर और पिछड़ेपन की छवि हम सभी के मन-मस्तिष्क में बैठ गई है। यही कारण है कि शहर में पली-बढ़ी बेटियां गांव में विवाह करने और घर बसाने से कतराती हैं। विशेषकर पढ़ी-लिखी कैरियर बनाने की चाह रखने वाली बेटियां। कुछ हद तक यह सही भी है कि उच्च-शिक्षा प्राप्त लड़कियों को गांव में उनकी शिक्षा और प्रतिभा के अनुसार कार्यक्षेत्र नहीं मिल पाता है। उनकी प्रतिभा, उच्च-शिक्षा और कार्यक्षमता को आसमां छूने के अवसरों का अभाव होता है। बस इन कुछेक अपवादों को छोड़कर शहर की बेटियों की गांव में विवाह ना करने की दलील बेबुनियाद है। आज गांवों में भी बहुओं को उनकी इच्छानुसार कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता मिल रही है। पति एवं परिवार उसके निजी अस्तित्व खुशी-खुशी स्वीकार रहे हैं और यथासंभव सहयोग भी कर रहे हैं। इतना ही नहीं शहरों की अपेक्षाकृत बेटियों को गांव में सामाजिक सहयोग भी अधिक मिलता है। गांव के लोग भी नई तकनीक एवं नए विचारों से जुड़कर आगे बढ़ना चाहते हैं इसलिए अगर कोई विकसित कदम बढ़ाता है तो गांव के लोग उसे सहर्ष स्वीकार ही नहीं करते बल्कि उसका सहयोग भी करते हैं। इन सबसे ऊपर एक बात स्मरण रखें कि जहां चाह वहां राह। निश्चित ही धीरे-धीरे गांव भी शहर समान विकसित हो जाएंगे। अगर हम भी अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझकर अपनी शिक्षा और ज्ञान से गांव के विकास में थोड़ी मदद करें तो इससे हमें आत्मिक और मानसिक संतुष्टि मिलेगी। अपना जो नाम और पहचान आप शहर की लाखों की भीड़ में नहीं कमा पाएंगे वो आप गांव में आसानी से अर्जित कर सकते हैं।

■ **सुमिता मूंधड़ा**, मालेगांव

सुविधाजन माहौल ही पसंद

आज का विषय 'गांव में बेटियों के विवाह से केरियर होता है प्रभावित यह भ्रम है या सच्चाई?' आज के समय में आज की युवतियों का बहुत ही ध्यान देने वाला विषय बन गया है। जैसे ही पढ़ाई पूरी हुई बालिका के विवाह करने की चर्चा घर, समाज में शुरू हो जाती है और इस विषय में बेटी, बालिका से पूछने पर आज की घर की 90 प्रतिशत बेटियों का कहना और विचार अभी जॉब अनुभव लेने का होता है। यदि जॉब नहीं भी तो कुछ ऐसा केरियर ऑपरच्युनिटी के लिए होता है जिसमें उनकी उच्च शिक्षा का सदुपयोग हो सके। यह सब प्राप्त करने के लिए उन्हें बड़े पैमाने के उद्योग या जॉब फेयर्स की एवेबिलिटी बहुत आवश्यक होती है और यदि कोई जॉब नहीं भी करना चाहती है तो भी गांव में शादी करना पसंद नहीं करती है। चाहे वह गांव में ही जन्मी हो, पली-बढ़ी हो, वह शहर में ही शादी करना पसंद करती है। जिस वातावरण, सुविधाओं में बड़ी हुई, उससे अच्छे सुविधा जनक वातावरण, माहौल में ही जाना पसंद करेगी। 80 से 90 प्रतिशत लड़कियों की यही राय है, जो आज अच्छा पढ़ लिख गई हैं। आज हमारे समाज की बेटियां परिवार में हर प्रॉब्लम्स का कंधे से कंधा मिलाकर सामना करने के लिए तैयार हैं। आज बेटियां बेटों से कम नहीं है। वह अपनी अलग पहचान बनाना चाहती हैं।

■ **पूजा काकानी**, इंदौर

गाँवों की भी अपनी हैं खूबियाँ

गाँवो में बेटियों के विवाह से कॅरियर प्रभावित होने की मानसिकता का गहरा प्रभाव हमारी सामाजिक बनावट पर पड़ा है। उच्च शिक्षित लड़कियाँ जिनकी बड़ी कंपनी में जॉब है। वे गाँव की ओर रुख नहीं करना चाहती। कोई भी लड़की चाहे वो कस्बे, गाँव, छोटे शहर से हो एवम तकनिकी शिक्षित न भी हो तो भी उसे महानगर में जॉब करने वाला ही लड़का चाहिये। सहनशीलता की कमी एवम घरेलू कार्य में अरुचि ने परिवार को बंधन मान लिया गया है। अतः माता-पिता भी यही सोच रखते हैं कि लड़का शहर में अकेला हो, परिवार चाहे गाँव में रह रहा हो. गृहणी को उपेक्षित माना जाता है। एक कामकाजी से उसे तुच्छ माना जाता है। अतः अगर नौकरी करना ही श्रेष्ठ है तो वह उस सम्मान को पाना चाहती है। अच्छा व्यवसाय होने पर भी लड़कियाँ गाँवों में शादी नहीं करना चाहती और समृद्ध परिवार के लड़के भी जो व्यवसाय निपुण हैं उनके लिये भी लड़कियाँ नहीं मिल रही हैं। लड़कियों को भी यह समझना चाहिये कि खुशियाँ प्यार अपनेपन और परिवार की आत्मियता से मिलती हैं। परिवार में पति-पत्नी के बीच होने वाले आपसी मतभेद और तलाक जैसी स्थितियों से दूर रहा जा सकता है एवम बच्चों के लालन पालन में भी परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस तरह गाँव या छोटे शहरों में भी सकून के साथ सरल एवम सुखी जीवन जिया जा सकता है। अपनी प्रतिभा के रंग कॅरियर के रूप में गाँव में भी बिखेर सकती हैं। अपने ही व्यवसाय को आकाश तक पहुँचा सकती हैं। सोच की दिशा बदलनी ही होगी।

■ **पूजा नबीरा**, काटोल नागपुर

प्रदूषण मुक्त स्वस्थ जीवन

गांव में जीवन प्रभावित होता है यह मात्र वर्तमान पीढ़ी की युवतियों का भ्रम है और शहरों का आकर्षण तथा महज एक आधुनिक मानसिकता। आज की पीढ़ी केवल वर्तमान में जीना पसंद करती है, पर भविष्य की योजना का निर्धारण भी जरूरी होता है। आज गांव में सभी सुख-सुविधा पूरी तरह उपलब्ध हैं, यातायात के साधन मौजूद हैं। हर गांव के करीब अच्छी से अच्छी शिक्षण संस्थाएं है और गांव में भी सभी परिवार शिक्षा को लेकर पूर्णतः जागरूक है। शिक्षा का अर्थ मात्र स्वयं का विकास ना होकर सम्पूर्ण परिवार और समाज का विकास है। गांव में अपनों के साथ जीवनयापन करने से आनेवाली भावी पीढ़ी को जो अमूल्य संस्कार स्वस्थ खान पान व शुद्ध पर्यावरण मिलता है, वो स्वास्थ्य वर्धक होता है। वहीं शहरों में भागमभाग के चलते बच्चे इनसे वंचित रहते है। माता-पिता मात्र आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने में व्यस्त रहते है। जिसके चलते वह पर्याप्त समय बच्चो को नहीं दे पाते उनका अधिकांश समय शहरों की भीड़ में एक जगह से गंतव्य तक पहुंचने में ही नष्ट हो जाता है। बच्चे पालना घर, आया के भरोसे रहते हैं, जिससे उनके विकास में आत्मीयता का अभाव साफ नजर आता हैं। आज यही वजह है, दिशाहीन पीढ़ी जन्म ले रही है। गांव में रहकर भी सुचारू रूप से युवतियां अपने आप को विकसित कर सकती हैं। शहरों के मशीन रूपी जीवन की भागदौड़, अनियमित दिनचर्या और उसके चलते कम उम्र में स्वास्थ पर होने वाले विपरीत प्रभाव इस से बेहतर गांव का शांतिपूर्ण वातावरण है। युवतियां गांव में रहकर भी आसपास के संलग्न शहरों में कैरियर को अंजाम दे सकती है और मात्र धनार्जन ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। वास्तव में परिवार की आवश्यकता क्या है? इसे प्राथमिकता दी जाए तो जीवन महक उठेगा।

■ **राजश्री राठी**, अकोला

रोजगार देने वाली बनें

माहेश्वरी समाज पढ़ा लिखा, सुसंस्कृत, सभ्य, परम्परावादी, व्यापार करने वाले व दूसरों को रोजगार देने में समर्थ के रूप में पहचाना जाता हैं। आप अपने ज्ञान का उपयोग अगर छोटे गाँव से करते हो तो आप की अलग पहचान होती है। आप अपनी बुलन्दियों को छू लेते हो। हमे गाँव की ओर देखने का नजरिया बदलना चाहिये। खुद को बदलकर समय के साथ और अपने संस्कारो को लेकर चलना चाहिए। अगर आप में हुनर है तो जिंदगी में आपको कोई नही रोक सकता। परेशानी होगी, रुकावटें होगी मगर आपको रोक नही सकतीं। लोग क्या कहेंगे ये सोचने से ज्यादा, क्या ये सही होगा ये खुद से पूछें और आपको अगर अंतरात्मा का जवाब मिल जाए तो बेझिझक आगे बढ़ें। अपने गाँव के बच्चे बाहर ना जाए वो गाँव मे रहकर अपना और अपने समाज के साथ ही साथ गाँव का नाम रोशन करें। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति छोटे गाँव में जल्दी पूरी होगी, साथ ही साथ सही आयु में शादी होगी और गाँव का लड़का भी कुँवारा नही रहेगा।

■ **अनिता ईश्वरदयाल मंत्री**, अमरावती

गाँवों में भी कॅरियर निर्माण सम्भव

यद्यपि भारत गाँवो का देश कहलाता है किन्तु अब यह 21 वी सदी का भारत है। जहाँ गाँव भी उन समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण हैं जो शहरों में उपलब्ध है। कॅरियर सम्बन्धी समस्त व्यवस्थायें गाँव में भी प्राप्त होने लगी हैं। सामाजिक सोच में काफी परिवर्तन हुआ है। ग्रामीण जन भी बहु-बेटियों के केरियर निर्माण में सजग है। गाँवों में भी ऑन लाइन शिक्षण प्रशिक्षण की समग्र व्यवस्थाओं के प्रति लोग जागरूक हो गये है। शिक्षा, चिकित्सा, शासन-प्रशासन आदि क्षेत्रों में गाँव की बहू-बेटियाँ भी कार्यरत हो रही हैं। कई क्षेत्रों में ग्राम्य जन-जीवन प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। अगर बेटियाँ यह सोचती है कि गाँव में शादी कर लेने पर कॅरियर प्रभावित हो जाता है, तो अब ऐसा नहीं है। ग्रामीण जन भी काफी जागरूक है। तुलनात्मक दृष्टि से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राम्य जीवन शहरी जीवन से अपेक्षाकृत अधिक सुखमय हो गया है। लोगों में परस्पर सहयोग, स्नेह, सद्भाव तथा सहिष्णुता व्याप्त है। परस्पर सहयोग द्वारा आगे बढ़ने की ललक भी रहती है। शहरी जीवन की अपेक्षा गाँवों का वातावरण अब अधिक हितकर बन गया है। एक समझदार बेटी जब बहू बनकर घर में आयेगी तो वह अपने कार्य व्यवहार, अपनी निजी प्रतिभा तथा सूझबूझ के साथ पारिवारिक परिवेश में परिवर्तन करते हुए अपने कॅरियर निर्माण हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण भी कर सकेगी। इससे उसके केरियर के लिये द्वार खुल सकेंगे।

■ **हिमांशु माहेश्वरी**, आगूचा

भ्रम है सबसे बड़ी परेशानीं

गाँव में बेटियों के विवाह से कॅरियर (भविष्य) प्रभावित होता है,यह मात्र भ्रम है! सच्चाई और वास्तविकता तो यह है कि आज की शिक्षा ने मनुष्य को मात्र धनोपार्जन का साधन और नौकर बना दिया है, जिसके कारण शहरीकरण को बढ़ावा मिला है। गाँवों की महत्ता कम होती जा रही है। नगरों की अपनी बहुत सी समस्यायें हैं, परन्तु भौतिकवादिता और चकाचौंध की जीवन शैली को आज का समाज अपनाता जा रहा है। इसी कारण वश गाँवों की ओर युवा पीढ़ी का आकर्षण कम हो रहा है, विशेष कर बेटियों, युवतियों का। कोविड-19 जैसी महामारी ने सोच में कुछ बदलाव अवश्य किया है। इस महामारी की चपेट में गाँवों से अधिक शहर और महानगर ही आये हैं। उन्नत तकनीक व सञ्चार माध्यमों के कारण और घर से ही काम करने की विचारधारा के कारण अब नौकरी करने वाले कहीं से भी काम करने के लिये मुक्त हो गये हैं। शहरों के अनाप शनाप खर्चो से भी मुक्ति मिल गयी है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। हो सकता है, इसी प्रकार की किसी घटना दुर्घटना से जीवन चक्र में पुनः परिवर्तन आए। विशेष कर बेटियों का दृष्टिकोण बदले।

■ **महेश कुमार मारू**, मालेगाँव

कॅरियर प्रभावित तो होता है

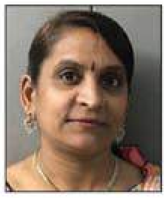

गाँव में बेटियों के विवाह से कॅरियर प्रभावित होता है। यह तो सच्चाई है। उन्हें अपना कॅरियर बनाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ये भय पालना कि विवाह के पश्चात हम अपने कॅरियर में आगे नहीं बढ़ सकते ये हमारा भ्रम है। कहते हैं न, जहाँ चाह वहाँ राह है। अगर हममें कुछ करने का जुनून है, तो हम अपना कॅरियर कहीं भी बना सकते हैं। फिर चाहे वो गाँव ही क्यों न हो। आजकल टेक्नॉलाजी का उपयोग हर गाँव में हो रहा है। गाँव के लोग इसका उपयोग करके अपने कॅरियर को आगे बढ़ा रहे हैं। परंतु गाँव में कई लोग बदलते परिवेश में अपनी दकियानुसी सोच में बदलाव नहीं ला पा रहे हैं। पुराने विचारों के

साथ बेटियों को रहन-सहन और कॅरियर बनाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अगर गाँव के लोग अपने विचारों में परिवर्तन के साथ ढाल बनकर बेटियों को सपोर्ट करें तो शायद शहर की बेटियों को गाँव में विवाह करने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। इससे बेटियों की सोच में भी बदलाव आऐगा।

■ **किरण कलंत्री**, रिणुकूट

सोच बदलना भी जरूरी

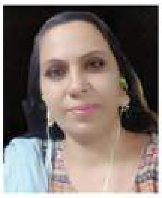

गांव में जीवन अधिक सहज सरल प्रदूषण मुक्त और तनाव मुक्त होता है, यह एक सच्चाई है। किन्तु शहर में नौकरी के अवसर अधिक होते हैं। यह भी एक सच्चाई है। किन्तु कैरियर केवल नौकरी करने से ही बनता है यह भ्रम है। लड़कियां गांव में विवाह नहीं करना चाहती। बात अगर धन कमाने की है तो गांव में स्वरोजगार के कई साधन मौजूद हैं। किन्तु आज की शिक्षा व्यवस्था अधिकांशतः नौकरी करना ही सिखाती है। वैसे नौकरी के लिए भी अब तो घर से ऑनलाइन काम की सुविधा है। गांव में बिजली, पानी, सड़क जैसी बुनियादी सुविधाएं भी अब पूरी हैं। फिर भी लड़कियां और उनके परिवार वाले गांव में रिश्ता नहीं जोड़ना चाहते। यह बहुत हद तक सोच की संकीर्णता और चकाचौंध की ज़िंदगी के प्रति मोह के कारण हैं। इसमें सारी गलती लड़की की ही नहीं है। इसके लिए उनकी सुनी हुई ग्रामीण जीवन की कहानियां भी जिम्मेदार हैं। आज भी कई परिवार जो छोटे गांव में रहते हैं, वो स्त्री की आत्मनिर्भरता विरोधी सोच रखते हैं। कमाई ना करने के साथ साथ और भी कई तरह की बंदिशें बहू पर लगाई जाती है। कुछ लोगों की इस सोच का नतीजा सभी उन परिवारों को भुगतना पड़ता है, जिनकी सोच ऐसी नहीं हैं। इस समस्या के समाधान के लिए दोनों पक्षों का सोच बदलना जरूरी है। लड़की के परिवार को गांव के प्रदूषण और तनाव मुक्त वातावरण के लाभों के बारे में भी सोचना चाहिए। लड़के वालों के लिए जरूरी है कि वो लड़की के घर वालो को विश्वास दिलाएं कि वो उनके कलेजे के टुकड़े को पूरा मान सम्मान, दुलार, आगे बढ़ने के अवसर देंगे। तभी उन्हें अपने घर की लक्ष्मी उनकी कुल वधू मिल पाएंगी।

■ **नम्रता माहेश्वरी**, पाली राजस्थान

भौतिक चकाचौंध से निकलना होगा

भौतिक सुखसुविधा की चकाचोंध से आज कोई अछुता नही है। आज हर लड़की सुखपूर्वक और सुविधायुक्त जीवन की चाह रखती है। आजकल की लड़कियाँ गांव में शादी नही करना चाहती है। वह अपना करियर बनाना चाहती है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर बड़े पदों पर पहुँच रही है, जिससे उनके होंसले बुलंद हो गए हैं। उनको लगता है कि गांव में पर्याप्त सुविधाए नही होती है और गांव के लोगों की मानसिकता भी पिछड़ी हुई है। उन्हें लगता है कि वे लोग उनको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित नही करेंगे। पर समय के साथ-साथ गांव भी आधुनिक हो रहे है। शिक्षा का प्रचार, सड़क बिजली, अस्पताल, वाहन आदि की सुविधाओं के कारण गांव में रहना उतना कठिन नही रहा। आज कल गांव के लोग भी शिक्षा के महत्व को समझने लगे है। वे अपनी बेटियों को पढ़ा लिखा रहे है और उच्च शिक्षा के लिए बाहर भेजने लगे है। आजकल माता-पिता भी अपनी बेटी की शादी गांव में नहीं करना चाहते है। लड़का उच्च पद पर हो तो ये सोचते है कि लड़की को गांव बहुत कम जाना पड़ेगा। जहाँ लड़का कार्यरत हो वही रहेगी। ऐसे अनेक उदाहरण है, जहाँ शहर की लड़की पैसे और समृद्धि के कारण गांव मे शादी तो कर लेती है मगर उसके बाद शहरो मे बसकर गांव से पूरी तर कट जाती है। पति को भी शहरी बना देती है। लोगो को अपनी सोच बदलनी होगी क्योंकि पृष्ठभूमि शहरी या ग्रामीण होने से सबकुछ नही बदलता।

■ **रेखा मोदी**, श्योपुर (म.प्र.)

गलत धारणा बाधक

कहा जाता है कि दूसरों की थाली में घी ज्यादा दिखता है, यह बात यहाँ बिल्कुल सत्य प्रतीत हो रही है। हम सब लोगों के मन में लंबे समय से यह धारणा बनी हुए है कि गाँव से बेहतर शहर है तथा शहर से बेहत्तर विदेश। लेकिन हमने कभी यह नही सोच कि गाँव को शहर तथा शहर को विदेश भी बनाया जा सकता है। तैयार मिठाई खाने के लिए अनेक लोग मिल जाएंगे किन्तु उसे तैयार करने वाले कुछ गिने चुने ही मिलेंगे। ठीक इसी तरह शहर की बनाई हुई अर्थव्यवस्था पर नाज करने वाले बहुत हैं पर गाँव को सुधारने का काम कोई नही करना चाहता। बेटियों को हम सृजक कहते हैं, वह हमेशा एक नए घर की सृजना करती है। एक पढ़ी लिखी बेटी गाँवों मे जाकर अपने घर, परिवार, समाज तथा गाँव को सुशिक्षित करके सबका कॅरियर बना सकती है। गांवों में शादी करने से बेटियों का कॅरियर प्रभावित होता है, यह सिर्फ हमारा भ्रम है। शहर से ज्यादा गाँवों में स्वच्छ हवा-पानी मिलती है तथा तकनीकी वस्तुओं की सारी सुविधाएं उपलब्ध है। बस हमे अपने बेटियों के मन की यह धारणा बदलनी होगी, जिसका काम माता-पिता को ही करना होगा। अगर हम नींव को मजबूत कर देंगे तो हमारी बेटियां अट्टालिकाएँ खड़ी कर सकती है।

■ **संदीप श्यामसुंदर लढ़ा**, कोलकाता

दीप पर्व पर सभी समाज बन्धुओं को
हार्दिक शुभकामनाएँ

ओमप्रकाश कुंजी लाल भैय्या

Govt. Contractor & Building Material Supply

Ph. : 0721-2660046
Mo. : 9822200631

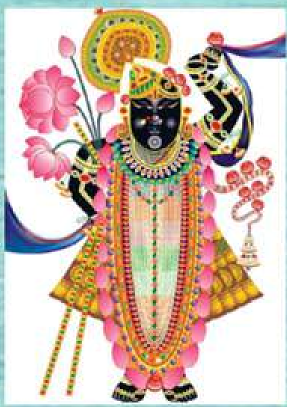

श्रीनाथ दाल मिल

A-35, Near Aanand Marbles, MIDC, Amravati
Ph. : 0721-2520013, 2520699

पियुष ओ. भैय्या
9822731007

अखिलेश अ.भैय्या
9823231276

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

कोरोना में दीपावली किकर मनावा

खम्मा घणी सा हुक्म दीपावली भारतीय संस्कृति रो प्रमुख त्यौहार जो आपा सब घर परिवार समुदाय रे बीच मनावण री खास परम्परा रही है। इन्हे इण साल मनावण खातिर कोरोना से बढ़ते संक्रमण री वजह सूं उत्सव-शैली में बदलाव जरूरी है ताकि यो लगाव और आदर,प्यार आगे भी बरकरार रेहवे ।

कोरोना काल मे पूजा घर पर ही करण री प्राथमिकता देवें। सम्भव हो तो पंडित आदि ने बुलाया बिना इण बार खुद पंडित बण जाओ। पंडित जगह-जगह पूजा करावतो कोरोनो भी साथे ला सके। सावचेती भली हुक्म। गर्भवती,और बच्चों ने तो खास तौर पर भीड़ वाली जगह सूं बचणों चईजे। मिठाइयों और पकवानों में बाहर री बणी वस्तुओं पर निर्भर रेह्नो ठीक नहीं...सम्भव हो घरे ही बनावें क्योंकि बाहर सूं बनण वाळी मिठाई पता नहीं किन किन लोगा रे हाथों सूं निकल ने आवें ... एड़ा में संक्रमण रो खतरों और बढ़ जावें। इण बार खाजा, हाँकडी, फाफडी, खजूर, दहीबड़ा, मीठा खाजा, गाल री सेवा बणा ने मूल वतन मारवाड़ री याद ताजा करो हुक्म।त्योंहार रो रंग भंग न हूँ जावे इण वास्ते जरूरी है छोटा छोटा उपाय ने पुरों ध्यान राखणों जरूरी है।

इण बार हुक्म बच्चों रे साथे सगळा ने पटाखों सूं दूर रेह्नो ..या ही सलाह सब प्रतिष्टित डॉक्टर दे रिया है कि कोरोना सबसूं ज्यादा फेफड़ों पर असर डाल रियों है। पटाखों रो शोर और धुओं आपाणी सांसो और फेफड़ों ने प्रभावित कर सकें। इण वास्तें खुद रे साथे घर परिवार और समुदाय ने सुरक्षित राखण वास्ते पटाखों सूं दूर रहवों। देश मे व्यवसायिक अवसाद चले कोई विदेशी चीज़ मत ख़रीदजो हुक्म। देश रे भाई बन्धु रो माल बिकी, वे आगे बढ़ी तो घर रो पैसों घर मे रेई हुक्म।

हुक्म इण बीमारी री वजह सूं कई परिवार पलायन कर गया और कई परिवार आपाणे कने भी आया हुवेला ...मदद रे वास्ते.. तो कोशिश करा यदि कोई परिवार अपने आसपास दिखे तो यथा संभव विनी मदद करा ताकि वो परिवार भी दिवाली रो आंनद ले सके हुक्म कीन्हेहि दियोडी आत्मीय खुशी आपाणे त्यौहार री खूशी कई गुना खुशियां सूं भर देवेला। आपणे तो तुलसी बाबा केयो भी है- पर हित सरिस धर्म नहीं भाई।

हुक्म एक बात और ..आप सबसूं विनती है इण बार दीपावली ने खूब शुद्ध घी रा दीपक ,कपूर,सरसों रो तेल कोई भी जलाने माँ लक्ष्मी सूं विश्व री मंगलकामना करा.. हे माँ जल्द सूं जल्द इण कोरोना बीमारी सूं मुक्ति दिलावों कोरोना बीमारी सूं फेलयोडो रोग सूं विश्व मे अंधकार मिटे और उजाले री नई खुशियां और सुख समृद्धि चारों और हुवे।।

एक बार फिर हुक्म आप सगळा ने दीपावली री हृदय मन सूं मोकळी बधाई।

स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- बेरंग जिंदगी में रंग भर जाते हैं !
  फरिश्ते जब दोस्त बनकर आते हैं !

- किसी को क्या हासिल होगा, मुझे याद करने से,
  मैं तो एक आम इंसान हूँ, और यहाँ तो हर किसी को,
  खास़ की तलाश है..!

- वक्त से लड़कर जो खुद निखर लें,
  इंसान वहीं जो अपनी तकदीर बदल लें।

- कल क्या होगा कभी मत सोचो,
  क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल लें।

- माना की वक़्त, सता रहा है
  मगर कैसे जीना है, वो भी तो बता रहा है।

- लफ्ज़ करेंगे इशारा जाने का
  तुम आँखें पढ़ना और रुक जाना.

- क्या तुझे वो सब सुनाई देता है,
  जो हम तेरी तस्वीर से बातें कहा करते हैं।

कार्टून कौतुक

खुश रहे - खुश रखें

सुख की भी अपनी पीड़ा होती है और पीड़ा का भी सुख होता है

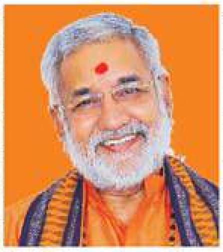

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

दुख कोई नहीं चाहता इसीलिए सुख के पीछे हर कोई भागता है। दुख मिलता है तो पीड़ा होती है, लेकिन सुख मिलने पर सुकून मिल ही जाए यह भी जरूरी नहीं। सुख की भी अपनी पीड़ा होती है और आध्यात्म समझाता है कि पीड़ा का भी अपना सुख होता है।

महाभारत के एक पात्र को समझा जाए जिनका नाम है 'भीष्म'। इनका सारा जीवन सुख की पीड़ा और पीड़ा के सुख के बीच में बीता। दोनों ही स्थितियों में इस व्यक्ति ने भगवान की भक्ति नहीं छोड़ी। ऊपर से भीष्म जितने सांसारिक दिखते थे, भीतर से उतने ही आध्यात्मिक थे। वे राजगद्दी से जुड़े हुए नजर आते थे लेकिन उनकी दृष्टि परम पद पर टिकी हुई थी। स्वयं राजा थे, कई राजाओं को बनाने और बिगाड़ने वाले थे। वे यह जानते थे कि- वो एक शख्स जो तुझसे पहले तख्तनशीं था, उसको भी अपने खुदा होने का उतना हीं यकीन था।

न तख्त रहते हैं न ताज। बड़े-बड़े राजा आम आदमी की तरह दुनिया से चले जाते हैं। भीष्म का अपना बड़ा परिवार, कुनबा या कुटुंब था, सारे सुख थे उनके पास, पर उतनी ही पीड़ा भी थी। वे दुर्योधन को नियंत्रण में नहीं रख पाए। कुरुवंश की नई पीढ़ी उन्हीं के सामने अमर्यादित हो गई। यह सुख की पीड़ा है। इसी में से उन्होंने पीड़ा का सुख भी उठाया। यह दृश्य आज भी कुछ परिवारों का हो सकता है लेकिन भीष्म ने हमें अपने चरित्र से बताया है कि मनुष्य छिपा हुआ परमात्मा है। एक तरह से परमात्मा का बीज है, मनुष्य। परमात्मा खिला हुआ रूप है और मनुष्य अधखिला परमात्मा।

हर एक के भीतर परमात्मा है बस, 'मैं' का भाव हटाओ कि ईश्वर प्रकट हो जाएगा। सुख की पीड़ा तो उन्होंने बहुत देखी थी। जब अंतिम समय वे शरशैया पर थे तो उनकी मृत्यु की गवाही देने श्रीकृष्ण स्वयं उपस्थित हुए थे। यह पीड़ा का सुख था। किसी भी परिवार के मुखिया के लिए भीष्म का जीवन अपने आप में एक सबक है, एक शिक्षा है, एक प्रबंधक है। चाहे तो हम भी इस सुख को उठा सकते हैं। बस इतना कीजिए, जरा मुस्कुराइए...।

KHANA KHAZANA

चॉकलेट नारियल लड्डू

सामग्रीः चॉकलेट व्हाइट कम्पाउन्ड-200 ग्राम, सूखा नारियल पाउडर-50 ग्राम, क्रीम-2 टेबल स्पून, मक्खन-2 टेबल स्पून

विधिः चॉकलेट को बारीक काट कर माइक्रोवेव सेफ प्याले में निकाल लीजिए. चॉकलेट को 30 सैकड के लिए माइक्रोवेव कर लीजिए, प्याले को बाहर निकाले और चॉकलेट को अच्छे से चलाएं. अब चॉकलेट को फिर से 30 सैकड के लिए माइक्रोवेव कर लीजिए.

चॉकलेट को बाहर निकालें और इसे चलायें, थोड़ी देर तक चलाते रहें, चॉकलेट पूरी तरह मेल्ट नही हुई हो तो आप इसे 10 सेकिन्ड के लिए और माइक्रोवेव कर सकते हैं. चॉकलेट मेल्ट होकर तैयार है.

अब मक्खन को माइक्रोवेव में मेल्ट करके ले लीजिए. मक्खन को क्रीम में डालकर अच्छी तरह मिला लीजिए. अब इस मिश्रण को चॉकलेट में डालकर मिलाए, मिश्रण गाढ़ा होने लगता है. अब नारियल पाउडर डालकर सभी सामग्री को अच्छी तरह मिलने तक मिलायें. लड्डू बनाने के लिए मिश्रण तैयार है.

हाथों में थोड़ा-थोड़ा मिश्रण लेकर दबा-दबाकर गोल लड्डू बनाकर, नारियल के पाउडर में लपेटते हुए प्लेट में रखते जाइए. और इसी तरह सारे लड्डू बनाकर तैयार कर लीजिए.

पूनम राठी, नागपुर
9970057423

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'. जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है **डॉ. एच.एल. माहेश्वरी** की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon
जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - **"ऐसा क्यों?"** लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

देश ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चाय उद्योग में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले समाज के वरिष्ठ श्री रमाशंकर झंवर नहीं रहे। आपकी पहचान समाज में अ.भा. माहेश्वरी सभा के वरिष्ठ सदस्य तथा कोलकाता माहेश्वरी समाज के आधार स्तम्भ के रूप में थी। पूरे समाज व स्नेहीजनों ने स्व. श्री झंवर को अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम बिदाई दी।

नहीं रहे ''चाय उद्योग'' के महारथी श्री रमाशंकर झंवर

सभी चाय निर्माताओं के बीच में अपनी प्रतिष्ठित पहचान रखने वाले ख्यात उद्यमी व समाजसेवी श्री रमाशंकर झंवर का गत 14 अक्टूबर को देहावसान हो गया। श्री झंवर की समाज के बीच एक ऐसी विशिष्ट छवि थी, जिसने उन्हें एक समर्पित समाजसेवी के रूप में भी पहचान दी थी। श्री झंवर समाज के कई सामाजिक संगठनों से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध होकर समाज को अपनी निःस्वार्थ सेवा प्रदान कर रहे थे। आपके देहावसान से समाज में शोक की लहर फैल गयी। प्रादेशिक माहेश्वरी सभा अंतर्गत विभिन्न सामाजिक संगठनों के तत्वावधान में गत 19 अक्टूबर को सायं 6 बजे वर्चुअल शोक सभा का आयोजन कर स्व. श्री झंवर को श्रृद्धांजलि अर्पित की गई।

चाय उत्पादन में विशेष पहचान

सन् 1938 में जन्मे स्व. श्री झंवर का चाय उत्पादन के क्षेत्र में एक विशेष स्थान था। आप चाय उत्पादकों की शीर्ष संस्था इंडियन टी एसोसिएशन (आईटीए) के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे थे। व्यावसायिक रूप से आप विश्व के सबसे बड़े चाय उत्पादक ''विलियमसन मैगौर ग्रुप'' से सम्बद्ध होकर उसकी कई कम्पनियों में डायरेक्टर की भूमिका निभा रहे थे। आप चाय के प्लांटेशन से सम्बद्ध देश के शीर्ष संगठन कन्सल्टेटिव कमेटी फॉर प्लांटेशन एसोसिएशन, तथा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ प्लांटेशन मैनेजमेंट के चेयरमेन ''टी बोर्ड'' के वाईस चेयरमेन भी रहे हैं।

कई व्यावसायिक संस्थाओं से सम्बद्ध

स्व. श्री झंवर दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकांउटेंट्स लंदन के सदस्य थे। प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान ''कोलकाता बिजनेस स्कूल'' के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स मेम्बर तथा दी एग्री हार्टिकल्चुरल सोसायटी ऑफ इंडिया के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट भी थे। आप इंडो-अमेरिकन चेम्बर ऑफ कॉमर्स ईस्ट इंडिया काउंसिल में अध्यक्ष रहे एवं आपने इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी), बंगाल चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (बीसीसीआई), दी कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज (सीआईआई) और फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री (एफआईसीसीआई) जैसी शीर्ष व्यावसायिक संस्थाओं को भी महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवा दी थी।

नहीं रहे ''संस्कारों के पारस'' श्रीकृष्ण बिरला

कोटा निवासी वरिष्ठ समाजसेवी राजस्थान सहकारिता आंदोलन के महानायक तथा संस्कारों का पाठ पढ़ाकर माहेश्वरी महासभा उपाध्यक्ष राजेश बिड़ला व लोकसभा अध्यक्ष ओमकृष्ण बिड़ला सहित अपने समस्त पुत्रों व समाज को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाने वाले ''संस्कारों के पारस'' श्री श्रीकृष्ण बिरला नहीं रहे। आप के देहावसान से सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र के साथ ही सहकारिता क्षेत्र को भी गहरा आघात पहुँचा है।

श्री बिरला का जन्म 12 जून 1929 को कोटा (राज.) जिले के कनवास गाँव में हुआ था। वर्ष 1930 से 1938 तक का बाल्यकाल ग्राम ठीकरिया जिला बून्दी में पिता श्री घासीलाल जी एवं माता श्रीमती पार्वती देवी के साथ व्यतीत किया। सन् 1947 में 15 अगस्त को आजादी का झण्डा फहराया। वर्ष 1948 में श्री ओंकारलाल बिरला कैथूनीपोल कोटा के यहाँ गोद चले गये। सन् 1948 में इकलेरा निवासी श्री राधावल्लभ जी एवं श्रीमती नरसिंगा बाई सोनी की सुपुत्री श्रीमती शकुंतला देवी के साथ 7 फरवरी 1949 को विवाह बंधन में बंधे।

कर्मचारियों के हित में आंदोलन की राह

वर्ष 1950 में मेट्रिक उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् दिसम्बर 1950 में कनवास तहसील में अंग्रेजी क्लर्क के पद पर नौकरी शुरू की। फिर कार्यालय अधीक्षक तथा फर्स्ट ग्रेड ओ.एस. के पद पर पदोन्नत हुए। सन् 1986 में कोटा में वाणिज्यिक कर विभाग कार्यालय में स्थानान्तरण हो गया। तब से सन् 1988 तक इसी विभाग में निरन्तर कार्य किया। समाज सेवा के क्षेत्र में श्री बिरला माहेश्वरी समाज के तीन बार अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् लगभग 26 वर्ष से अध्यक्ष पद पर आसीन रहते हुए कोटा कर्मचारी सहकारी समिति को घाटे से उबारकर राजस्थान में एक नई पहचान दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशिष्ट योगदानों के लिये कोटा में आपको सहकार पुरूष के नाम से भी जाना जाता है। उस समय यह संस्था घाटे मे चल रही थी और सरकार भी इसे बंद कर देना चाहती थी।

पूरे परिवार ने संभाली विकास की डोर

आपके पीछे आपके परिवार में 6 पुत्र एवं 3 पुत्रियों का पौत्र - पौत्री तथा नाती-नातिन आदि से भरापूरा परिवार है। सबसे बड़े पुत्र राजेशकृष्ण बिरला व द्वितीय पुत्र हरिकृष्ण बिरला दोनों पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए सहकारिता से सम्बद्ध हैं। तृतीय पुत्र बालकृष्ण बिरला चम्बल फर्टिलाईजर में मैनेजर के पद पर निरन्तर कार्य कर रहे हैं। चतुर्थ पुत्र लोकसभा अध्यक्ष ओमकृष्ण बिरला है। पंचम पुत्र दयाकृष्ण बिरला मेडिकल व्यवसाय से सम्बद्ध हैं। सबसे छोटे पुत्र नरेन्द्रकृष्ण बिरला नगर निगम कोटा में पार्षद रह चुके हैं और वर्तमान में निजी व्यवसाय कर रहे हैं। पुत्र-वधुएं व पौत्र-पौत्री भी सफलता का ध्वज फहरा रहे हैं।

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए धन व लाभ मान-सम्मान देने वाला होगा। अधूरे कार्य पूर्ण होंगे, सुख साधनों में बढ़ोतरी होगी। कोर्ट एवं न्यायालय से संबंधित कार्य में प्रगति के योग बनेंगे। नौकरी में स्थान परिवर्तन तथा उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, रुका हुआ धन मिलेगा। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग मिलेगा, किंतु पारिवारिक उलझन यथावत बनी रहेगी। मित्र से सहयोग मिलेगा। शुभ समाचार प्राप्त होगा किसी विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। परिवार के साथ घूमने-फिरने में समय व्यतीत करेंगे। स्वास्थ्य सामान्य रूप से नरम-गरम बना रहेगा। विवाह संबंध से संबंधित कार्य पूर्ण होंगे। विद्यार्थियों के लिए शुभ समाचार मिलेगा।

वृषभ

यह माह आपको अपनी सूझबूझ से लाभ प्रदान करने वाला होगा। मांगलिक एवं शुभ कार्य पर व्यय होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सरकारी कामकाज से लाभ होगा। विवाह आदि में आ रही बाधाएं दूर होंगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। उन्नति के नवीन अवसर प्राप्त होंगे। परिजनों से भेंट होगी। संपर्क का लाभ मिलेगा सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। स्थान परिवर्तन होगा। नवीन कार्य व्यवसाय में वृद्धि होगी, परिश्रम से कार्यों में अनुकूलता प्राप्त होगी। जीवनसाथी से विवाद की स्थिति निर्मित होगी। शारीरिक कष्ट के योग बनेंगे। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन

यह माह आपके लिए मांगलिक कार्य करवाने वाला होगा। प्रसन्नता का वातावरण निर्मित होगा। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी जीवन में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मित्रों से वैचारिक मतांतर हो सकते हैं। राजकीय कार्यों में भी सफलता मिलेगी। अधिक खर्च के कारण ऋण की स्थिति बन सकती है। व्यस्ततम दिनचर्या बनी रहेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी, नवीन कामकाज एवं नवीन व्यवसाय से संबंधित योजना बनाई जाएगी एवं उसे मूर्तरूप देंगे। विद्यार्थियों के लिए इस माह विशेष परिश्रम के उपरांत लाभ प्राप्ति के योग रहेंगे।

कर्क

इस माह में आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। उन्नति के नवीन अवसरों की प्राप्ति होगी। मित्रों से सहयोग मिलेगा, अतिथि का आगमन होगा। वाहन सुख एवं मकान सुख में वृद्धि होगी। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता प्राप्त होगी। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। संतान की ओर से सुख मिलेगा शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे, शेयर मार्केट में लाभ के योग रहेंगे। फिर भी आपको सावधानी से कार्य करना उचित रहेगा। कामकाज की स्थिति बढ़ेगी, कार्य का विस्तार होगा। परिवार को समय नहीं दे पाएंगे। लंबी यात्रा के योग रहेंगे।

सिंह

यह माह आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। नया कार्य करेंगे, मनोकामना पूरी होगी। उन्नति के लिए प्रयास सफल होंगे किंतु संबंधों का लाभ नहीं मिल पाएगा। अपनों के प्रति गुस्सा रहेगा। वाहन क्रय करने के योग रहेंगे, स्वास्थ्य से संबंधित चिंता बनी रहेगी। जीवन साथी की ओर से भी तनाव महसूस करेंगे राजकीय कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। सहयोगियों से अनबन के योग रहेंगे। माता-पिता एवं बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा, आस्था एवं निष्ठा भाव रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।किसी की जमानत देने से बचे।

कन्या

इस माह में शुभ समाचार प्राप्त होंगे, अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। अतिथि का आगमन बना रहेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी सामाजिक यश बढ़ेगा। मनोरंजन पर खर्च करेंगे। व्यवसाय में साझेदारी शुभ रहेगी, यात्रा होगी किंतु संपत्ति से संबंधित विवाद उभर सकते हैं। माता के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी साक्षात्कार एवं परीक्षा में सफलता के योग रहेंगे। नवीन नौकरी के योग प्रबल बने रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए यह माह विशेष लाभकारी रहेगा।

तुला

यह माह आपके लिए बदलाव प्रदान करने वाला होगा। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल परिणाम देगा कार्य। व्यवसाय में विशेष उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों को कड़े परिश्रम के उपरांत लाभ प्राप्त होगा। वैवाहिक संबंध में आंशिक प्रतिकूलता की संभावना तो रहेगी, किंतु फिर भी दांपत्य जीवन का आनंद उठा पाएंगे। लंबी एवं धार्मिक यात्रा होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, उसी अनुपात में खर्च के भी योग रहेंगे। संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे, घर के किसी वरिष्ठ सदस्य को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी रहेगी। पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। विवाह संबंध तय होने के योग रहेंगे।

वृश्चिक

यह माह आपके लिए मांगलिक कार्य प्रदान करने वाला होगा। प्रसन्नता का वातावरण निर्मित होगा। शुभसमाचार मिलेंगे। विपरीत योनि की ओर आपका आकर्षण बना रहेगा। जीवन में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मित्रों से वैचारिक मतांतर संभावित है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, लंबी यात्रा के योग रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे, परिवार में धार्मिक एवं मांगलिक अवसर प्राप्त होंगे, विवाह संबंध निर्धारण के योग प्रबल रहेंगे। स्थाई संपत्ति में वृद्धि होगी, नवीन कार्य व्यवसाय प्रारंभ होने के योग रहेंगे, विशिष्टजनों से भेंट होगी।

धनु

इस माह में आपको धार्मिक कार्यों में विशेष रूप से भाग लेना पड़ेगा। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी, धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में अनुकूलता रहेगी। वाहन सुख प्राप्ति के योग रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे। सर्दी-जुकाम एवं शीत प्रकोप से संबंधित कष्ट के योग रहेंगे। खर्च की अधिकता रहेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर व्यय करेंगे। विद्यार्थियों व्यापारी बंधुओं को पुराने रुके हुए कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होने के योग रहेंगे। शीघ्र लाभ प्रदान वाले व्यवसाय से लाभ के योग रहेंगे।

मकर

यह माह आपके सोचे हुए कार्यों में सफलता प्रदान करने वाला होगा। स्थाई संपत्ति के निर्माण की रूपरेखा तैयार होगी। भाई का सहयोग प्राप्त होगा। चुनौती भरे कार्यों में पूर्ण रूप से सफलता अर्जित होगी। संतान की ओर से कुछ तनाव महसूस करेंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। बुरे-बुरे सपने/विचार आएंगे, चिंता नहीं करें। नवीन नौकरी के योग रहेंगे, किंतु मनचाहे पोस्टिंग नहीं मिल पाएगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। धार्मिक कार्यों में खर्च करेंगे, स्वादिष्ट व्यंजनों का लुफ्त उठाएंगे।

कुम्भ

यह माह आपके लिए ऋण के माध्यम से संपत्ति संपत्ति क्रय करने के योग प्रदान करने वाला रहेगा। वाणी की वजह से अपने कई बनते हुए कार्य बिगड़ जाएंगे। ठंडे रोग होने के योग रहेंगे। पति-पत्नी में सामान्य वैचारिक मतभेद रहेंगे। नौकरी में अनुकूलता रहेगी, भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। व्यावसायिक लंबी यात्रा के योग रहेंगे राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। तेजी-मंदी से संबंधित कार्य व्यवसाय से बचें। शासन की ओर से यश कीर्ति एवं सम्मान के योग रहेंगे। खर्च पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा फिर भी शुभ धार्मिक मांगलिक कार्यों में खर्च करेंगे।

मीन

यह माह आपके लिए विशेष चुनौती भरे कार्यों में सफलता प्रदान करने वाला रहेगा किंतु आपको अपने गुस्से पर भी नियंत्रण रखना उतना ही आवश्यक रहेगा। मानसिक तनाव का सामना करना पड़ेगा। अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। विपरीत योनि की ओर रुझान बढ़ेगा, प्रेम प्रसंग उभरेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। प्रशासनिक कार्य क्षमता पूर्ण रूप से परिलक्षित होगी एवं सफलता अर्जित करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में मनचाही सफलता नहीं मिल पाएगी। व्यय की अधिकता रहेगी, राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के योग रहेंगे।

इस बार करें पूर्ण शास्त्रोक्त सामग्री से लक्ष्मी पूजन

सुरक्षित दीपावली पूजन के लिए

ऋषिमुनि लक्ष्मी पूजन किट

कोरोना के खतरे के बीच इस वर्ष आपकी दीपावली पूजा सुरक्षित रहे। इसके लिए 'ऋषिमुनि क्रिएशन्स' ने पूजन सामग्रियों का एक विशेष बॉक्स तैयार किया है। इसमे लक्ष्मी पूजा की शास्त्रोक्त 43 वस्तुएँ हैं और पूजन विधि तथा आरती पुस्तिका भी है। सारी सामग्री हानिकारक रंगों से परे हर्बल, गुणवत्तायुक्त तथा प्रामाणिक है। कुल मिलाकर यह एक ऐसा बॉक्स है जिसे लेकर आप सपरिवार बस पूजन के लिए बैठ जाइए। विश्वास कीजिए आपको किसी अन्य चीज के लिए उठने की जरूरत न पड़ेगी। इसमें हमने वह सब कुछ संकलित किया है जिसकी आपको आवश्यकता है। आप चाहे तो अत्यंत आकर्षक पैकिंग वाले इस बॉक्स को अपने मित्रों को भी दीपावली उपहार के रूप में दे सकते हैं। ताकि आपके साथ वे भी सुरक्षित दीपावली मना सकें।

कीमत मात्र 400/-

(Including GST & Shipping Charges)

प्राप्ति के लिए संपर्क करें
+91 91799 28991
backupsmt90@gmail.com

Reaching 7500 villages, 9 million people.
Over 100 million Polio vaccinations.
5,000 medical camps / 20 hospitals:

1 million patients treated. 100,000 persons tested on 32 health parameters through Health Cubed. Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant. More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India.

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students. Mid-day meals provided to 74,000 children. Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland. Fostering the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas.

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets. 45,000 women empowered through 4500 SHGs. 200,000 farmers on board our agro-based training projects.

MODEL VILLAGES

We have adopted 300 villages for transformation into model villages. Of these over 90 villages have already reached the model village stature. And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spear-headed by Mrs. Rajashree Birla.

Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP

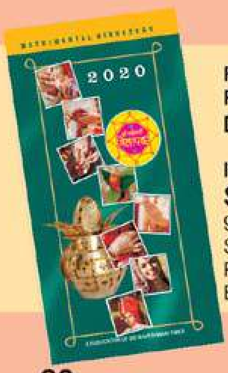

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date-02 November, 2020

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
http://srimaheshwaritimes.com/